ISSN: 2582-0044
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुष्पक साहित्यिकी

साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति की त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष-4 अंक-13
जनवरी - मार्च 2021

सरसों खेतों में उठी फूल, बौरें आमों में उठीं झूल
बेलों में फूले नये फूल
पल में पतझड़ का हुआ अंत, आया वसंत आया वसंत।
- सोहनलाल द्विवेदी

प्रधान सम्पादक एवं स्वामित्व : डॉ.अहिल्या मिश्र
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Scaling New Heights for Comprehensive Services

BANK SURPASSES ₹4400 CRORE BUSINESS

*unaudited

SALIENT FEATURES

- Bharat BillPay Service for Online Payment of Utility Bills.
- Internet Banking facility and BHIM MaheshPay Services.
- IMPS - Merchant Payment Service - for online payment of Electricity, Telephone bills and booking flight, bus and hotel bookings.
- Direct RTGS / NEFT Facility.
- RuPay Debit Card facility - Access to more than two lakh ATMs of NFS Member Bank's and merchant establishments in the Country.
- Point of Sale Services (PoS).
- Inward remittance facility from abroad through Western Union Money Transfer.
- e-Tax payment - Income Tax, Professional Tax, & Excise.
- Bancassurance for Life Insurance & General Insurance solutions.
- Mutual Fund Business in tie up with Nippon Life India Asset Management Ltd.
- Acceptance of NRE Deposits.
- Foreign Exchange transactions under AD Category II.
- Basic Savings Bank Deposit Accounts (under "Financial Inclusion").
- Tax Savings Deposit under Section 80C of Income Tax Act.
- Missed Call Service & Statement of Account through e-mail facility.
- CCC - "Customer Contact Centre" - One Stop Hub help-line desk.
- Loans & Advances to Traders, Businessmen, SSIs, Personal Loans, Consumer Loans, Professional Loans, Educational Loans, Housing Loans, Gold Loans & Loans against NSCs, KVPs etc.
- Toll Free Banking Facility for Account Balance, Account Statement, Cheque Book Request and Loan Enquiry.

* Conditions apply

FUTURE PLANS

- While every effort is made to achieve the mission of the Bank, introducing e-KYC, Tablet/Agent Banking & Aadhaar Enabled Payment System (AEPS).
- Expansion of Branch Network.

BOARD OF DIRECTORS

Purshotamdas Mandhana, Sr. Vice - Chairman
Ramesh Kumar Bung, Chairman
Laxminarayan Rathi, Vice - Chairman

DIRECTORS

Smt. Anita Soni
Arunkumar Bhangadia
Badrinishal Mundada
Bhagwan Parwani
Smt. Bhagwati Devi Baldwa
Brijgopal Asawa
Govind Narayan Rathi
Kailash Narayan B.
CA Murali Manohar Pasol
Prem Kumar Bajaj
Smt. Pushpa Boob
Ramprakash Bhandari
Umesh Chand Asawa, M.D. & CEO

ANDHRA PRADESH MAHESH CO-OPERATIVE URBAN BANK LTD.
(Multi-State Scheduled Bank)
H.O. : 8-2-680/1&2, Road No.12, Banjara Hills, Hyderabad - 500 034 (T.S.) INDIA
Tel.: 040 - 2461 5296, 2461 5299, 2343 7100 - 103 / 2343 7105, Fax : 040 - 2461 6427

48 Branches Network | NET Banking | RTGS / NEFT Facility | Point of Sale Services | Mutual Fund Services | Easy Credit for Trade & Industry | FOREIGN EXCHANGE FACILITY | Life Insurance Services | 100% CBS BRANCHES Anywhere Banking

E-mail: info@apmaheshbank.com
Website: www.apmaheshbank.com

D.L.No.668/HD/AP/96-R.W.
TIN No.28170117979

SP

Ph. 040 24614090
040 23434245

SEEMA PHARMA

5-2-835, Shop No.6, Paramount Complex,
Malakunta, Hyderabad - 12.
email : seema_pharma@rediffmail.com
seemapharma@yahoo.com

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुक्रमणिका

संपादक की कलम से.... 3-4
डॉ.आशा मिश्र 'मुक्ता'

चिंतन के क्षण
श्रम और स्वेद -डॉ.अहिल्या मिश्र 5

लघु कथा, लोक कथा एवं कहानियाँ
दान की महिमा - रमाकान्त भारती 6
अहसास - सुरेश बाबू मिश्रा 7
बदलाव - डॉ.जयसिंह अलवरी 7
अनुत्तरित - रमेश मनोहरा 8
धरोहर -शांति अग्रवाल 9
शहीद -किशन लाल शर्मा 14
वर्ण संकर - सुखपाल सिंह 20
अल्पना -मूल.प्रतिभा राय अनु. सुरभि बेहरा, 21

दोहे/गीत,गजल/कविताएँ/क्षणिकाएँ/हाईकु/मुक्तक.
दोहे -डॉ.सुरेश प्रकाश शुक्ल 36
दोहे -चन्द्रकान्त 37
ग़ज़ल... -राकेश भ्रमर 38
क़विता -डॉ.मनोहर अभय 38
प्रेम गीत गाओ -दीपक दीक्षित 39
आहिस्ता... -डॉ.विजय के.सिंह 39
इतिहास....-प्रो.फूलचंद मानव 40
कविता.... -डॉ. सुरेश ढींगडा 40
कोई यहाँ.... -भानुदत्त त्रिपाठी 41
नहीं रहने.... -देवेन्द्र कुमार मिश्रा 41

आलेख/निबंध/पुस्तक परिचय/व्यंग्य
राष्ट्रीय एकता.. -डॉ.रवीन्द्र कुमार 42
महाप्राण निराला....-सीताराम पाण्डेय 45
बाबा रघुवर.... -डॉ.नरेश कुमार सिंह 54

कला/रंगमंच/नाटक
असंगत नाटक -डॉ.उषारानी राव 59

शख्सियतः
इतना तो ... -प्रवीण प्रवण 61

धरोहरः
कहानी क्यों.....-मोहन राकेश 72
आप की याद...-मखदूम मोहीउद्दीन 76
जो तुम आ.. -महादेवी वर्मा 77

विश्व-साहित्यः
लूई अल्बर्टो -संक.-अवधेश कुमार सिन्हा 79

संस्मरण/जीवनी
कच्चे आहार -श्री संत समीर 83

समीक्षा-
यादों की .. -डॉ.टी.शान्ता कुमारी 85
उसने गाँधी..-डॉ.लक्ष्मीनारायण मित्तल 88
रूपकालंकार-डॉ.सुशील कुमार पाण्डेय 90
धुरी .. डॉ.वासुदेवन शेष 92

यात्रा वृतांत-
मलेशिया यात्रा.... -डॉ.अहिल्या मिश्र 95

स्थाई स्तंभः
नए आजीवन सदस्य 53/82/89,
समाचार दर्शन 99,
मत-अभिमत 101, प्राप्ति स्वीकृति 104

शब्द संयोजन : हरिओम ऑफसेट प्रिंटर्स, बरकतपुरा, काचीगुडा, हैदराबाद
मोबाईल :9177304376 E-mail :hariomjp1@gmail.com

संकलन में व्यक्त विचारों एवं प्रकाशित रचनाओं के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं। इससे संपादक मंडल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के उपयोग हेतु सम्पादकीय अनुमति आवश्यक है।

'पुष्पक साहित्यिकी' से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल हैदराबाद न्यायालय के अधीन। इसके सभी पद मानद एवं अवैतनिक है। पत्रिका पूर्णतः अव्यवसायिक है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funded by MoE-IKS-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सम्पादक की क़लम से .....

माँ के गर्भ से पृथ्वी पर आते ही शिशु के ग्रीवा से रुदन स्वरूप एक ध्वनि निकलती है। धीरे धीरे यह ध्वनि शब्द , वाक्य और भाषा का रूप धारण करती है तथा अभिव्यक्ति का माध्यम बनती है। भाषा वैचारिक आदान प्रदान का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन तथा सभ्यता एवं संस्कृति की विशेष पहचान है। यह मनुष्य को एक दूसरे के क़रीब लाती है। हमारा देश विविध सभ्यताओं का देश है जहाँ लोग अपने धर्म और इच्छा के अनुसार लगभग 1650 भाषाएँ और बोलियों का इस्तेमाल करते हैं। अंग्रेजी केंद्र सरकार की आधिकारिक भाषा है और हिन्दी राजभाषा। वैसे तो हिन्दी जनसाधारण की भाषा भी है परंतु इससे भी नकारा नहीं जा सकता कि हमारे देश में, विशेषकर शहरी क्षेत्र में अंग्रेजी का अधिक प्रभाव है। अंग्रेजी बोलने वालों को इज्जत की नज़रों से देखा जाता है और जिन्हें अंग्रेजी नहीं आती उन्हें नीची नज़रों से। विभिन्न देशों की विभिन्न भाषाएं होती हैं और उन्हें बोलने का अपना अलग तरीक़ा होता है। अवसर के अनुसार जब वे विदेशी भाषा बोलते भी हैं तो उसका उच्चारण उनकी अपनी भाषा से मिला जुला होता है। वे दुनियाँ के किसी भी कोने में अपनी भाषा या टूटी-फूटी विदेशी भाषा से काम चला लेते हैं। उदाहरणस्वरूप चीन, जापान आदि देशों को देखा जा सकता है। परंतु हुमारे यहाँ ऐसा नहीं है। यहाँ ज्ञान की परख अंग्रेजी के ज्ञान से होती है। अंग्रेज तो चले गए परंतु उनकी भाषा की गुलामी से हम उबर नहीं पाए। भाषा का ज्ञान रखना अच्छी बात है परंतु अंग्रेजी को सर्वोच्च मानना और अपनी मातृभाषा को दोयम दर्जा देना व्यक्ति में हीन भावना और आत्मविश्वास की कमी को दर्शाता है।

प्रसन्नता की बात है कि दिन-प्रतिदिन देश तरक्की कर रहा है और हम आत्मनिर्भर हो रहे हैं। हमारी नई पीढ़ी भी अपनी सभ्यता एवं संस्कृति के प्रति जागरूक हुई है। इसे जानने की रुचि बढ़ी है। खोया हुआ आत्मविश्वास शनैः शनैः लौट रहा है। युवा पीढ़ी अंग्रेज़ी के साथ हिन्दी का प्रयोग भी करने लगी है। सोशल मीडिया इसका विशेष माध्यम बनी है। यदि मैं अपना अनुभव कहूँ तो 30 वर्ष पूर्व बिहार से हैदराबाद आई तो गिने चुने हिंदी भाषी मिलते थे। वार्तालाप का माध्यम अधिकांशतः तेलुगु या अंग्रेजी हुआ करती थी। परंतु आज सार्वजनिक स्थलों पर अकसर लोग हिंदी में बातें करते नज़र आते हैं। हाँ , जहाँ तक शुद्धता की बात है तो सामान्य बोल-चाल की भाषा में शुद्ध हिंदी का प्रयोग कम ही हो पाता है। लोग अंग्रेजी मिश्रित हिंदी जिसे 'हिंग्लिश' कहा गया है का अधिक प्रयोग करते हैं।

भाषा से साहित्य का विकास होता है और साहित्य समाज को न सिर्फ संवेदनशील बनाता है बल्कि जनता को जागृत करता है। हमें अपनी जड़ से जोड़े रखने में मदद करता है। संस्कृति को जीवित रखने में साहित्य का प्रमुख योगदान है। कवि या लेखक समय को साहित्य से जोड़ता है। इसके माध्यम से वे विश्व की व्यवस्था बदलने का हुनर रखते हैं। लेखनी के बल पर सत्ता को हिलाने की ताकत साहित्यकारों में पाई जाती है। हिन्दी साहित्य में जहां दिनकर , दुष्यंत आदि कवि सरकार के विरुद्ध आवाज उठाने वाले हुए हैं वही ज्यां पॉल सार्त्र जैसे लेखक ने फ्रांस की व्यवस्था बदलने में प्रमुख भूमिका निभाई। लेखक और साहित्यकारों के विचारों से अवगत कराने में पत्र-पत्रिकाओं की अहम् भूमिका होती है। आज प्रिन्ट मीडिया घोर संकट से गुजर रही है। एक ओर जहां डिजिटल मीडिया के पाठकों में बढ़ोत्तरी हुई है वहीं प्रिन्ट मीडिया को भारी नुकसान सहना पर रहा है। कम्प्यूटर के फ़ोल्डर भर रहे हैं परंतु किताबें खरीदने वाला कोई नहीं। पत्रिकाएं दम तोड़ रहीं हैं। वर्षों से प्रकाशित होनेवाली जन - मन की जान कादंबिनी और नंदन के बंद होने से एक बार फिर पत्रिका की दुनिया को गहरा धक्का लगा है। संपादकों के पास सबसे बड़ी समस्या अर्थ की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

होती है। अधिकांश पत्रिकाएँ वगैर कोई सरकारी अनुदान के मात्र सामुदायिक सहयोग से प्रकाशित होती है । सरकार साहित्यिक पत्रिकाओं के प्रति गम्भीर नहीं है। एक तो उनसे विज्ञापन लेने में मशक़्क़त करनी पड़ती है और यदि मिलती भी है तो लम्बे समय तक जारी नहीं रह पाती। नया ज्ञानोदय, वागार्थ और पाखी जैसी कुछ पत्रिकाओं के अतिरिक्त अधिकतर पत्रिकाएँ मित्रों और परिजनों के सहयोग पर ही टिकी हुई हैं। पत्रिका को प्रकाशित करने हेतु न्यूनतम खर्च भी जुटाना कठिन हो जाता है। कादम्बिनी और नंदन एक मात्र उदाहरण नहीं है बल्कि पूर्व में धर्मयुग, चंदामामा से लेकर अब तक अनगिनत पत्रिकाएँ इसी तरह कब्र में पहुँच चुकी हैं।

मनन करने की बात है कि पत्रिकाओं के बंद होने के जिम्मेदार हैं कौन? क्या हम पाठक दोषी नहीं हैं? पैसे देकर हम पत्रिका खरीदना नहीं चाहते। महंगाई हमें पत्र-पत्रिकाओं में ही नजर आती है। 50 के दशक में हरिशंकर परसाई को अपनी पत्रिका 'वसुधा' को बेचने के लिए सड़कों पर घूमना पड़ा था। वे झोले में पत्रिका डालकर सड़कों पर ग्राहकों को जबरन पकड़ा देते और उस पर लिख देते 'सस्नेह परसाई'। इतनी मशक्कत के बावजूद अर्थाभाव के कारण दो वर्ष बाद ही पत्रिका बंद हो गई। यक़ीन नहीं होता कि सवा करोड़ की आबादी वाले देश में राष्ट्रभाषा हिन्दी के पत्रिकाओं की यह स्थिति है। एक ओर तो हम मातृभाषा से प्रेम का दलील देते हैं तथा अंग्रेजी का रोना रोते हैं और दूसरी तरफ हिन्दी के प्रति उदासीन रवैया अपनाते हैं। पत्रिकाएँ नैतिकता का मूल्य सिखाती है। क्या हम अपनी भाषा को बचाने के लिए थोड़े पैसे खर्च नहीं कर सकते ? स्वतन्त्र लेखन या फ्रीलैन्सर लेखक पत्रिका के सम्पादकों पर ही टिके होते हैं। इसके बंद होने से उन्हें कितनी हानि पहुँचती है सोचने की बात है।

वर्तमान में कोरोना की वजह से भी पत्रिका के प्रकाशन में कठिनाई आई है। विज्ञापन नहीं मिल पा रहा है और पत्रिकाओं से जुड़े स्टाफ को सैलरी देने में कठिनाई हो रही है। ऐसे में पत्रिकाओं का बंद होना अवश्यम्भावी है। दूसरी बात यह है कि डिजिटल मीडिया के प्रभाव में हम पुस्तक संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं। पत्रिका पीडीएफ़ रूप में पाठकों तक पहुंचाई जा रही है। इसमें पैसे और मेहनत दोनों की बचत हो जाती है। इंटरनेट पर सभी कंटेंट मिल ही जाते हैं तो पत्र - पत्रिकाओं की जरूरत ही नहीं महसूस होती। परंतु हम भूल रहे हैं कि इंटरनेट जहाँ लाभ पहुँचाता है वहीं उसके कई नुकसान भी हैं। आँखों पर बुरा प्रभाव पड़ने के साथ-साथ व्यावहारिक ज्ञान और सामाजिकता से हम दूर होते जाते हैं। वर्चुअल दुनिया में डूबे होते हैं और वास्तविक दुनिया से कोई मतलब नहीं होता। डिजिटल प्लेटफॉर्म पुस्तक का पर्याय नहीं बन सकती। यदि इसी तरह चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब पत्रिकाएँ इतिहास बनकर रह जाएँगी और हमारी आगामी पीढ़ी पूर्णतः डिजिटल मीडिया की गुलाम बन जाएगी। ऐसे में किताबों को अलमारियों से झांकने के अलावा और कोई चारा नहीं बचेगा। पत्रिकाओं को बचाने और पुस्तक संस्कृति को जिंदा रखने के लिए हमें सरकारी विज्ञापन या अनुदानों के अतिरिक्त वर्चुअल और वास्तविकता के मध्य संतुलन स्थापित करने की आवश्यकता है । सिर्फ़ कंटेंट ही नहीं बल्कि पुस्तकों से भी प्रेम करने की आवश्यकता है। एक बार फिर हमें किताबों को अपना परम मित्र बनाने की आवश्यकता है। आशा है हम भविष्य में इस संकट से उबर पाएंगे।

अंत में, पुष्पक साहित्यिकी परिवार अभिनव इमरोज पत्रिका के डॉ अहिल्या मिश्र विशेषांक प्रकाशन हेतु अपने प्रधान संपादक को बधाई और शुभकामना देती है। हम उनके इस उपलब्धि पर गौरवान्वित हैं।

संपादक-डॉ. आशा मिश्र 'मुक्ता'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चिंतन के क्षण–श्रम और स्वेद

- श्रम शाश्वत और विश्व जनीन है। विश्व का आधार श्रम ही है।
- श्रम के साथ स्वच्छता मनुष्य के स्वस्थ रहने की कुंजी है।
- श्रम पृथ्वी निर्माण के साथ इसे वरदान रूप में प्राप्त पूँजी है।
- श्रम से ही आनन्द प्राप्त होता है। वह शारीरिक व्याधियों के हेतु अमृत है।
- श्रम हमारी वेदना की निवृत्ति है। श्रम सुख की आवृत्ति है।
- श्रम रोटी, कपड़ा और मकान के मार्ग का पथ-प्रदर्शक है।
- जब तक हम श्रम नहीं करेंगे, जूझेंगे नहीं हमें मनोवांछित फल प्राप्ति नहीं हो सकेगी।
- जंग लग कर नष्ट होना बुद्धिमानी नहीं बल्कि घिसते हुए समाप्त होना एक उच्चतम मानक है।
- श्रमाधिक्य हमें अपवित्रता एवं संसार में अर्जित होनेवाले पापों से मुक्ति दिलाता है और मन-मस्तिष्क को व्यस्त रखता है।
- श्रम आलस्य और प्रमाद को दूर भगाने का मूल मंत्र है। यही हमें बुद्धितत्व की ओर अग्रसरित करता है।
- श्रमिक स्वेद ही समाज के विकासकारी यंत्र का ग्रीस है। यही जाति का पुननिर्माता होता है।
- श्रम स्वेद वास्तव में सौदा या वाणिज्यक वस्तु नहीं। मन का कल-कल छल-छल निर्मल जल है जो शरीर की रस प्रपातों से फूटती है।
- श्रम और स्वेद विजय का शंखनाद है।
- प्राप्त वस्तुओं में प्राकृतिक अंश मात्र एक प्रतिशत और श्रमोत्पादित 99% मिलकर 100% परिणामदायी बनते हैं।
- पूँजी तो सच्चे अर्थों में श्रम का परिणाम है। श्रम को उन्नत बनाने इसे प्रयुक्त किया जाता है। श्रम स्वेद सक्रिय एवं मूल शक्तिधारा है ही पूँजी का उपयोग कर्ता भी है।
- श्रम का स्थान प्रथम एवं स्वतंत्र है। पूँजी श्रम स्वेद का फलमात्र है।
- श्रम के अस्तित्व के बिना पूँजी का अस्तित्व संभव नहीं। श्रम एवं स्वेद श्रेष्ठ है।
- वास्तव में श्रम जीवित और धमनीय प्रवाह है पूँजी मृतक शोषक एवं फल भक्षक है। भले हीं श्रम, स्वेद और पूँजी अन्योन्याश्रित हो पर पूँजी का आविर्भाव श्रम आधृत है।
- श्रम मनुष्य को जीवित और मानवता पोषक बनाती है। श्रम ही मानवता के नए इतिहास गढते आए हैं एवं सदा सर्वदा गढेंगे।

डॉ. अहिल्या मिश्र :–प्रधान संपादक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दान की महिमा

–राधाकान्त भारती

नेपाल की सीमा के पास मिथिला क्षेत्र में जनकपुर के पास विराटनगर है। यहाँ बाबा गौरव गिरि ने साधु-सन्तों के लिए मठ और अनाथों के लिए अनाथालय की स्थापना की थी। उस इलाके से कोसी नदी बहती है, जिसमें बरसात के समय भयंकर बाढ आया करती है। एक समय में कोसी की बाढ ने भयंकर तबाही लायी, सैकड़ों लोग बेघर हो गए।

ऐसी हालत में अनाथालय में भीड़ बढ गयी। धन की कमी के कारण इंतजाम ठीक नहीं हो रहा था। तब बाबा गौरव गिरि ने शहर के धनी लोगों से चंदा मांगने का विचार किया। नगर में अनेक सेठ-साहुकार रहते थे। लेकिन वहाँ का सबसे अधिक धनी व्यक्ति सेठ बाबू लाल बहुत कंजूस था, वह कभी किसी को दान नहीं देता था। मंदिर में भी वह कुछ मांगने या प्रसाद प्राप्त करने के लिए ही जाता था।

ऐसी स्थिति में बाबा गौरव गिरी ने एक तरकीब सोच ली। वे सेठ बाबू लाल के पास पहुँच गए और बोले, ''सेठ जी अनाथालय के लिए धन की कमी हो गई है। अब आप ही सहायता दें तो अच्छा हो। आप दान स्वरूप पाँच हजार रुपये का चेक सुबह में मुझे दें जिसे शाम के समय आपको वापस कर दिया जायेगा।'' यह सुनकर सेठ जी बहुत खुश हुए। सोचा कि इससे धन दाता के रूप में उनका नाम हो जाएगा और चेक भी वापस मिल जाएगा। उन्होंने तुरंत पांच हजार का चेक काट कर बाबा गौरव गिरि के हाथ में थमा दिया।

अपनी योजना के अनुसार बाबा कई दान दाताओं के पास जाकर चेक दिखाकर बोलते कि जब नगर का सबसे बड़ा कंजूस ऐसी रकम दान कर सकता है तो आप स्वयं दयालु हैं, जन कल्याण के लिए दान देकर पुण्य कमायें। इस बात का असर हुआ और शाम तक एक लाख रुपये से अधिक धन दान पत्र में एकत्र हो गया।

वायदे के अनुसार संध्या समय बाबा गौरव गिरि सेठ के पास चेक लौटाने के लिए पहुँच गए। लेकिन आश्चर्यजनक बात हुई। सेठ बाबू लाल ने चेक वापस लेने से इनकार कर दिया। उसका हृदय परिवर्तन हो चुका था।

उसके द्वारा दान का चेक देखकर कई लोगों ने सेठ की तारीफ की और बधाईयाँ देने पहुँचे। इस वजह से सेठ को बहुत खुशी मिली, उसे यह बात समझ में आ गई थी कि दूसरों की मदद करना और दान देना अच्छी बात है। यही नहीं, सेठ ने पाँच हजार पाँच सौ रुपये का दूसरा चेक काटकर खुशी के साथ बाबा गौरव गिरि को सौंप दिया, जिससे दूसरों की सहायता की जा सके। ऐसी है, दान की महिमा।

संपर्क सूत्रः-58 नागीन लेक, पीरागढी, नई दिल्ली-10087

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अहसास

–सुरेश बाबू मिश्रा

रविवार का दिन था। सुबह नाश्ता करने के बाद मोनू आराम से बेड पर लेटा हुआ वीडियो गेम खेल रहा था। वह फोर्थ क्लास में पढता था। सारा होमवर्क उसने क्लास में ही पूरा कर लिया था इसलिए आज वह पूरी मस्ती के मूड में था।

मोनू को इन्डोर गेम्स ज्यादा पसन्द थे। छुट्टी के दिन या तो वह पापा–मम्मी के साथ कहीं घूमने जाता या फिर घर पर रहकर वह वीडियो गेम खेलता और टी.वी. पर कार्टून देखता। उसके पापा कोई मैगजीन पढ रहे थे और मम्मी किचन में दोपहर के नाश्ते की तैयारी कर रही थीं। तभी मेन गेट की कॉलबेल बज उठी। उसके पापा ने ऊपर से झाँक कर देखा। गेट पर मोनू का दोस्त बबलू खड़ा था। उन्होंने मोनू को बताया कि तुम्हारा दोस्त बबलू तुम्हें बुला रहा है। मोनू अपने पापा के पास आया और धीरे से बोला ''पापा बबलू से कह दो मोनू घर पर नहीं है, कहीं गया हुआ है।''

''क्या?'' पापा को हैरानी हुई। उन्होंने प्रश्नवाचक निगाहों से मोनू को देखा।

''पापा प्लीज'' मोनू ने याचना की।

पापा ने ऊपर से ही बबलू को बता दिया कि मोनू कहीं गया हुआ है। फिर वे वापस आए और उन्होंने मोनू से पूछा, ''मोनू तुम तो घर पर मौजूद थे, फिर तुमने यह कहने को क्यों कहा कि मोनू घर पर नहीं हैं।'' तब तक उसकी माँ भी किचन से बाहर आ गई थी और वे भी प्रश्नवाचक निगाहों से मोनू को देख रही थी।

''पापा जी जब राघव अंकल या शर्मा अंकल आते हैं तो आप भी तो अकसर मुझसे यही कहते हो कि जाओ उनसे कह देना कि पापा घर पर नही हैं। जबकि आप मम्मी के साथ टी.वी. देख रहे होते हो।'' मोनू ने बड़े भोलेपन से कहा।

पापा और मम्मी ने अर्थपूर्ण नजरों से एक–दूसरे की ओर देखा। अब उन्हें अपनी गलती का अहसास हो रहा था।

संपर्क सूत्रः–ए–373/3, राजेन्द्र नगर, बरेली–243122 उत्तर प्रदेश।
मोबाईल नं. 9411422735

बदलाव

–डॉ.जयसिंह अलवरी

ट्रेन अपनी तय गति के अनुसार दौड़ी जा रही थी। मैं अपनी आरक्षित सीट पे बैठा नदी–नाले, पर्वत, गाँव–कस्बे व खेत–खलिहानों को बहुत ही तन्मयता से देखता जा रहा था। तभी अचानक मेरी सामने वाली सीट पर पाँच–छः सभ्य से दिखने वाले युवा बैठे। मेरा ध्यान यकायक उनकी ओर गया। वे कुछ शांत बैठे रहे बाद में हाँ हूँ ही ही करते हुए सारे शयनयान में शोर मचाने में तल्लीन हो गये। उनकी टीका–टिप्पणियाँ, अभद्र मुस्कानें व अश्लील गानों से हर कोई दुखी और परेशान था। मगर बोलने का साहस कोई नहीं जुटा पा रहा था। सबके सब मौन धरे सब सह और सुन रहे थे। मैं अन्दर ही अन्दर घायल होते हुए बोला–''क्या होगा देश का भविष्य और क्या होगा उन सपनों का जिन्हें साकार करने हैं।''

संपर्क सूत्रः–सम्पादक–साहित्य सरोवर, न्यू दिल्ली हाऊस, नियर बस स्टैंड सिरुगुप्पा–583121, जिला–बल्लारी (कर्नाटक) चलितः–09886536450

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुत्तरित

–रमेश मनोहरा

"आप मुसलमान होकर चौहान क्यों लगाते हैं?" प्रश्नवाचक दृष्टि से मन मोहन ने पूछा।

"इस पर आपको कोई आपत्ति?" रहमान ने आपत्ति लेते हुए कहा।

"बहुत बडी आपत्ति है" मनमोहन ने कहा–"आप का मुसलमान होकर चौहान लगाना समझ से बाहर है।"

"मगर आप हमें मुसलमान नहीं क्यों मानतें हैं?"

"अरे कहाँ से माने, आप सब मोहम्मद गोरी और बाबर के वंशज हो"

"मुसलमान को मुसलमान न माने तो और क्या माने? मैं आपसे प्रश्न पूछता हूँ हम मुसलमान आये कहाँ से?"

"गलत, एकदम गलत, आपको इतिहास का जरा भी ज्ञान नहीं हैं? रहमान ने आपत्ति लेते हुए कहा।"

"जैसे आप इतिहास के बहुत बडे ज्ञाता हैं?" मनमोहन ने पूछा

"बात ज्ञाता की नहीं है, हम हिन्दुस्तानी मुसलमान न कभी मोहम्मद गोरी और बाबर के वंशज हैं और न कभी उनके साथ आये थे।"

"मगर कर्म तो अब भी आपके मोहम्मद गोरी और बाबर जैसे हैं"

"बस यही कहकर हमको बदनाम किया जाता है" रहमान समझाते हुए बोले। "बाबर और मोहम्मद गोरी लूटकर ले गये और हमारी पीढी को हिन्दू से मुसलमान बना गये। मगर हमने अपना धर्म बदला सरनेम नहीं। हम राजपूत के वंशज हैं। अतः चौहान लगाते हैं।"

"जब आप अपने आपको हिन्दू के वंशज मानते हैं तो फिर हिन्दू क्यों न बन जाते हैं।"

"हम तो बनने को तैयार हैं मगर हमें कौन हिन्दू अपनायेगा।" रहमान मियाँ बोले।

"आप वापस अपना नाम बदलकर राजपूत की एक अलग कौम बना सकते हैं" मनमोहन ने यह बात कहीं, तब यह प्रश्न अनुत्तरित रह गया।

संपर्क सूत्रः–शीतला माता गली, जावर जिला, रतलाम म.प्र.457226
मो.9479662215

**हिन्दी से किसी भी भारतीय भाषा को भय नहीं,
यह सब की सहोदरा है।**

–महादेवी वर्मा

**साहित्य आपके बेचैन मन को स्थिरता प्रदान करती है,
सुख–शान्ति एवं श्रेष्ठता की ओर उन्मुख करती है।**

–डॉ.अहिल्या मिश्रा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धरोहर

–शान्ति अग्रवाल

"रामदीन" "हाँ मांजी, टेबल पर खाना लगा दूँ?" "मंगेश कहाँ हैं तेरा बेटा?""वह पढ रहा है, आता ही होगा, आप उसे बहुत लाड़-प्यार देती हैं।" "अरे रामदीन मैं अकेली कैसे खा सकती हूँ। बेटा है तो वह बरसों पहले परदेस जा बसा। पोती है वह भी माँ-बाप के साथ वहीं की हो गई। कभी फोन पर बात हो जाती है। भारत तो वे कभी आना ही नहीं चाहते। मैंने तो अच्छे संस्कार दिये थे। पता नहीं वह पश्चिम का कैसे हो गया। जहाँ भी रहे सुखी रहे। मैं अकेली, तेरा ही तो सहारा है। तेरा परिवार अपनों जैसा मेरा ध्यान रखता है। मेरे कामगार मेरा कितना ध्यान रखते हैं। बेटा-बहू पोती कभी दो-चार बरस में आते हैं, दो चार दिन के लिए परदेसी की तरह समय के बदलते मौसम के साथ आना और फिर लौट जाना और अब तो कई बरस से आये ही नहीं। आवाज दे मंगेश को खाने का समय हो गया है।" रामदीन बचपन से अपने माता-पिता के साथ रमावती की सेवा में रहा है। रमावती के परिवार से उसे सदैव अपनापन मिलता रहा है। कभी इस घर का सेवक नहीं समझा गया। उसका बेटा मंगेश रमावती की छत्रछाया में बड़ा हो रहा है।

घर की मालकिन अपने प्यारे जीवन को स्मृतियों से नहीं निकाल पाती हैं। पोती सोनू बहुत याद आती है। पाँच बरस की थी तभी बेटा-बहू उसे लेकर विदेश चले गये थे। पति श्रीकांत जीवित थे। दोनों का जीवन एक दूसरे के लिए और परोपकार में ही बीत रहा था। श्रीकांत बहुत ही नेक और सज्जन व्यक्ति थे। अपनी जीवन संगनी अपने और परिवार जैसा मानकर रामदीन के परिवार के साथ सब मिल कर सौम्य और शान्तमय वातावरण में जीवन बिता रहे थे।

कॉटेजनुमा घर, घर के चारों तरफ खुला वातावरण, घर के पीछे दूर तक एकड़ों में फैले उनके खेत, फल का बगीचा जहाँ सदैव फसल लहलहाती रहती थी। दोनों पति-पत्नी काम करने वाले मजदूरों का बहुत ध्यान रखते थे। उनके दुःख दर्द का, उनकी सुविधा का अपने बच्चों की तरह ख्याल रखते थे। घर को लग कर अमराई थी। बहुत से आम पेड़ों पर लगते थे। सारे आम खेत में काम करने वाले और बचे हुए आम अनाथ आश्रम के बच्चों के लिए रहते थे। रमावती और श्रीकांत दोनों अपने हाथों से अनाथ आश्रम के बच्चों को आम दिया करते थे। बच्चों के साथ बैठ कर वह भी आम चूसा करते थे। पति के जाने के बाद भी रमावती यह नियम निभाती हैं।

विमल मन में शांति और सद्भावना की सोच उन्हें सदैव प्रसन्न रखती हैं। "रामदीन भोजन हो गया मेरा बिस्तर लगा दे।" पत्नी रामकला ही घर का, रसोई का और माँजी का काम सम्हालती है। दोनों पति-पत्नी ने अपना भोजन निपटाया। इस साल फसल बहुत ही अच्छी हुई है। सब कामगारों को अधिक अनाज मिलेगा।

यह खेत खलिहान केवल रमावती के परिवार के ही नहीं बल्कि काम करने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वाले सभी के हैं। सहकारी की तरह यहाँ सब काम होता है। कई दिन से सोनू की याद आ रही थी। मन बेचैन था। उसने फोन लगाया, ''सोनू'' ''हां दादू कैसे याद किया।'' ''एक बार मिलकर चली जाती बेटी। मेरा मन तुम से मिलने को बहुत बेचैन हो रहा है। ''दादू आप भी ना ऐसा सोचती है, बस आप कहेंगी और मैं चली आऊँगी। ऐसा नहीं होता दादू। अरे हाँ अब तो धीरज हम सब भारत ही आ रहे हैं धीरज ने भारत में अपना ट्रांसफर करवा लिया है।''

''अब हम वहीं रहेंगे। जल्दी ही मिलना होगा। बॉय दादू।'' रमावती मन मसोस कर रह गई। दो दिन उनका मन बेचैन रहा। क्यों उन्हें ऐसा लगने लगा था कि अब वह अपने पति के पास जाने वाली है। वह आवाज दे रहे हैं, वहां का काम सब समाप्त हो गया है। अब तुम चांद-तारों में मेरे पास लौट आओ।

उन्होंने अपने वकील 'बालकृष्णा' को बुलाया अपना वसीयतनामा तैयार किया। सब खेत जो एकड़ों में फैले हुए थे। अमराई, बगीचा, जमीन वगैरह सब अपने काम वालों को बराबर का हिस्सा, अपने सेवक रामदीन को, सब के नाम बराबर कर दिया। इस विरासत की देखभाल का दायित्व होनहार मंगेश को सौंप दिया।

दस परिवार वही जो अब तक इन सभी वस्तुओं का और उनका ख्याल रखते रहें हैं। बेटे के नाम क्यों लिखूँ वह वहाँ सुखी जीवन जी रहा है। ये मेरे कामगार अपनों से अधिक मेरा ध्यान रखते रहें हैं। इन्हें ही मैं अपनी विरासत सौंप जाऊँगी, श्रीकांत भी तो यही चाहते थे। यह कॉटेज अपनी पोती के नाम लिख दिया। रामदीन को समझा दिया। यदि सोनू यहाँ रहती है तो जैसा अब मेरे सामने होते हुए सब काम हो रहे हैं, उसी तरह होगा। केवल कॉटेज उस के नाम होगा। वह जैसा चाहे वैसा कर सकती है। बेटे को विरासत में कुछ नहीं दिया।

दो दिन बेचैन होकर रमावती ने अपने प्राण त्याग दिये। चेहरे पर अपार शांति थी। चेहरा ऐसे दमक रहा था जैसे कोई दिव्य आत्मा सोई हुई है। ऐसे लग रहा था सीधे स्वर्ग के लिए प्रस्थान कर रही है। जैसी उनकी आत्मा पवित्र थी वैसे ही उनके प्राण चले गये। रामदीन ने दो दिन पहले ही विदेश में बसे उनके बेटे को समाचार दे दिया था। मांजी अब नहीं बचेंगी। लेकिन समय पर वह नहीं आ सका। रामदीन के बेटे मंगेश ने ही मांजी का अंतिम संस्कार कर दिया। उनके खेत में काम करने वाले, अनाथ आश्रम के बच्चे सब ने अपनी मां को अश्रुपूर्ण नेत्रों से श्रद्धांजलि दी। आज उनकी रक्षक उनकी पालनहार इस दुनिया से चली गई।

पोती सोनू को भी समाचार मिल गया। दो महीने बाद सोनू अपने पति धीरज और बेटा कुमार के साथ भारत आ गई। सोनू ने रामदीन से बात की ''रामदीन क्या दादी ने कोई वसीयत छोड़ी है?'' ''हाँ बिटिया यह घर आप के नाम लिखा है। आप वकील बाबू से मिल लें। सब जानकारी ले लें।''

सोनू को पता चला कॉटेज उसके नाम है। दादी ने ऐसा क्यों किया। पापा को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और मुझे कुछ भी नहीं दिया यह पुराना घर मेरे नाम लिख दिया है। सब कुछ तो अपने काम करने वालों को दे गई। यह घर भी रामदीन को दे देती। वह इस पुराने घर का क्या करेगी। उसने नक्शा देख कर उसे बेचने का मन बना लिया और उसका मोलभाव भी कर लिया। बयाना भी ले लिया।

''रामदीन मैने यह कॉटेज बेच दिया है। जब मैं कहूँ तुम चाबी खरीददार को दे देना।'' ''बिटिया एक बात कहूँ एक बार आकर अपनी दादी-दादा के संसार को देख तो लो फिर जो चाहो करना।'' ''ठीक है सोचती हूँ, एक बार आने के लिए। कुछ दिन बाद अपने पंद्रह वर्षीय बेटे कुमार को लेकर दादी का संसार देखने पहुंची। शहर से केवल डेढ सौ किलोमीटर की दूरी पर 'स्नेह सागर' दादी का फॉर्म हाऊस था।

शाम के झुरमुट में दोनों माँ बेटे पहुँचे। पता नहीं सोनू के वहाँ पहुँचने पर उसका मन इतना शांत और सात्विक सकारात्मक सोच से क्यों भर गया। वहाँ के शान्त वातावरण, उस स्थान की सुन्दरता का मां-बेटे दोनों के मन पर बहुत प्रभाव पड़ा। कहाँ तो वह सोच रही थी कि मैं इस घर का क्या करूँगी, वहीं वह अंदर से देखने के लिए ललायित हो गई। दूर तक लहलहाती फसल, फलों का बागीचा, अमराई सब रामदीन दिखा रहा था।

काम करने वाले सब सोनू से मिलने पहुँच गये। मांजी की पोती आई है क्या माँजी जैसी ही रहेगी। उन सब से इतना अपनापन पाकर उसका मन गदगद हो गया। वह सोच भी नहीं सकती थी कि काम करने वाले भी उसे अपने परिवार का समझ सकते हैं। रामदीन सोनू को घर के अंदर ले गया। अंदर प्रवेश कर उसने पहले अपना कमरा देखा। अंदर उसके कमरे में बचपन के सारे खिलौने एक अलमारी में सजे हुए हैं। उसके पलंग पर बिस्तर उसी तरह साफ सुथरा लगा हुआ है। पलंग पर उसकी पसंद के बंदर भालू सब करीने से रखे हुए थे।

उसकी अलमारी में उसके कपड़े, छोटी-छोटी फ्रॉक हैंगर पर लगी हुई थी। उसके बालों की क्लीप टेबल पर सजाकर रखी हुई थी। उसका स्कूल बैग-पुस्तक सब सजाकर रखा हुआ था। उसके जूते-चप्पल जो वह पहना करती थी स्टैंड पर रखे हुए थे। एक-एक वस्तु जैसे उसे देख कर जीवंत हो उठी है वह अनुभव कर रही थी। उन सब वस्तुओं पर हाथ फेरते हुए लग रहा था। दादी ने उसका बचपन सजा कर रख दिया है। दादी के पूजा घर में चंदन की लकडी से बनी 'राधा-कृष्ण' की मूर्ति फूलों से सजी हुई, सामने दीया प्रकाश फैला रही थी। दादी का सामान सब ऐसे कह रहा है कि मेरी सोनू को बैठा रखा है। वह कह रही है अपनी मीठी आवाज में 'गायत्री मंत्र' कहो सोनू।

सोनू जैसे वह मन्त्र पढ़ रही हैं। सोनू पूजा घर से निकल कर दादी के निजी कक्ष में पहुँची। अलमारी खोल कर दादी की साड़ियाँ करीने से सजी हुई है। उन पर अपना हाथ सहलाते हुए एक सिल्क की साड़ी जिस पर 'क्रॉसस्टीच' के धागे की बेल लगी थी। पता नहीं क्या हुआ वह साड़ी निकाल कर दादी का पेटीकोट पहना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और फिर वह साडी पहन ली। इतने सलीके से पहनी जैसे वह सदैव साडी पहनती आ रही है। खुले बालों का जूडा जैसा बनाया। और वहाँ रखा नगीने का क्लीप बालों में लगा ली। दर्पण के सामने जा खड़ी हुई और अपना रूप निहारती अपने-आप पर मुग्ध हो उठी।

उसे लगा जैसे दादी उसमें समा गई है और उन्हीं का रूप उसमें निखर आया है। वह घूम गई, आँखे छल-छला आई। जीवन में पहली बार अनुभव कर रही थी लाड़-प्यार का अपनापन क्या होता हैं कि मां-पापा का अंग्रेजी प्यार करने का ढंग था। भारतीयों के तरह उसने जाना ही नहीं प्यार का अपनापन क्या होता है। दादी के बिस्तर पर सफेद उजली चादर आकर्षित कर रही थी। टेबल पर 'गीता भागवत रखी थी,' तुलसी की माला रखी थी। ऐसे लग रहा था कि सोते समय कुछ देर गीता का पाठ करती थी। दादा जी और दादी जी दोनों की सुन्दर प्रेम में तस्वीर लगी हुई थी। उन पर चंदन की माला लटक रही थी। फोटों में लग रहा था दोनों एक दूसरे के लिए ही बने हुए थे। आज उसने अनुभव किया और एहसास हुआ कि लाड़-प्यार क्या होता है। क्यों विरासत में मुझे यह बंगला मेरे नाम लिख दिया। अंतरात्मा के कमल खिल उठे यह सब जान कर।

वह इस कमरे से निकल कर पास वाले कमरे में गई। बंद खिड़की खोल कर अमराई की शीतल बयार, झूमते हुए पेड़ों से आम की सुगंध अपने नथुनों में आती महसूस कर रही थी। जोर से सांस लेकर उस सुगंध को अपने में बसा लिया। उसने देखा दूर पेड़ पर झूला डाला हुआ है। उसे याद आया दादी उसे झूले पर बैठा कर कैसे पेंग दिया करती थी। पाँच बरस की सोनू यह सब छोड़ कर पिता के संग विदेश जा बसी थी। परत दर परत सब बचपन की यादें नीचे दब गई। आज समय पा कर वह सब स्मृतियाँ हृदय पटल पर उभर आई है। जीवन को बचपन की यादों ने खुशी से सराबोर कर दिया।

रामकला ने आलू के पकोड़े और चाय का इंतजाम कर लिया था। रसोई से आती आलू के पकौड़ों की सुगंध ने सोनू और कुमार को उतावला कर दिया। पहली बार जाना पकौड़ों की सुगंध क्या होती है।

कुमार, सोनू , मंगेश टेबल पर आ बैठे। पकौड़े देख कर सब की भूख जाग गई। इतने स्वादिष्ट पकौड़े माँ-बेटे ने कभी नहीं खाये थे। पश्चिम के संस्कारों में पली। कभी जाना ही नहीं कि भारत के भोजन में मसालों की खुशबू कैसी होती है।

धीरज से ब्याह किया वह इतना समझदार है कि धीरे-धीरे सोनू के रंग में ही रंग गया। कभी धीरज ने कभी अपने विचार थोपने की चेष्टा नहीं की। हिन्दी स्कूल में भेज कर उसने उसे हिन्दी सीखने के लिए कहा। वह सोच रही थी कि कभी-कभी धीरज अपने हाथों से भारत के व्यंजन बनाकर खिलाते रहे हैं। वह भाग्यशाली है कि धीरज जैसा जीवन साथी मिला। आज भी उसने धीरज को अपने साथ 'फार्म हाऊस' चलने को कहा ''चलो देख आते हैं।'' ''नहीं आज बहुत काम हैं। तुम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Digitized by eGangotri-MOE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और कुमार चलो जाओ।''

तुम्हें ही तो निर्णय लेना है। सोच समझ कर निर्णय लेना। आज की पीढ़ी को इन सब एहसासों की आवश्यकता नहीं हैं। यह विश्वास 'धरोहर' सब केवल शब्द हैं। परिवार के बूढे सदस्य अपने अनुभव विरासत में देना भी चाहे तो नई पीढी कभी उन्हें धरोहर के रूप में नहीं लेना चाहती। आधुनिकता ने सब ठुकरा दिया है। आज मैं मेरा बेटा जो नई पीढी के साथ नई सोच के साथ बड़ा हो रहा है। उसकी आँखों में मैं पढ रही हूँ। इस समय वह क्या सोच रहा है। मंगेश से मिल कर वह बहुत खुश हो रहा है।

अपना बचपन सोचते हुए बेटे कुमार के साथ बरामदे की सीढी पर आ बैठी, कुछ अंधेरा छाने लगा था। रामदीन ने बिजली जलानी चाही, सोनू ने मना कर दिया। ''रहने दो काका कुछ समय इसी तरह बैठे रहने दो।'' वह सोच रही थी। रामदीन ने कितना बड़ा उपकार किया है मुझ पर इस घर को देखने के लिए मेरे मन को तैयार किया। विरासत में मुझे अपने बचपन की अनमोल 'धरोहर' मिली हैं। उसे ही मैं खोना चाहती थी। दादी आप को मेरा शत-शत नमन है। आपने मेरा बचपन मुझे लौटा दिया।

माँ-बेटे सीढी पर बैठे रहे। कुछ देर बाद मंगेश भी दीदी कहता हुआ पास आ बैठा। सीढी के आस-पास झाड़ियों में जुगनू चमकने लगे। उन्हें देखती रही। कुछ देर बाद आकाश में पूर्णिमा का चाँद अपनी छटा के साथ चारों ओर चाँदनी फैलाता निकल आया।

सोनू ने दलाल को फोन मिलाया, बयाना वापस कर दिया। बेटे ने माँ के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा माँ आपने सही निर्णय लिया, इस 'अमूल्य धरोहर' के लिए।

संपर्क सूत्रः-मुशीराबाद, हैदराबाद-तेलंगाना।

बधाई

पुष्पक साहित्यिकी के सम्पादक श्री अवधेश कुमार सिन्हा को युवा उत्कर्ष साहित्य मंच नई दिल्ली द्वारा त्रिभुवन कौल स्मृति सम्मान 2020 से सम्मानित किया गया हैं। यह सम्मान उन्हें हिन्दी लेखन के क्षेत्र में विशेष योगदान हेतु प्रदान किया गया हैं।

लब्धप्रतिष्ठित साहित्यकार एवं पुष्पक साहित्यिकी के सम्पादक **डॉ.अहिल्या मिश्र** को उनके सामाजिक जीवन पर आधारित एवं साहित्यिक लेखन हेतु अखिल भारतीय स्तर की पत्रिका **अभिनव इमरोज** नई दिल्ली ने दिसम्बर 2020 में एक विशेषांक **'डॉ.अहिल्या मिश्र विशेषांक'** 182 पृष्ठों का श्रीमती डॉ.उषारानी राव के अतिथि सम्पादन में प्रकाशित किया है। इसमें उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के साथ उनकी हिन्दी एवं समाज सेवा का विस्तृत मूल्यांकन किया गया है।

प्रधान संपादक एवं कार्यकारी सम्पादक को कोटिशः बधाई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शहीद

–किशन लाल शर्मा

"मेरे अंग शिथिल हुए जा रहे हैं। मुख सूखा जा रहा है तथा मेरे शरीर में कम्पन हो रहा है। मेरे हाथों से बन्दूक छूटी जा रही है। ऐसे युद्ध से क्या लाभ जिसमें स्वजन की हत्या करनी पड़े। अपनी बहन का सुहाग उजाड़ना पड़े। नहीं... नहीं, मैं अपनी बहन को विधवा बनाने का पाप अपने सिर पर नहीं ले सकता। चाहे तो मुझे मार डालो। मैं उसके हाथों से मरने के लिये तैयार हूँ।"

दोनों पड़ोसी देशों के सम्बन्ध सामान्य नहीं थे। आये दिन सीमा पर गोलीबारी होती रहती थी। लेकिन प्यार न दुश्मन देखता है, न ही धर्म, जाति या सीमा के बन्धन को मानता है। कोई नहीं जानता, कब किसको किससे प्यार हो जाये।

'क' की बहन 'ख' को इन्टरनेट से बड़ा लगाव था। रोज उसका काफी समय नेट पर ही बीतता था। एक दिन फेसबुक पर 'ख' की पड़ोसी देश के 'ब' से उसकी दोस्ती हो गई। दोस्ती होने पर वे चैटिंग करने लगे। चैटिंग करते-करते उनमें प्यार हो गया। उनका प्यार इतनी तेजी से परवान चढा कि दोनों ने जीवन साथी बनने का निर्णय कर लिया। एक दिन अपने प्यार के बारे में अपने भाई को बताते हुए 'ख' बोली, "मैं 'ब' से शादी करना चाहती हूँ।" "पागल हो गई है। जानती नहीं तू क्या कह रही है? पड़ोसी देश हमारा दुश्मन है और तू दुश्मन देश के मर्द के साथ जीने का सपना देख रही है।" बहन की बात सुनकर क बोला, "भूल जा उसे और किसी दूसरे मर्द से शादी करने की बात सोच।"

"दो देशों के बीच सम्बन्ध कैसे हैं, इससे प्यार का क्या लेना देना? प्यार मर्द औरत के बीच का मामला है। सानिया ने भी पड़ोसी देश के मर्द के साथ शादी की है।" उदाहरण देते हुये ख बोली। "भैया अगर मैं शादी करूँगी तो 'ब' से ही करूँगी, वरना आजीवन कुँवारी रहूँगी।" 'क' का बहन के अलावा इस दुनियाँ में कोई नहीं था। माता-पिता की मृत्यु के बाद 'क' ने ही बहन की देखभाल की थी। बहन की जिद के आगे उसे झुकना पड़ा और उसने अपनी बहन की शादी 'ब' से कर दी।

दोनों देशों के सम्बन्ध अच्छे नहीं थे। दोनों देशों के हुक्मरान एक दूसरे के खिलाफ जहर उगलने का कोई भी मौका हाथ से नहीं जाने देते थे। दोनों देशों की जनता भी एक दूसरे को अविश्वास भरी नजरों से देखती थी। दोनों देशों की मीडिया मरहम लगाने की जगह आग में घी का काम करती थी। दोनों पड़ोसी देशों के सम्बन्ध चाहे जितने तनावपूर्ण हों, साले बहनोई में जबरदस्त प्रेम था। राखी-दीवाली पर ब पत्नी के साथ क के पास आता था। ईद-होली पर 'क' बहनोई से मिलने पड़ोसी देश जाना नहीं भूलता था। एक दूसरे के देश जाने पर साले बहनोई को कभी किसी तरह की परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा। एक दूसरे के देश में जाने पर उन्हें जनता का भरपूर प्यार मिलता था। साले बहनोई एक दूसरे पर जान छिड़कते थे और एक दूसरे के लिये कुछ भी करने को तैयार रहते थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Jammu-Kashmir-MOE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समय गुजरने के साथ दोनों पड़ोसी देशों के सम्बन्ध इतने तनावपूर्ण हो गये कि नौबत युद्ध की आ गई। 'क' और 'ब' अपने-अपने देश की फौज में थे। उन्हें युद्ध के मोर्चे पर जाना पड़ा और वे एक दूसरे के सामने खड़ें थे। अपने बहनोई 'ब' को सामने देखकर 'क' ने अपनी बन्दूक नीचे कर ली।

'नहीं ! मै अपने स्वजन की हत्या नहीं करूँगा', वह मन ही मन बड़बड़ाया और युद्ध भूमि से पलायन करने का निर्णय कर लिया। वह युद्ध भूमि से पलायन करने के लिये मुड़ने ही वाला था कि उसकी अंतरात्मा से अवाज आई, यह तू क्या कर रहा है? ''मैं युद्ध नहीं करुँगा।'' वह बोला था। ''क्यों ?'' उसकी अंतरात्मा से फिर आवाज आई, ''युद्ध करने के लिये आया है, फिर युद्ध क्यों नहीं करेगा?'' ''युद्ध करुँगा तो मुझे स्वजन को मारना पड़ेगा। अपने ही बहनोई की हत्या करनी पड़ेगी'' वह फिर बोला था। ''भूल गया? कुरुक्षेत्र के मैदान में श्री कृष्ण ने अर्जुन से क्या कहा था?'' अंतरात्मा ने याद दिलाया तो 'क' को गीता का उपदेश याद आ गया।

''अर्जुन जो जन्मा है, उसकी मृत्यु निश्चित है और मरे हुये का जन्म भी निश्चित है। शरीर मरता है, आत्मा नहीं। आत्मा अजर, अमर, अविनाशी है। फिर तू शोक क्यों करता है? यह मत भूल तू एक क्षत्रिय है। क्षत्रिय का धर्म युद्ध करना हैं। युद्ध में वीरगति प्राप्त करेगा, तो स्वर्ग मिलेगा। अगर तूने क्षत्रिय धर्म का पालन नहीं किया और युद्ध भूमि से विमुख होकर भागा तो अपयश का भागी बनेगा। अपयश मरण से भी बदतर है।'' और गीता का उपदेश ध्यान में आते ही 'क' के कदम ठहर गये। उसने सोचा। इस समय मैं अपने देश का सिपाही बनकर युद्ध क्षेत्र में खड़ा हूँ। फौजी का धर्म और कर्म है युद्ध करना। फौजी के सामने युद्ध के मैदान में खड़ा व्यक्ति उसका भाई बन्धु नहीं बल्कि दुश्मन होता है। और यह विचार मन में आते ही उसने बन्दूक उठा ली। बन्दूक 'ब' की तरफ तानते हुये 'क' बोला।

''जानता हूँ तुम पर गोली चलाने का मतलब है, अपनी बहन की मांग का सिन्दूर उजाड़ देना। लेकिन बहन से पहले मेरा कर्तव्य मातृभूमि के प्रति है। माँ, जिसने मुझे पाला पोसा, उस मातृभूमि पर दुश्मन के नापाक कदम हर्गिज नहीं पड़ने दूँगा। बहन के सुहाग की रक्षा करने से ज्यादा जरूरी है, मातृभूमि की रक्षा करना।''

'क' की बात सुनकर 'ब' बोला, ''मैं भी जानता हूँ, तुम पर गोली चलाने का मतलब है, बहन से उसका भाई छीन लेना। लेकिन इस समय तुम मेरे साले के रूप में नहीं, दुश्मन देश के फौजी के रूप में मेरे सामने खड़े हो। देश का सिपाही होने के नाते मेरा कर्तव्य है, दुश्मन से देश की रक्षा करना।'' 'क' और 'ब' एक दूसरे की बात सुनकर एक साथ बोले थे ''आओ हम मातृभूमि के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करें।'' 'क' और 'ब' की बन्दूक से एक साथ गोली चली थी और....

संपर्क सूत्रः-103, रामस्वरूप कालोनी शाहगंज आगरा-28201

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वर्ण संकर

–सुखपाल सिंह

मैं और राजकुमार रेलवे कॉलोनी में रहते थे। हममें मित्रता थी। प्रायः हमारा एक दूसरे के यहाँ आना जाना था। एक रविवार मैं राजकुमार से मिलने उसके निवास पहुँचा तो मैने देखा कि राजकुमार और उसकी पत्नी–नयना दोनों ही उखड़े–उखड़े मूड़ में दिखाई दे रहे थे। शायद उनमें कोई विवाद छिड़ा था। राजकुमार उत्तेजित हो ऊँची आवाज में कुछ कह रहा था और नयना भी क्रोधित हो जवाब दे रही थी। मुझे देख दोनों चुप हो गये। मैने दुःख और झुंझलाहट भरे शब्दों में कहा ''वैसे मुझे तुम्हें इस स्थिति में देख कोई नयी हैरानी या दुःख तनिक सा भी न हुआ क्योंकि यह तो तुम्हारा नित्य का धर्म–कर्म है। बिना लड़े–भिड़े शायद तुम्हारी रोटी हजम न होती हो और चैन से सो भी न पाते हो। नींद में भी झगड़ते रहते हो। मैने शायद ही कभी तुम्हें हंसते–मुस्कुराते पाया हो जब भी आया...। आज तो कुछ ज्यादा ही मामला गर्म है।''

मेरा उपेक्षित भाव देख और व्यंग्य सुन राजकुमार नयना पर हेय दृष्टि डालता, कठोरता से उसकी ओर घूरता बैठ गया। और नयना भी अपने पति के इस उपेक्षित भाव को सह न सकी। वह रुआँसी आवाज में माथे पर हाथ मारती बोली ''रवि बाबू! अपने मित्र से ही पूछिए। मैं क्या बताऊँ? मैं तो इन बाप बेटों से बहुत ही दुखी हूँ। मैं ही इन दोनों की दुश्मन हूँ। इन दोनों ने मेरा जीना दूभर कर नाक मे दम कर रखा है। मेरे तो भाग्य ही फूट गए। जिन्दगी नर्क बनी है। न जाने किस पाप की सजा भुगत रही हूँ। इन दो पाटों के बीच पिस रही हूँ। मेरा तो भाग्य ही मुझसे रूठ गया। आँसू भरे नयनों से नयना ने कहा।

''अच्छा तुम्हीं बताओ। दुनियाँ में ऐसी भी कोई माँ होगी जो अपनी सन्तान को गलत रास्ते पर डालेगी, उसके जीवन व भविष्य को तबाह करेगी? परन्तु ये सदैव यही कह–कह मेरा मुंह बिगाडते रहते हैं कि तूने ही गोपाल (पुत्र) को बिगाड दिया है। तेरे ही लाड़ प्यार और शह ने उसे जिद्दी, हठीला व मनमौजी बना दिया है। बेटे के कार्य कलापों से खिन्न हो कर अपनी भड़ास मुझ पर निकालते हैं। जो मुँह आया वही कह उठते हैं और मुझ पर दोष मढ अनर्गल दोष लगा अनाप–शनाप बोलते हैं। कभी–कभी तो क्रोध में पगला कर गाली गलौज क्या हाथा–पायी तक पर उतर आते हैं। बेटे से तो पार बसती नहीं मेरे कान उमेठते रहते हैं। सदा बेटे के सामने ही बिना कुछ जाने उसका पक्ष ले मेरा ही मुँह बिगाड़ते रहते हैं। जब ये ही मेरा मान–सम्मान न करेंगे तो बच्चा क्या करेगा। इस रोजाना के कलह से मैं इतनी तंग आ गयी हूँ कि कभी–कभी तो इनसे पल्ला छुडाने जान देने की सोचती हूँ परन्तु मां–बाप की बदनामी समझ जान भी नहीं दे पाती। हे भगवान वह कितनी मनहूस घड़ी थी जब इनके पल्ले बंधी थी।'' कह नयना आंसू गिराने लगी।

''विश्वास करो रवि बाबू! मेरी तो गोपाल की मनमौजी, आवारागर्दी, लापरवाही और अनियमित दिनचर्या पर उसकी जिद व हठ को लेकर लगभग रोज ही कहा सुनी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

होती है परन्तु वह मेरी सुनता ही कहाँ है। इस कान सुन उस कान निकाल देता है। इसकी इन मन-मानी हठ पर आँसू पी कर रह जाती हूँ या भाग्य को कोस सान्त्वना दे लेती हूँ। परन्तु इन्हें मेरे इस दुःख का जरा सा भी ख्याल नहीं होता बस एक ही राग अलापते रहते हैं कि गोपाल को बिगाडने में तेरा ही हाथ है। तेरी ही सह पा रहा है। यह तेरी ही मेहरबानी है कि वह इतना बिगड़ रहा है। दोष किसे दूँ जब मेरे अपने ही मुझे सता रहे हैं। भाग्य में यही लिखा है।'' ''यदि राजकुमार का ऐसा रवैया है तो यह ठीक नहीं। यह कभी न भूलो कि बेटे को ऐसा देखकर उसे राह पर न लाना अपने पैरों पर ही नहीं अपितु उसके पैरों पर भी कुल्हाड़ी मारना है। जब बच्चा किन्हीं कारणों से माता-पिता की आज्ञा का अनुसरण न करे तब माता-पिता इसे अपना निरादर न मान उन्हें अपने अहंकार को त्याग सन्तान को जीवन के झंझावतों से परिचित करा भविष्य एवं जीवन के उच्च निर्माण हेतु प्रेम पूर्वक समझाना चाहिए।''

''मुझे तो कलह की जड़ बेटा नहीं अपितु तुम दोनों की आन्तरिक वैमनस्यता या असमानता का भाव नजर आ रहा है। क्या तुमने कभी बेटे के किसी भी अवगुण पर दोनों ने एक सुर में उसे डांटा-डपटा? या बेटे के सद्गुणों को दोनों ने एक साथ सराहा या प्रशंसा की? असलियत में तुम कुछ और ही सोचते रहे। मैने कई बार देखा है जब माँ ने बच्चे की गलती पर कठोरता का व्यवहार किया तब बाप ने इसे व्यर्थ की बकवास या व्यर्थ की कलह का दर्जा दे बेटे पर दया और सहानुभूति की वर्षा की और जब पिता टोका या प्रताड़ित किया तो माँ का कलेजा मुँह को आया। परन्तु माता-पिता दोनों ने अपने इस परस्पर विरोधी व्यवहार का दूरगामी परिणाम न सोचा और न ही अपने उत्तरदायित्व को पूर्ण रूप से निभाया। परन्तु गोपाल इसको पूर्णतः पत्नी की गलती समझ उसका लाभ उठा रहा है। बच्चे पर माता-पिता का समान व्यवहार ही होना चाहिए। इस पर महात्मा दयानंद सरस्वती ने तो दस-बारह वर्ष की आयु तक सन्तान पर कठोर दृष्टि एवं दोष या अवगुण पर दण्ड की व्यवस्था दी है।''

''सचमुच तुम दोनों ही शिक्षित होकर भी अशिक्षित जैसे ही रहे। यह तो हम सभी नित्य प्रति प्रत्यक्ष देखते ही हैं कि कीट, पतंगे, जीव, वनस्पति के बीज होते हैं। अण्डे होते हैं और बहुत ही सूक्ष्म होते हैं जिन्हें नंगी आंखों से देखना भी आसान नहीं होता। इस छोटे से छोटे बीज या अण्डे में उसके अपने समस्त अवयव यथा-भौतिक आकार, रूप-रंग कुल और आयु सभी अणु-परमाणु रूप में विद्यमान होते हैं। या यूँ भी कह सकते हो कि वह अण्डा या लघु बीज अपने कुल या जाति का सम्पूर्ण लघु रूप है। जैसे पीपल या वट के छोटे से बीज या अजगर के छोटे से अण्डे में ठीक उसी प्रकार मानव के द्रव बीज में मानव की वंश परम्परा, कुल, मर्यादा, आकृति, रूप-रंग, धर्म-कर्म, आयु एवं लिंग आदि सदैव अति सूक्ष्मतम या अणु -परमाणु रूप में सदैव विद्यमान रहते हैं और वे मानव रूप में जन्म लेकर न्यूनाधिक उन्हीं गुणों के अनुसार अपना विकास करते हैं। हम पति-पत्नी एक दूसरे पर व्यर्थ दोषारोपण करते हैं। हम यह नहीं सोचते कि बच्चा तो हम दोनों का ही एक रूप है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दूसरा जन्म पाकर माता-पिता का जैसा आचरण देखेगा बच्चा उसी का अनुसरण करेगा। महात्मा गांधी ने भी माता-पिता को बच्चे का प्रारंभिक गुरू माना है, और सन्तान के विषय में तो एक कहावत भी है, माँ पर धी, पिता पर घोड़ा, बहुत नहीं तो थोड़ थोड़ा।'' मैने कहा।

इस पर नयना ने तुनक कर कहा ''हममे तो बेटे जैसा एक भी लापरवाह हठीला या मनमौजीपन नहीं है। तुम्हारे कथन से तो बेटा ऐसा नहीं होना चाहिए, पर प्रत्यक्ष है मेरी समझ में नहीं आता कि बेटा ऐसा क्यों है?'' नयना ने आश्चर्य सा प्रकट कर कहा।

''भाभी जी! ऐसा कहना अज्ञान का आवरण मात्र ही है।'' मैने कहा। ''आवरण कैसा और क्यों?'' नयना ने पूछा? ''मुझ से ज्याद तुम ही जानती हो।'' मैने कहा। नयना ने अन्तः के सन्देह के कारण इसे आगे न बढा कर कहा ''समझ से परे हो रहा है पुत्र ऐसे कैसे हो गया?''''मैने कहा मैं बताऊँ?, बात कड़वी अवश्य है। तुम दोनों पति-पत्नी अपनी आन्तरिक श्रेष्ठता से उत्पन्न कटुता के कारण समझ न सकी हो। तुम्हारा बेटा उच्छृंखल है। जिसका प्राचीन नाम ''वर्ण संकर है।''

मेरा कहना था कि नयना की त्योरियाँ चढ गयीं और आक्रामक सी मुझ से बोली, ''जो बोल रहे हो।, उसे जानते भी हो?, प्राचीन काल में मनु महाराज ने कहा था जब पिता उच्च वर्ण और मां निम्न वर्ण की हो तब उनकी सन्तान वर्ण संकर कहलाती है। हम तो पति-पत्नी एक ही वर्ण के हैं फिर हमारे घर यह वर्ण संकर क्यों? मैं इसे नहीं स्वीकारती। यह समाज व्यवस्था मनु महाराज कृत है ईश्वरीय या प्रकृति प्रदत्त तो नहीं और मनुष्य कृति कभी निर्दोष नहीं हो सकता। आज आधुनिक परिवेश में यह वर्ण व्यवस्था अमान्य और महत्वहीन ही हैं।''

''मैं इस व्यवस्था या रीति की मान्यता की वकालत नहीं कर रहा हूँ परन्तु क्षण भर के इस वर्ण के स्थान पर गुण मान ले। उच्च सद्गुणों को उच्च वर्ण और निम्न गुणों या अवगुणों को निम्न वर्ण, तब तो वर्ण का आशय या अर्थ स्पष्ट हो जायेगा। भाभी जी युग के साथ-साथ परिभाषाएँ भी परिष्कृत हो जाया करती हैं। वास्तव में मनु महाराज का वर्ण से तात्पर्य स्त्री-पुरुष के गुण, स्वभाव, चिन्तन, मनन, कार्यकलाप, व्यवहार, आहार-विहार, आदि आदि कर्मों से है न कि जन्म से। जन्म से व्यवस्था तो कालान्तर की देन है।

स्त्री-पुरुष के गुणों में अन्तर होना स्वाभाविक है। जब पति-पत्नी के परस्पर मन-मस्तिष्क में स्वयं के उच्च निम्न का भाव, विवशता, अपनत्व एवं कुल आदि का भेद होगा तो उनकी सन्तान पर माता-पिता, भावों या क्रिया-कलापों, दिनचर्या एवं सोच विचार का अवश्यमेव प्रभाव होगा।

जब माता-पिता में आत्मीयता, उच्च निम्न का भाव, विपरीत चिन्तन-मनन एवं आन्तरिक मनोभावों में भिन्नता है, मत ऐक्य नहीं है तो उनकी सन्तान उन्हीं उत्पत्ति कारक गुणों के फलस्वरूप उच्छृंखल होगी ही।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे इस उत्तर पर राजकुमार को मौन और नयना को उग्र सा देख मैने तटस्थ होते हुए कहा कि ''मैं तुम पर ऊँगली नहीं उठा रहा हूँ। मैं तो पुराने ऋषि-मुनियों के विचार और आज की साइंस को कह रहा था। साइंस ने भी इसको स्वीकार लिया है।''

''तुम्हारे अनुसार मान लिया पर जब हमारे बीच ऐसा कुछ नहीं है। लड़ाई-झगड़े किस परिवार में नहीं होते हैं। हमारे मध्य विरोधाभाव है तो हम अभीतक पति-पत्नी के रूप में कैसे और सन्तान कैसे? उनकी संताने तो ऐसी नहीं होगी।'' नयना ने प्रश्न किया। पति-पत्नी रूप में साथ-साथ रहना, सन्तान होना और सन्तान कैसी है ये दोनों अलग बातें हैं। यह हो भी सकता था कि तुम्हारा दाम्पत्य छिन्न-भिन्न हो जाता, परन्तु तुम्हारी कायरता के कारण वह असम्भव रहा। सच में गोपाल इतना दोषी नहीं, दोषी तो तुम दोनों पति-पत्नी हो। बेटे के ये सारे अवगुण तुम्हारे ही तो दिए हैं। तुम्हारे ही गुणों को लेकर ही तो वह धरा पर आया है और तुममे प्रत्यक्ष साकार रूप से उन्हीं गुणों को पाया। उन्हीं के आधार पर उसका विकास हुआ। फिर बच्चा कहाँ दोषी है।''

''मैं यह आरोप नहीं स्वीकारती। इस दुनियाँ में अनेकों दम्पत्ति हैं जिनकी आपस में नहीं बनती पर उनके बच्चे तो उच्छृंखल नहीं होते। यह हमारे किसी पूर्व कर्म का फल है या मेरा कोई पूर्व का पाप है जो बेटा बनकर अपना बदला ले रहा हैं। ''मैं भी यही कह रहा हूँ, आरोप नहीं लगा रहा हूँ कि यह तुम्हारे ही कर्मों का फल है। परन्तु पूर्व के नहीं इसी जन्म के।'' नयना ने कडवा सा स्वर बनाकर कहा, ''रवि बाबू यह तुम्हारा हम पर अभद्र दोषारोपण है।'' ''दोषारोपण नहीं वास्तविकता है। सुनने का साहस है? तुम्हारे यहाँ मेरा वर्षों से आना जाना है। मौका हाथ लगते ही तुम दोनों मुझे वर्षों से एक दूसरे की ख़री-खोटी और बुराई करते आ रहे हो। दोनों ही अपनी-अपनी श्रेष्ठता का बखान करते रहे हो।

आज के बेरोजगारी के युग में मात्र दसवीं पास राजकुमार को रेलवे विभाग में बाबू होना कम गौरव की बात नहीं हैं। उसका सारा जीवन चिन्तन तो इसी आधार पर गर्वित है। यदि समाज का भय न होता तो कभी भी तुम जैसी सामान्य रूप रंग की युवती को नहीं स्वीकरता। और तुम्हारा बडे अमीर शहरी परिवेश की पोस्ट ग्रेज्युएट युवती होना भी कम गर्व की बात नहीं। मैंने कायर या साहस हीन इसलिए कहा था कि तुम दोनों ने अपने अपने अभिभावकों को अपने जीवन साथी के विषय में स्पष्ट न कहा था। तुम दोनों के अभिभावकों ने तुम दोनों से विवाह के विषय में कोई भी राय लेना उपयुक्त न समझा। नयना भाभी जी। तुम्हारे पिता ने बस यही देखा कि लड़का (राजकुमार) रेलवे विभाग में बाबू है बस इसी योग्यता को सर्वश्रेष्ठ स्वीकार तुम्हारा हाथ थमा दिया और राजकुमार के अभिभावकों ने स्वयं को ग्रामीण और सामान्य देहाती परिवार समझ शहर के एक सम्भ्रान्त व्यक्ति से संबंध एक गौरव की बात मान सहर्ष स्वीकार लिया होगा और तुमने कायर की भांति अपनी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अभिलाषाओं का गला घोंट संबंध स्वीकार लिया होगा जैसा कि तुम्हारी बातों से समय समय पर स्पष्ट होता रहा।

यद्यपि सभी को तुम लोग पति-पत्नी रूप में एक ही दिखते हो और उसका कारण पुत्र गोपाल भी प्रत्यक्ष है, परन्तु वास्तविक रूप में आन्तरिक भावों में तुम दोनों में जमीन-आसमान का अन्तर है। गृहस्थी की गाडी चल रही है परन्तु कायरता और विवशता के बन्दी गृह में। यह मैंने तुम दोनों की समय समय पर असन्तुष्टि के आधार पर ही कहा है।''

अपनी अपनी कलई धुल जाने पर दोनों ही शर्मिन्दा हो नीची गर्दन किए थे। इस सत्य को झुठलाने का साहस भी न था। राजकुमार ने अपने अन्तः मे गहन वेदना अनुभव कर एक गहरी सांस लेकर कहा, ''रवि बाबू! कुछ भी कहो परन्तु हमारा तो भविष्य अंधकारमय हो ही गया है।'' नयना ने कहा, ''भाग्य ही फूटा समझो।''

मैने दोनों को सान्त्वना देते हुए कहा ''अभी भाग्य फूटा नहीं है। अभी तो बचाया जा सकता है, परन्तु यह तुम दोनों के हाथ में ही है। यदि तुम दोनों सचेत न हुए तो आगे नौ-नौ आंसू बहाओगे और एक एक क्षण शान्ति और खुशियों को तरसोगे। सबसे पहले इस विषमता के भाव को और श्रेष्ठता के भाव को कूडा-कचरा समझ फेंक मारो और निश्छल भाव से समर्पण करो क्योंकि विषमता एवं अहंकार का भाव बैर ही पैदा करता है और जो आनंद और खुशियों का बीज तुमने स्वयं ही निम्न और उच्चता की मरूभूमि में फेंक रखा है। उसे प्रेम व समर्पण का खाद और पानी दो-उसे अंकुरित होने पुष्पित एवं पल्लवित होने का पूर्ण अवसर दो। असमानता, अमीर-गरीब, निम्न-उच्चता का जहरीला द्वेष अपने अन्तःकरण और विचारों में पालकर तुमने अपने गृहस्थ जीवन का सुख खो दिया है। यह आनंद और खुशियाँ जो खो रहे हो वे तुम्हें कल फिर न मिलेंगे। इस असमानता के चिन्तन में स्वर्ण अवसर गवां रहे हो। आचार्य रजनीश के शब्दों में इसके बदले में अपने अन्तः में उच्चता के स्थान पर निम्नता का प्रादूर्भाव करते हो। घृणा कभी प्रेम व सौहार्द नहीं पाल सकती। यह तुम्हारी गृहस्थी या प्रेम विवशता से जकड़ी है जो दिखावा है झूठ भी है। बाह्य रूप से तो प्रेम या प्रीति दिखती है, परन्तु यथार्थ में वह प्रेम नहीं वरन् शनैः शनैः वह अदृश्य घृणा में परिवर्तित हो रही है। तुम्हरे हृदय में प्रेम का जो विन्दु है उसे तुमने ही अपने विचारों से निष्क्रिय किया हुआ है। उसे जरा क्रियाशील तो करके देखो। फिर तुम्हें जीवन का, गृहस्थ का यथार्थ आनंद सुख शान्ति एवं आत्मिक सन्तोष मिलेगा। और तुम एक अलौकिक आभार से भर उठोगे। दूसरे तन बदन और मन प्रफुल्लित हो रोम रोम खिल उठेंगे।

अभी गोपाल अबोध है। वह तुम लोगों में प्रेम मान-सम्मान, आत्मियता एवं सहिष्णुता देख स्वयं हीं अवगुणों को त्याग तुम दोनों की आज्ञा का अनुकरण करेगा। और उसमें आशातीत सुधार होगा।''

संपर्क सूत्र : विष्णु गार्डन हरिद्वार मो.7579026834.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अल्पना अंकित दीवार

-मूलः-प्रतिभा राय
हिन्दी अनुवादः-सुरभि बेहेरा

लगभग पाँच वर्ष के बाद कपिल स्वाँई का बेटा वापस अपने घर लौटा था। घास पर पड़े हुए ओस की बूँद की तरह देखते पिछला पाँच साल न जाने कैसे दिन रात गधे की तरह खटते हुए कहीं खो सा गया था। कपिल स्वाँई का बीस वर्ष का बेटा नकुल स्वाँई रुपये कमाने के नशे में अपनी बुनियादी जवान शरीर के रक्त को पसीने से लथपथ होकर पानी के रूप में लगातार बहाते जा रहा था। घर की याद आने पर भी वह कभी घर लौटने की ओर ध्यान ही नहीं दे पाता, क्योंकि जिस कम्पनी में वह कार्यरत था वहाँ से वापस लौटना इतना आसान नहीं था। अगर अपने देश की बात होती तो रेलगाड़ी पकड़कर सीधे गाँव चला आता, लेकिन वहाँ से गाँव लौटाने के लिए पानी जहाज या हवाई जहाज के बिना दूसरा कोई रास्ता था ही नहीं, और फिर गाँव लौटने के लिए इतने पैसे वह लाता भी तो कहाँ से?

जिस दिन नकुल नौकरी पाने की उम्मीद में लियाकत मियाँ के साथ गाँव से बम्बई शहर गया था, उस दिन उसे यह जानकारी नहीं थी कि नौकरी अपने देश में नहीं, बल्कि देश के बाहर जहाँ कुआँ खोदने से पानी की जगह किरासन तेल निकलता है, जिस देश ने सिर्फ तेल बेचकर एक धनी देश के रूप में अपनी पहचान बना ली हो, तब तो वहाँ के रहने वाले सभी तेली ही होंगे। इसलिए वहाँ जाने की बात से नकुल बिल्कुल ही बेफिक्र था। लेकिन उसके पिता कपिल स्वाँई अपने बेटे के लिए फिक्र करते हुए कहते, यदि कुआँ खोदने पर पानी की जगह तेल निकलते हैं तो प्यास लगने पर इंसान छटपटाकर ही मर जाएगा। लियाकत मियाँ अपने कच्चे पक्के दाढी को सहलाते हुए गँवार एवं बेवकूफ कपिल स्वाँई की बातों को सुनकर हँसते हुए कहता, ''धत्, यह स्वाँई तो सचमुच बेवकुफ इन्सान है, यदि वहाँ पैसे की कोई कमी नहीं है तो पानी की जगह शराब पीने में क्या बुराई है?'' अगर नकुल वहाँ पूरे पाँच साल तक चुपचाप काम करता रहेगा तो वापस मालामाल होकर सीना तानकर गाँव लौटेगा। वैसे नकुल को गाँव छोड़कर जाने की बिल्कुल भी इच्छा नहीं थी। गाँव में केवल एक छोटी सी कुटिया को छोड़कर उसकी न कोई जमीन-जायदाद, न कोई काम धंधा और नौकरी तो नकुल जैसे लोगों की किस्मत में होती ही नहीं है। नकुल जैसे लोग किसी के घर में नौकर बनकर रह सकते हैं पर नौकरी तो उन्हें किसी हाल में भी नहीं मिल सकती है। लियाकत मियाँ ने अल्लाह कसम खाते हुए कहा, ''जिसके पास कोई सम्पत्ति नहीं होती, उसे इतनी आसानी से ऐसी नौकरी भी नहीं मिल पाती, लेकिन मैं दावे के साथ कहता हूँ कि नकुल को कम्पनी की नौकरी जरूर मिलेगी। यह किसी भी सरकारी नौकरी से कई गुणा बड़ी है। काम थोड़े अधिक होंगे पर उसके मुताबिक पैसे भी बहुत मिलेंगे। हमारा नकुल तो बड़ा ही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कामकाजी लड़का है। काम करने में तो वह सभी को पीछे छोड़ देता है। इसलिए गाँव में बेकार पड़े रहने से क्या फायदा है?'' लियाकत मियाँ ने सफाई देते हुए कहा।

वह नकुल के पिता कपिल स्वाँई तथा उसके परिवार के सभी सदस्य को तसल्ली देते हुए कहने लगा, ''धान के छोटे छोटे कण को फटकार कर उड़ाने की तरह ही यह पाँच वर्ष भी समय के साथ-साथ पंख लगाकर उड़ जाएंगे। उसका बीस साल का बेटा नकुल पाँच साल बाद विदेश से पैसे कमाकर लौटने के बाद बिल्कुल खास दिखने लगेगा। अँगूरी रस पीकर उसका चेहरा सेब की तरह बिल्कुल लाल दिखता होगा। विदेशी शराब कोई खराब चीज तो है नहीं, शुद्ध अंगुर का रस ही तो है।'' लियाकत मियाँ ने अपनी बातों से कपिल स्वाँई को पूरी तरह अपने वश में कर लिया था।

उसके बेटे के नसीब में अंगुर देखना तो मुश्किल था, लेकिन अब वह पानी न पीकर केवल अंगुर रस में ही डूबा रहेगा। इससे अच्छी किस्मत और क्या हो सकती है? उसकी बातें सुनकर कपिल स्वाँई ने भी मन ही मन खयाली पुलाव बना लिया कि विदेश से लौटने के बाद उसके लिए एक अच्छी लड़की देखकर धूमधाम से उसकी शादी कराएगा एवं स्वयं साँसारिक मोहजाल से मुक्त होकर विलसारला के आश्रम में अपना शेष जीवन व्यतीत करेगा। शायद ईश्वर की भी यही इच्छा है। तभी तो लियाकत मियाँ के जरिये उसके बेटे को यह रास्ता दिखाया गया है। हाथ पैर बाँधकर घर बैठे रहने से तो कोई भी बीमार पड़ सकता है। इससे अच्छा तो नकुल देश-विदेश देखकर आये। बाहर की दुनियाँ देखेगा तो बुद्धि, विवेक भी परिपक्व होती जाएगी। गाँव के पंचों के साथ जब नकुल भी चौपाल में बैठेगा, तो विदेश से लौटकर आने वाले बेटे के साथ उसकी इज्जत भी तो बढेगी। उसके पिता होने के गर्व से कपिल स्वाँई की छाती भी फूली नहीं समाएगी।

केवल नकुल ही नहीं बल्कि उसके गाँव के कई लड़के लियाकत मियाँ के साथ विदेश जाकर उसी तेल के पैसों से रईस बनकर लौटे हैं और गाँव में बड़े ठाठ के साथ अपनी जिन्दगी गुजार रहे हैं। गाँव के बीचों बीच विदेशी मुसलमान दान-क्रम से एक मस्जिद भी बना दिया गया है। यह उनके द्वारा दिये पैसे का प्रमाणपत्र नहीं हैं, बल्कि नौकरी की प्रतिश्रुति भी यही हैं। अर्थात् लियाकत मियाँ झूठ बोलने वाला आदमी नहीं है।

नकुल के गाँव छोड़ते वक्त मार्गशीर महीने का अन्तिम गुरुवार चल रहा था। लेकिन गाँव के प्रत्येक मिट्टी की दीवार में अब भी माँ, चाची, तथा अन्य ग्रामीण स्त्रियों के बेमेल हाथों द्वारा अंकित किया गया अल्पना ज्यों का त्यों बना हुआ था। विदेश में रहकर जब नकुल को गाँव की याद आती तो सबसे पहले उसे गाँव के तालाब में खिले कमल का फूल, तालाब में स्नान करते वक्त गुच्छों में खिला सफेद फूल, गाँव की मिट्टी से लिपाई की हुई दीवार में सफेद रंग के अल्पना से अंकित दीवार की ही याद आती। गाँव के अल्पना अंकित दीवार से ज्यादा विशेषकर उसकी माँ के हाथों द्वारा अंकित अल्पना से सज्जित अपने घर की दीवार उसे दिखलाई पड़ने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लगते। अल्पना अंकित फूल के अन्दर उसे अपनी माँ का चेहरा, छोटे भाई की बडी-बड़ी आँखे, नकचढी बहन की मोटी चोटी, छोटी चाची का बडा सा जूड़ा, गरीब परिवार की खुशी सब कुछ दिखाई देने लगता। पूरी दीवार को भाव विभोर होकर एक साथ याद करने पर हृष्ट-पुष्ट, भरोसे वाला मजबूत मुखिया रूपी व्यक्ति दिखाई देता-पिता जी कपिल स्वाँई, जिनका उस पर एक असीम विश्वास साफ दिखाई पड़ने लगता।

कतार में लगे हुए सभी घरों की अल्पना को कपिल स्वाँई ध्यान से देखते ही बता देते कि कौन सा घर किसका है। सही अक्षर नहीं लिख पाने वाली माँ, चाची जी, ताई जी सभी न जाने कैसे पेन्सिल-कलम के बिना केवल अँगुली के माध्यम से पेड़-पौधे, डाल-फूल , कलस, हाथी, तोता, लता के साथ फूलों का गुच्छा, कमल फूल, आराध्य देव, झंडा, लक्ष्मी माँ के चरण, जगन्नाथ-बलभद्र-सुभद्रा तथा अन्य कई अनेक प्रकार के चित्रों का अंकन कर देते। इतनी सुन्दर चित्रकारी मानो स्वर्ग से विश्वकर्मा जी ने अपने कारीगर के हाथ में तूलिका थमा दी हो। किसके दीवार की अल्पना सुन्दर होगी यह सोचकर जब माँ, चाची, भाभी तथा गाँव की सारी औरतें प्रतियोगिता में जीतने के लिए लालटेन की रोशनी में सारी रात जागकर अल्पना बनाती रहती, उस वक्त नकुल स्वाँई भी रात भर जागकर अपूर्व अल्पना कला की प्रतियोगिता को लेकर किसी के भी प्रति हिंसा-द्वेष भावना के चिन्ह नहीं दिखाई देते। अपनी कला कौशल को चरम सीमा तक पहुँचाना ही उनका मूल उद्देश्य रहता। अपने बच्चे को नहला धुला, तेल-हल्दी लगाकर, आँख में काजल तथा कपाल में तिलक लगाकर दूसरे के बच्चे का चेहरा जल जाए...भला, ऐसा कभी कोई माँ सोच सकती है? ठीक उसी तरह अपने घर की दीवार को अच्छी तरह लीप-पोतकर इतने मनमोहक अल्पना बनाते वक्त क्या कभी कोई सोच सकता है कि उसके पड़ोस वाले दीवार की अल्पना खराब हो अथवा जल कर भस्म हो जाए? अपने माथे में सिंदूर लगाते वक्त क्या कभी कोई औरत सोच सकती है कि दूसरी औरत का सुहाग उजड़ जाए। गाँव की प्रायः सभी औरतें इस निर्मल प्रतियोगिता के लिए पागलों की तरह रात भर जागकर अल्पना बनाते वक्त दिनभर की थकान को भी भूल जाती। नकुल ने कई बार गौर किया है कि अल्पना बनाकर जब दीवार सम्पूर्ण रूप से पूर्ण हो जाता, तब उसकी माँ का मासूम सा चेहरा पूर्णिमा की चाँद की तरह चमक उठता। जिस तरह भरपेट खाना खिलाकर आँचल से मुँह पोंछने के बाद नकुल का चेहरा खिल उठाता था। अन्त में जब इतनी कठिन प्रतियोगिता का फलाफल आता तो सभी एक से बढकर एक दिखलाई पड़ते। गौर से परखने के बाद भी कौन सी अल्पना अच्छी होती, लेकिन इतनी अच्छाइयों के बीच किस हाथ की हुनर औरों से सबसे अलग है, उसे पहचाना जा सकता था।

नकुल को सिर्फ अपने गांव की अल्पना से परिपूर्ण दीवार ही याद नहीं आती, उसे याद आते छज्जे पर लटकते हुए गोल-गोल कद्दू, घर के चारों ओर दीवार में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फैले हुए पोई साग तथा उसमें लगे हुए गुच्छे-गुच्छे जामुन की तरह पोई साग के फल। माँ के मना करने के बावजूद उसमें से कुछ फल तोड़कर, नकुल अपने हाथों की तलहटी को जरूर रंग लेता। उसे अपनों का प्यार दुलार याद आता, याद आते आकाश की ओर देखकर गाँव में पहरा देते हुए अनगिनत नारियल के पेड तथा पंखों की तरह हवा में लहराते हुए उन हरित पत्तों के नए-नए करतब। हँसुआ नदी के ज्वारभाटे के साथ झूले की तरह खेलते हुए मछली पकड़ने वाली छोटी नाव, खेतों में पके हुए धान की खूबसूरती, अमर लड्डू खाने की तरह अनगिनत सालों से श्मशान के किनारे लगा हुआ ताल का पेड़, शरीर की रक्षा के लिए बांयी भुजा में ताबीज बाँधने की तरह गाँव के मुहाने में रक्षा कवच के रूप में आसीन भागवत गादी। इन्हीं छोटी-छोटी यादों के सहारे नकुल उस अनजान देश में अपने आने वाले भविष्य की कल्पना करता रहता।

निम्न प्राथमिक स्कूल के चारों ओर बारहों महीने उत्सव की तरह पालित होते सदाबहार फूलों का बागीचा तथा पुआल के छप्पर के साथ गोबर से लिपा हुआ पवित्र मिट्टी का घर। वहीं से उसने अक्षर ज्ञान प्राप्त किया था। एक से लेकर पच्चीस तक का पहाडा उसने पानी की तरह रट लिया था। यहीं से उसने अक्षर को जोड़कर शब्द बनाना भी सीखा था तथा अपने आप को बूढा बैल मानकर अपनी आत्मकथा की रचना भी की थी। जब क्लास में शिक्षक नहीं रहते तो जीरों काटा भी खेला करता, इसके अलावा उसने और भी कई अच्छी चीजें हासिल की थी लेकिन, जीवन के दैनिक चक्र में फंसकर धीरे-धीरे उसके दिमाग से वह सारी यादें धूमिल हो गए थे। निम्न प्राथमिक से उच्च प्राथमिक स्कूल तक जाने के बाद नकुल हाईस्कूल तक भी पहुँच गया था, लेकिन वहाँ तक पहुँचने के बाद वह पढाई में पीछे रहने लगा। क्योंकि हाईस्कूल की पढाई के लिए सारी चीजों की आवश्यकता थी वह उसके बाप के बलबूते के बाहर की बात थी। इस बात के लिए नकुल का मन भी उदास रहता था। उसी की तरह अन्य कई बच्चे और नकुल के लिए प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक ही ज्ञानमन्दिर का शिकर बन गया था। गाँव के पचासों निरक्षर की तुलना में नकुल ही सबसे होनहार विद्यार्थी था। वह अपने गाँव के नाम के साथ अपना नाम भी अंग्रेजी में लिख लेता तथा अंग्रेजी के कई शब्दों का प्रयोग कर बातें भी कर लेता। अनपढ नहीं होने की वजह से ही तो वह अपने देश की सीमा को लाँघ कर विदेश में नौकरी कर रहा था।

खेतों के काम से मुक्त होकर घर लौटने वाले बैल की तरह नकुल का मन अपने गाँव जाने के लिए जितनी तेज गति से भागता, भीड़ से खचाखच बस उतनी ही मन्द गति से आगे बढती। यात्रियों से भरी हुई बस प्रत्येक ठहराव में कुछ यात्री को उनके गन्तव्य तक छोड़कर दोबारा धीरे-धीरे आगे बढती जा रही थी। नकुल का ध्यान उस ओर जाता ही नहीं बल्कि, उसकी निगाहें तो रास्ते के किनारा लगे बड़े-बड़े वृक्ष एवं अपने पहचान वाले घर-मकान पर ही लगे हुए थे। उसे रास्ते का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Digitized by eGangotri KS MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किनारा बडा ही वीरान लग रहा था। बडे-बडे वृक्ष, पेड-पौधे, किसी का नामों निशान तक नहीं था। चारों ओर की हरियाली अचानक उजड-सी गयी थी। इससे पहले नकुल को ऐसा महसूस होता था कि ये वृक्ष-पेड तो अनगिनत वर्षों से है और इसी तरह अन्नंतकाल तक जीवित रहेंगे। लेकिन अचानक इतने परिवर्तन कैसे हो गये?

गाँव के रास्ते जितने करीब आते, चारों ओर उतना ही वीरान दिखाई पड़ता। अनगिनत नारियल के पेड़ गाँव के तलाब में औंधे मुँह पड़े हुए थे। ऐसा लग रहा था मानो उसके बडे-बडे पत्ते अजीबो गरीब आकार में आकाश की ओर देखकर ईश्वर से कुछ मिन्नतें कर रहे हो। मणिजंगा बाजार से होकर जगन्नाथपुर रास्ते में जाते वक्त टूटी-फूटी झोपडी को देखकर नकुल को पिछले तीन वर्ष पुरानी बातें याद आ गई, जिसका नाम 'महावात्या' दिया गया था। उसके बचपन के समय भी उसके गाँव में तूफान का प्रकोप आया था, उस तूफान ने भी उसके गाँव को तबाह कर दिया था, उस समय उसे 'वयाशी' तूफान से जाना गया था। उससे पहले 'अंक' नाम का तूफान भी आया था। नकुल मन ही मन सोचता, आँधी-तूफान बाढ तथा प्रकृति के विभिन्न रूपों का इतना सुन्दर नामकरण न जाने कौन करता होगा? नकुल समझ नहीं पाता कि बच्चों के नामकरण के समय उनके माँ-बाप कहाँ से ऐसे बेमेल नाम रख देते। नकुल का नाम भी इसी तरह रखा गया था। स्कूल की पढाई अच्छी तरह नहीं कर पाने के कारण उसे कहा जाता, तू तो नेवला है, पढाई कैसे करेगा? इसलिए नकुल का नाम 'महानकुल' या फिर 'दशांक' हो सकता था। इन्हीं ख्यालों में नकुल सोचता रहा कि अगर उसे बेटा हुआ तो वह उसका नाम महाशंख, महाचक्र, महाप्रभु, या फिर महाविघ्न की तरह कोई एक नाम रखेगा, तभी लोग नाम सुनते ही आँखे उठाकर उसकी ओर देखने लगेंगे।

नकुल स्वाँई जिस तेल खनिज में काम करता था, वहाँ ओड़िशा की कोई भी न्यूज सुनने को नहीं मिलती थी। अगर आ भी जाते तो नकुल के पास उसे पढने के लिए समय ही नहीं था। रेडियों, टेलिविजन की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। लेकिन अपने आस- पास के लोगों को उसने कहते हुए सुना था कि ओड़िशा के समुद्री तट पर बसे हुए गाँवों में तूफान (महावात्या) ने घोर प्रलय का रूप ले लिया है। ओड़िशा में आये हुए इस प्रलय से ओड़िशावासी की बहुत हानि हुई है, इस हानि को पूर्ण करने के लिए पूरे विश्व के हर कोने से रिलीफ भेजे जा रहे हैं। आज तक जिन लोगों की किस्मत में खाने और पहनने के लिए जो चीजें कभी नहीं मिलती थी, वे सारी चीजें वहीं बैठे-बैठे उन्हें उपलब्ध होते जा रहे हैं। नकुल मन ही मन सोचने लगा अगर ऐसी बात है तो चिन्ता किस बात की? लेकिन, इस खबर को सुनने के बाद उसका मन गाँव जाने के लिए छटपटाने लगा था। दूसरे ही पल वह सोचने लगा कि गांव जाने के लिए उसे अनुमति कौन देगा? गाँव से यहाँ पहुँचने के बाद मैनेजर ने उससे कहा था कि लियाकत मियाँ ने उसके बाप के हाथ में पैसे देकर ही उसे यहाँ आने के लिए राजी किया था। अतः पाँच साल पूरे होने के बाद

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाकी रकम लेकर गाँव जाने के अलावा उसके पास दूसरा कोई उपाय ही नहीं था। इन पाँच वर्षों में नकुल ने अपने गाँव पहुँचने के लिए करीब पंद्रह-बीस चिट्ठी लिखकर मैनेजर के हाथ में दिए थे। लेकिन आज तक एक भी पत्र का जवाब उसे नहीं मिल पाया। उसके हाथ की लिखी चिट्ठी गाँव पहुँच पायी या नहीं, यह जानने के लिए भी उसके पास कोई साधन नहीं थे। ओडिशा में आये भयंकर तूफान की सूचना मिलते ही नकुल एक दो दिन बहुत रोया भी था। लेकिन मैनेजर ने उसे बताया कि लियाकत मियाँ के साथ फोन में बात कर उन्हें गाँव की खबर मिल गयी थी। ओड़िशा सरकार ने अपने मंत्र-तंत्र की मदद से तूफान की गति को अपने काबू में कर लिया है। तीनों तांत्रिकों के उस्ताद सरकारी ऑफिस में बैठकर तूफान को धीरे-धीरे बंगलादेश की ओर भगाने के लिए पवनपुत्र हनुमान की पूजा भी कर रहे थे।

इन सारी बातों को सुनकर नकुल का साहस टूटने लगा था। जिस दिन से उसने घर छोड़ा था घर से कोई सूचना न आने पर भी उसके मन में अपने परिवार को लेकर किसी प्रकार की शंका नहीं थी। लेकिन उसके मन में कई बार विचार आया कि घर में तो सभी अनपढ हैं, यदि कोई असुविधा आयी भी होती तो उसे चिट्ठी लिखकर कौन बताता। यदि किसी और के हाथों से चिट्ठी लिखकर भेजने की कोशिश भी करते तो लिफाफे में सहीं पता लिखे हों, इसकी भी कोई सच्चाई नहीं होती।

उसके गाँव के लोग या नकुल के पिता कपिल स्वाँई चिट्ठी से ज्यादा हवा में उड़ती खबर, किस्मत और ईश्वर पर भरोसा करते थे। इसलिए मैनेजर के जरिये अपने गाँव के लोगों की अच्छी खबर और सभी की कुशलता प्रार्थना कर नकुल का मन शान्त हो गया था।

एरसमा बाजार (पुरी जिला का छोटा सा बाजार) से होते हुए जब नकुल बस से उतरकर अपने गाँव के रास्ते पर चलने लगा, उस वक्त उसके मन में डर समाने लगा। वह जितना आगे बढता, उसे अपने गाँव का रास्ता उतना ही अनजान सा प्रतीत होता। उसे ऐसा महसूस होने लगा जैसे इस बीच वह अपने गाँव का रास्ता ही भूल गया हो। चक्रवात की तरह चारों दिशा घूम-घूमकर वह अपने गाँव को ढूँढ़ने लगा। काफी खोजबीन के बाद उसे अपना गाँव, अपनी जन्मभूमि के दर्शन हुए। लेकिन खुले मैदान के बीच कतार में लगे हुए जो टूटा फूटा घर दिखलाई पड़ रहा था, वह इस तरह ध्वंस हो चुका था कि खुद का घर मिल पाने का तो प्रश्न ही नही उठता। वह मन ही मन सोचने लगा, कहीं किसी अनजान रास्ते में तो वह नहीं उतर गया? अपने गाँव के रास्ते के बारे में किससे पता लगाऊँ? इतने घरों के बीच कौन सा उसका घर है, जहाँ की अँधेरी कोठरी में भी उसकी बचपन की यादें मुक्ता मणि की तरह स्पष्ट झलकती हैं? अपने गाँव के किसी भी घर के चौखट को लाँघने से पूर्व उसे आभास हो जाता कि यह किसका घर है। उसका घर यहाँ नहीं हो सकता, कहीं और होगा या फिर किसी दूसरे गाँव के साथ मिल गया होगा। आस-पास के लोगों से चाहकर भी नहीं पूछ पा रहा था कि हँसुआ नदी के किनारे ऐसे पथरिले, कंटीले

CC-0 Agamnigam Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

झाड वाले गाँव ने कब जन्म ले लिया। जहाँ कुँवार पूर्णिमा की रोशनी में अल्पना से सुसज्जित दीवार फूलों की माला की तरह एक कतार में खड़े हुए दिखाई देते थे, यही हमारे गाँव के संगीत में रच-बस गया था। आखिर कहाँ गया वह मिट्टी की दीवार, दीवार में सज्जित अल्पना, एवं उस अल्पना के ऊपर माँ के हाथों से लिखा घर का सही पता? कहाँ गया नारियल पत्ते से बना छप्पड़, मचान के ऊपर कद्दू की लता, कदीमा के फूल एवं उन फूलों से झाँकते हुए अनगिनत सपने? कहाँ गये अपने रिश्तेदारों का घर एवं उन घरों में रहने वाले हमारे आत्मीय, पूज्यनीय। कहाँ गये विदेश से लौटने वाले पुत्र की बाट जोहती माँ की अश्रुपूरित आँखें?

नकुल किसी को पहचान नहीं पा रहा था, और न ही नकुल को कोई पहचान पा रहे थे। शायद एक-दूसरे के बारे में जानने के लिए किसी को इच्छा ही नहीं थी, या फिर पहचानकर भी अनजान बनकर मुँह फेर लेते थे। हल्की बढी हुई दाढी के साथ साफ सुन्दर पैंट-शर्ट, चमचमाता जूता, दाहिने हाथ में सूटकेस, बाँये कंधे में बडा सा बैग और आँख में गोगल्स लगाये हुए नकुल बिल्कुल विदेशी लग रहा था। गाँव के रास्तों के प्रति उसके अपरिचित व्यवहार, अजीब चाल-ढाल को देखकर ही अन्दाजा लगाया जा सकता था कि इस मिट्टी के साथ नकुल का कोई सम्बन्ध ही नहीं रहा हो, वह दूसरे शहर से आया व्यक्ति हो, या फिर सरकारी अधिकारी हो। यही सोचकर गाँव के लोगों ने उसे रोक दिया था। गाँववासी के मन में उसे लेकर कई प्रकार के प्रश्न कौंध रहे थे-वह कहाँ से आया है? किस स्वेच्छासेवी संस्था के साथ उसका सरोकार है? वह सरकारी अधिकारी है या बेसरकारी? उसकी गाडी कहाँ रखी हुई है? वह गाँववासियों के लिए कैसी मदद लेकर आया है? हमारे गाँव वाले को कुछ मिला या नहीं, या फिर सब कुछ आते ही गायब हो गया? नकुल सिर हिलाकर बार-बार मना कर रहा था कि वह मदद करने के लिए नहीं आया है, बल्कि आप लोगों से मदद माँगने आया हूँ। अपनी जन्मभूमि की पहचान दिलाने के लिए हाथ जोड़कर आप लोगों से विनती कर रहा हूँ। यदि नकुल किसी सहायता के उद्देश्य से नहीं आया है तो उसके साथ बात करना गाँव वालों को बेफिजूल लग रहा था। बेकार में समय बर्बादी से क्या फायदा है? तूफान के बाद से ऐसे अनेक लोग नये-नये वेश में कई प्रकार के काम के उद्देश्य से इस अंचल में आते रहे हैं। कोई अपने मैगजीन के लिए फोटो लेकर छापने के लिए आते हैं तो कोई उन पर आयी हुई विपदा को लेकर कहानी, कविता, विवरण आदि प्रकाशित करते रहते हैं। शायद इस प्रकाशन से उन्हें कोई फायदा होता होगा, लेकिन गाँव वालों को ऐसे लोगों से बातें कर कोई लाभ नहीं हो रहा था। यदि वे लोग गाँव वालों की मदद के लिए देश-विदेश, वैकुण्ठपुरी से कुछ सामान लाये हों तभी उनसे बात करके फायदा है। यदि नकुल उनमें से कोई नहीं है, अगर वह किसी कपिल स्वाँई के घर को ढूँड रहा है, अल्पना से सुसज्जित मिट्टी की दीवार को ख़ोज रहा है, छप्पर के ऊपर लगे कद्दू और कदीमा की लता को खोज रहा है। तो यह उसकी मूर्खता है। ऐसे कई कपिल स्वाँई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब जीवित भी है या..। कौन इतने सबूत के साथ कह सकता है कि कपिल स्वाँई मर गया है? आज तक सरकार के पास भी मृतकों की सहीं तालिका नहीं है। फिर यह व्यक्ति शहरी होकर भी मिट्टी की दीवार, दीवार में सज्जित अल्पना तथा छप्पर का घर क्यों खोज रहा है? क्या इसे इतनी भी जानकारी नहीं है कि आज यही मिट्टी की दीवार इन्सान के लिए मौत का घर बन गया है? क्या अब तक इस लडके को यह नहीं पता है कि इस अंचल में दो कमरे की ईंट की दीवार और सीमेंट छत से बने इंदिरा आवास के लिए कितनी राजनीति एवं कितने जालसाजी हो रहे हैं? सचमुच बिल्कुल नासमझ है ये लडका।

उसी समय कोई खाली टैक्सी लेकर अहिराजवेदा की तरफ जा रहा था। नकुल के शहरी अंदाज को देखकर गाडी रोकते हुए कहा ''साहब आप कहाँ जायेंगे? इससे आगे का रास्ता बहुत खराब है, आप पैदल चलकर नहीं जा सकते। आप गाडी में बैठ जाइये, आप अपनी मर्जी से भाडा दे दीजिएगा।''

नकुल ने चारों ओर नजर दौड़ायी। वीरान मैदान, धान की खेत मिट्टी से अलग होकर एक अलग ही रूप में था। नारियल के पेड टूटकर मिट्टी में गिरे पडे थे। जहाँ धरती और आकाश के बीच पेड-पौधे, जंगल अल्पना से सुसज्जित दीवार, छोटे-छोटे गाँव की शोभा बढा जाती थी, वहीं आज सब कुछ वीरान लग रहा था। ऐसा लग रहा था मानों आकाश और पृथ्वी के बीच दिशा की दूरी को छोडकर कभी कुछ था ही नहीं। नकुल ने गाडी वाले से पूछा-''क्या यह घर बन रहा हैं? ऑफिस या स्कूल?''''नहीं-नहीं, यह गाँव बन रहा है, इंदिरा आवास बनने की प्रक्रिया है।''''एक आदमी के लिए इतने सारे घर? इतने सारे घर के एक ही नाम?''

नकुल आश्चर्य से उस ओर देखे जा रहा था। धरती और आकाश के बीच नरकंकाल की तरह दिखने वाले दो कमरे के घर को देखकर उसका सिर शर्म से नीचे झुक गया। क्या इसे ही इंदिरा आवास कहा जाता है। क्या सचमुच तूफान के प्रकोप से नकुल का गाँव पूरी तरह उजड़ गया था? यही सोचते हुए नकुल थक-हारकर जागलोई मंदिर की सीढियों पर बैठ गया। मंदिर की सीढियों से कुछ ही दूरी पर चौकोर तालाब पहले की तरह पानी से लबालब भरा हुआ था। तालाब के पानी में कमल का फूल बिल्कुल तरोताज दिखाई पड़ रहा था। कमल फूल की ताजगी में कोई बदलाव नहीं, उसकी मुस्कान, अभिमान, अश्रु किसी में तो कोई बदलाव नहीं है, फिर उसका अपना गाँव कैसे बदल गया? गाँव के लोग कैसे इतनी जल्दी बदल गये?

जिस तरह नये कमल फूल के अन्दर अतीत के कमल फूल की झलक साफ दिखाई पड़ती है। उसी तरह गांव में रहने वाले हर मुनष्य में पहले सा अपनापन क्यों नहीं दिखाई पड़ रहा है? नकुल जिस किसी को भी देखता, भावुक होकर पूछता ''कृपया मुझे एक ऐसे गाँव का रास्ता बता दीजिए। जिस गाँव के अल्पना से सज्जित दीवार में कपिल स्वाँई की जन्मभूमि का पता लिखा हुआ हो? उसी दीवार की दूसरी तरफ नकुल स्वाँई की माँ, चाची, भाई-बहन, एवं अन्य रिश्तेदारों के नाम लिखे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

होंगे।'' अपने गाँव की मिट्टी को खोजते-खोजते वह बिल्कुल हताश हो गया था। नकुल टैक्सी वाले से भी यही प्रश्न किया। टैक्सीवाले ने बिल्कुल सपाट शब्द में नकुल से कहा, ''आप नहीं जानते साहब, तूफान ने इस अंचल के लोगों को बहुत धनवान बना दिया है। अब आपको मिट्टी के घर और अल्पना से सज्जित दीवार कहाँ दिखाई पड़ेंगे? आप खुद देखिए, अब यहाँ हर जगह ईंट-सीमेंट से बना मजबूत घर ही देखने को मिलेगा। सिर्फ हमारे जगन्नाथपुर गाँव की किस्मत खराब थी, तूफान का प्रकोप वहाँ भी आया था लेकिन समुद्र के पानी के बहाव में वहाँ नहीं पहुँच पाया, इसलिए घर-द्वार टूट जाने पर भी अपनी भूमि पानी के बहाव में बह नहीं पायी थी, मनुष्य की मौत नहीं हुई थी। इसलिए हमारे गाँव में इंदिरा आवास ही नहीं जितना रिलिफ फंड यहाँ आया, हमारे गाँव को उतना नहीं मिल पाया। इसके अलावा जहाँ प्रत्येक मृतकों की क्षति को पूर्ण करने के लिए अनगिनत पैसे उडेल दिये गये वहीं हमारे गाँव को कुछ भी नहीं मिल पाया। अरे, जो मर गया वह तो इस संसार से ही चला गया। उसके लिए इतने पैसे बाँटे गये, किसी को दो लाख तो किसी को तीन लाख रुपये मिल गये। जिसे इतना नहीं पता था कि किस पैर में कौन सा चप्पल पहनना है, वह भी सूट-बूट पहनकर मोटर साईकिल पर बैठकर सैर-सपाटा करने लगे, अपने ही माँ-बाप की मौत के क्षतिपूर्ण रुपये को पाकर मौज-मस्ती करने लगे। लेकिन हमारे गाँव में जो लोग तूफान के भयानक प्रकोप से भी जीवित रह गये, उनकी जीवन रक्षा के लिए उन्हें सरकार की ओर से कोई सहायता नहीं मिली। जिस तरह अन्धे राजा के राज्य में मंत्री के विपरीत विचार से शासन चलता था, तूफान के बाद इस गाँव की हालत भी उसी प्रकार हो गयी थी। तूफान के प्रकोप से हमारे गाँव में किसी की भी मौत नहीं हुई, हमारे घर-द्वार बह नहीं पाये, क्या यही हमारा सबसे बडा दुर्भाग्य है? नकुल इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दे पाया। क्योंकि अपने प्रियजनों की मृत्यु और उनके मृत्यु पर मिलने वाले क्षतिपूर्ण रुपयों में से कौन ज्यादा महत्वपूर्ण है, इतनी बडी बात समझने की काबलियत उसके पास कभी नहीं थी।

इतना होने के बावजूद नकुल निराश नहीं हुआ था। वह अपने प्रियजनों को भी जरूर खोज लेगा। चूँकि मैनेजर ने तूफान को लेकर उसे कोई बुरी खबर बतायी ही नहीं थी, इसलिए उसके पास निराश होने का कोई सवाल ही नहीं था। टैक्सी वाले के अनुरोध से नकुल टैक्सी में बैठकर नगर पोल के दूसरी ओर पहुँच गया था। वहाँ पहुँचते ही उसे कुवेरगिरी के परिवार वालों की याद आयी। कुवेरगिरी पश्चिम बंगाल के मेदिनीपुर से आये हुए थे। कुवेरगिरी इस अंचल के जाने-माने हस्तियों में पहचाने जाते थे। उनके सात बेटे, आठ बेटी, नौ तालाब, नब्बे नारियल पेड़ के साथ चार छोटे नाव और एक बडा नाव भी था। इसके अलावे जमीन-जायदाद, खेत-खलिहान भी बहुत अधिक थे। प्रत्येक तालाब, उनमें भाँति-भाँति की मछलियाँ जल क्रीडा करती रहती। मछलियों के अनुसार तालाब के नाम भी भिन्न-भिन्न थे। तोडी तालाब, रुही तालाब, भाकुर तालाब, शैउल गडिश तालाब, कलाबांइसि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तालाब, कऊ तालाब, चिंगुडी महुरोली तालाब आदि तालाबों में मछलियों के पसन्द के भोजन दिये जाते थे। रसोई करते वक्त कढाई में डालते ही खुशबू से ही मछलियों के जाति की पहचान हो जाती। कुवेरगिरी घर पर आये अतिथियों के स्वागत में कोई कमी नहीं रखते थे। सरकारी ऑफिसर, मंत्री, नेता, स्थानीय माननीय आदि वर्ग के जो भी लोग इस अंचल में आते तो कुवेरगिरी के घर पर ही उनकी मेहमानवाजी होती। उन अतिथियों को उनके पसन्द की मछली खिलाने के लिए कुवेरगिरी खुद जाकर उस तालाब में जाल फेंकते थे। ताजी मछलियों से जाल भर जाते थे। उनकी पत्नी खुद अपने हाथों से खट्टे-मीठे मसाले से मछली के झोल बनाकर परोसती थी। गोहाल में अनगिनत गाय भैंस बँधे रहते थे इसलिए दूध-दही, छेना, पनीर की भी कोई कमी नहीं थी। अतिथियों को किसी दिन चावल की खीर तो किसी दिन छेना बनाकर खिलाये जाते। आस-पास के कई गाँवों में कुवेरगिरी के घर में बँधे भैंस के दूध से बने दही की चर्चा थी। दही जमकर इस तरीके से बैठ जाता कि उसे काटने के लिए चाकू की जरूरत पड़ती। दही मटके के बजाए प्लेट में रह जाती।

बचपन से ही कुवेरगिरी के सबसे छोटे बेटे सदनगिरी के साथ नकुल की गहरी दोस्ती थी। एक तरह से कहा जाए तो दोनों लंगोटिया यार थे। जिस दिन से सदनगिरी हरिपुर मदन रथ के अपेरा पार्टी के साथ मिल गया, उसी दिन से वह मेदिनीपुर तथा गुजरात में घूम-घूमकर नाटक कम्पनी के साथ काम करने लगा था। उसी दिन से धीर-धीरे नकुल के साथ उसकी दोस्ती की डोर भी कमजोर पड़ने लगी। इसी कारण से नकुल का उसके घर आना-जाना भी बन्द हो गया था। सदन के नाटक कम्पनी ज्वाइन करने के एक साल बाद नकुल भी गाँव छोड़कर सात समन्दर पार विदेश चला गया। उसके बाद दोनों मित्रों की मुलाकात हो ही नहीं पायी। नकुल मन ही मन सोचने लगा कि न जाने कुवेरगिरी के परिवार वाले कैसे होंगे? नगरीघाट की जो हालत हो गयी है, उसे देखकर तो लगता नहीं कि कुवेरगिरी के परिवार तूफान के प्रकोप से अपने आप को बचा पाये होंगे? नकुल ने टैक्सी वाले से कुवेरगिरी के परिवार की कुशलता जानने के लिए अपनी जिज्ञासा जतायी। टैक्सी वाले का घर जगन्नथपुर में था। लेकिन इस अंचल के निवासी में ऐसा कौन हो सकता है जो कुवेरगिरी के परिवार को नहीं जानता हो?

टैक्सी ड्राइवर ने गाडी खडी करके कहा, ''यही से मेरा रास्ता अलग हो जाता है। अगर आप गिरी बाबू के घर जाना चाहते हैं तो जाइये। बिल्कुल नाक के सीधे जो बंगलो दिखाई दे रहा है वही उनका घर है। तूफान ने और कुछ किया हो या नहीं किन्तु गिरी परिवार के सबसे छोटे बेटे सदन गिरी को सबसे अधिक धनवान बना दिया। सभी को दो कमरे का इंदिरा आवास मिला तो गिरी परिवार को आठ कमरे का बंगलो प्राप्त हुआ।'' लेकिन सदन गिरी को इतने रुपये कैसे मिल गये? नाटक कम्पनी वाले क्या इतने पैसे देते हैं? सदनगिरी के बडे से बंगलों को देखकर नकुल आश्चर्य चकित हो गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ड्राइवर ने दार्शनिक लहजे में कहा, ''जितनी मौत उतना लाभ-उतने पैसे। सदनगिरी के माँ, बाप, पत्नी, दो बच्चे हरेक के लिए मुआवजे के तौर पर उसे पचहत्तर हजार रुपये मिले। गिरी परिवार की मझली बहू को उसके पति और चार बच्चे प्रत्येक के लिए मुआवजे के पैसे मिले। मछले बेटे के दस वर्ष के बेटे को उसके माँ-बाप के मरने पर पैसे मिले। गिरी परिवार के कुल बयालिस लोगों में से सदनगिरी को मिलाकर केवल तीन लोग जीवित थे। सदनगिरी तो तूफान समाप्त होने के लगभग पन्द्रह दिन बाद खाली हाथ गुजरात से लौटा था। अपेरा (नाटक कम्पनी) वाल मालिक तो बहुत कंजूस निकला, सिर्फ आने-जाने का खर्च देकर उसे बिना पैसे के वापस भेज दिया। लौटते वक्त उसे यह कहकर भेज दिया कि अभी तुम्हारे एरसमा गाँव में खाना, कपडे, बरतन, कम्बल, जूता, छाता, आदि की बरसात हो रही है। घर-द्वार टूटने के लिए भी पैसे मिल रहे हैं। तुम्हारे परिवार वालों के पास तो मुआवजे में मिले पैसों के अपरम्पार लग गये होंगे। इसलिए तुम अभी पैसे लेकर गाँव क्यों जाओगे? इसके अलावा भी गाँव में भूखमरी के कारण चोरी-चकारी, लूट-पाट भी बहुत हो रहे होंगे। समाचार पत्र में हर रोज इसकी चर्चा निकलती है। हमारे पास तेरे नाम के पैसे हिफाजत से रहेंगे। सब कुछ सामान्य हो जाने के बाद जब तुम नाटक कम्पनी में वापस लौटोगे तो तुम्हारे पैसे भी लेते जाना। मैं तुम्हारी भलाई के लिए ही तुम्हें यह सुझाव दे रहा हूँ। उसके बाद सदनगिरी के पसीने की कमाई सचमुच डूब ही गयी, और अब अपने परिवार के खून से बहे पैसे को पाकर वह मालामाल हो गया है। सदनगिरी को अपने छोटे भाई की मौत के बाद मुआवजे में मिली रकम पाने के लिए सरकार से बहुत जद्दोजेहद भी करनी पडी। लेकिन वंश के नाम पर जिस भाई के आगे-पीछे कोई नहीं था, उसके मुआवजे वाली रकम को केवल सदनगिरी को नहीं मिलनी चाहिए थी। लोग तो यहाँ तक कह रहे थे कि सदन ने सरकारी अधिकारी को रुपये-पैसे खिलाकर चारो भाई के मुआवजे वाली रकम को अपने नाम करा लिया था। अब बडा माल अपने कब्जे में कर गाँव के बाहर मछली का चालान कर रहा है। जिस दो भाई के बच्चे और पत्नी जीवित हैं, उनके पैसों का मालिक भी सदनगिरी बन गया है। सदनगिरी की पत्नी उनके बच्चों पर अत्याचार कर रही है। जानते हैं बाबू, यहीं पर अनाथ बच्चों पर हो रहे अत्याचार को देख तरस आ जाता है। जसकी मृत्यु हो गयी उसे मुक्ति मिल गयी, पर जो नाबालिक रहकर जीवित रह गये उसके पैसे की लालच में उसके अपने भाई, मौसा, मामा, मेरा बेटा, मेरा बेटा कह-कहकर अपनी ओर खींचते रहते हैं। उसके माँ-बाप को मिलने वाले मुआवजे की रकम पाकर उन्हीं का शोषण, अत्याचार करने लगते हैं।''

यह सारी बातें सुनने के बाद नकुल का सिर चक्रवात की तरह चकराने लगा। नरकंकाल की तरह खड़ा हुआ इंदिरा आवास क्या सचमुच एक और तूफान से विपदा में फँसे हुए लोगों की मदद कर पाएगा? सदनगिरी की तरह बड़े महल बनाने वाले हृदहीन अभिभावक अपने बाप-भाई के मुआवजे की रकम पाकर क्या सचमुच

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शान्ति, सन्तोष के साथ उसका अपभोग कर पायेंगे?

अचानक नकुल ने महसूस किया कि जिस घर की दीवार में अल्पना अंकित नहीं हों, कद्दू कदीमा की लता नहीं हों उस घर के लोगों में न अपनापन होता है और न ही आत्मिक प्रेम होता है। प्रकृति के ताण्डव से आत्मरक्षा पाने का नाम ही जीवन नहीं होता। यह आत्मरक्षा भी एक तरह का प्रलोभन ही है। जिस तरह छोटे बच्चों को टूटा झुनझुना दिखलाकर उसके मन को बहलाया जाता है उसी तरह आवासहीन लोगों को इंदिरा आवास दिलाकर उनके मन को जीतने की कोशिश की जाती है। इसी वजह से अब गाँव के लोगों में आपसी प्रेम भाव, सौहार्द भाव भी नहीं हैं। इसके अलावा बडे-बडे पक्के मकान वालों को भी इंदिरा आवास से मुआवजे मिले हैं, और जिनके सिर पर छत नहीं है उसे इंदिरा आवास से कोई मुआवजा नहीं मिला है। आजकल हर काम के लिए रिश्वत, झूठ, हृदयहीनता और असाधु बनना जरूरी हो गया है।

तूफान अपने आप में जितना विकराल नहीं था, उससे कहीं ज्यादा दर्दनाक रूप इसे गाँव के लोग तथा सरकारी अधिकारी वर्ग ने बना दिया। नकुल उसके साथ काम करने वाली चम्पा, झूलणा, हेमा, वासन्ती, गंगा आदि लड़कियों को याद करने लगा। वैसी ही एक लड़की को उसने सपने में तेल खनिज में खटते हुए देखा था। उसे सोनी भाभी, मल्ली भाभी, लता भाभी, रेणु भाभी आदि गाँव की सभी भाभियों का स्नेहमयी चेहरा याद आने लगा। वे लोग अभी कहाँ है, नकुल को इसकी कोई जानकारी नहीं थी। लेकिन जहाँ भी हो इस तरह असहाय एवं नीरस जीवन व्यतीत करें, नकुल ने मन ही मन कामना किया।

टैक्सी उसे यहाँ छोड़कर अपने रास्ते चली गयी। अब सदनगिरी के कोठाघर की ओर जाकर क्या फायदा होगा? पश्चिम दिशा के रास्ते किनारे से लगा एक कमरे वाला मिट्टी का घर दिखाई दे रहा था। नारियल के चिकनी डाल से मिट्टी घर के छज्जे को प्यार से अपनी गोद में लिये देख, नकुल को ऐसा महसूस हुआ मानों उसने करोड़ों की सम्पत्ति पा लिया हो। नकुल उस मिट्टी घर की ओर दौड़ पडा। यदि यहाँ की दीवार में अल्पना अंकित दिखाई पड़ गये तब उसे विश्वास हो जाएगा कि इस अंचल के लोग इतने निष्ठुर, हृदयहीन नहीं हो सकते। लेकिन नजदीक जाते ही उस मिट्टी की दीवार को देखकर नकुल का मन उदास हो गया। मिट्टी की दीवार में अल्पना अंकित नहीं थी। लेकिन उस वक्त छोटे से घर के आँगन में खड़ी किशोरी की काली लम्बी चोटी में लगे सफेद फूल, तथा उसका सरल शान्त चेहरा, नकुल के निराश मन को अल्पना अंकित दीवार से ज्यादा सरस दिखाई पड़ रहा था। उस किशोरी की उदास आँखें नकुल को अतिक्रम कर दूर-दराज में कुछ खोज रही थी। उसके लिए नकुल एक शून्य के बराबर था। यह बात वह अच्छी तरह जानती थी कि नकुल की उपस्थिति से उसके जीवन में लाभ या हानि होने का प्रश्न ही नहीं उठता। नकुल ने बड़ी देर बाद उससे प्रश्न किया, ''क्या तुम्हें इंदिरा आवास नहीं मिला? तुम कैसे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिट्टी के घर में रह रही हो?''

''बाबू, हमारी किस्मत ऐसी कहाँ-हम लोग तो तूफान के बाद यहाँ आये हैं।''

''इससे पहले तुम कहाँ रहती थी?''

''मेदिनीपुर में। वहीं मेरा ससुराल है। लेकिन, मायका यहीं कियादा में हैं।''

''मेदिनीपुर से यहाँ क्यों आ गयी?'' नकुल ने उत्सुकतावश पूछना चाहा।

''वहाँ बहुत काम करने के बाद ही खाना मिल पाता था। पेट भरना मुश्किल हो गया था। यहाँ तूफान के बाद सरकार की तरफ से बहुत अधिक रिलिफ बाँटा गया। कई लोगों ने कहा कि यहाँ खाने के बदले काम भी मिल रहे हैं। इसके अलावा तूफान में मेरे माँ-बाप की मौत के बाद मुआवजे स्वरूप करीब डेढ लाख रुपये मेरे भाइयों को भी मिला। इसलिए मुझे लगा यहाँ आकर मुझे काम मिलेगा, खाना मिलेगा, माँ-बाप की मौत के बाद मुआवजे की रकम से कुछ पैसे बेटी को भी मिलेंगे। लेकिन मेरे निर्दयी भाइयों ने उन पैसों में से मुझे सौ रुपये भी नहीं दिये। रिलिफ के पैसे भी उम्मीदजनक नहीं मिल पाये। अब बड़ी मुश्किल से अपना गुजारा चल रहा है।''

''यदि दोबारा तूफान आ गया तो यह घर भी मिट्टी में मिल जाएगा-फिर अपने दो छोटे-छोटे बच्चों को लेकर कहाँ जाओगी?'' नकुल ने उसकी बेबसी देखकर पूछा। इतना सुनते ही किशोरी का चेहरा चमक उठा, खुशी से प्रसन्न होते हुए उसने कहा ''अगर ऐसा हो गया तो मेरे लिए बहुत अच्छा होगा। कम से कम इसी बहाने मुझे भी इंदिरा आवास मिल जाएगा। यहाँ तो हर साल आँधी-तूफान होता ही रहता है..।'' ''लेकिन यह जगह तो तुम्हारी नहीं है-तुम क्या इस जगह को खरीद ली हो?'' नकुल ने अपनी बात पूरी भी नहीं की थी कि वह किशोरी जोर से हँस पड़ी। उसने जिरह करते हुए प्रश्न किया, ''बाबू, आप यहाँ जितने भी घर देख रहे हैं, क्या किसी ने भी इस जगह को खरीदा है? सभी ने इसे आईने के खिलाफ ही खरीदा है। बहुत दिनों तक यहाँ रहते-रहते यहीं के हो गये हैं। नेताओं ने वोटर लिस्ट में नाम चढाकर सभी के हाथों स्लिप थमा दिया है। केवल वोट दे देने पर ही तुम इस अंचल के निवासी बन गये। जंगल काटकर सभी ने जमीन अपने अख्तियार में कर लिये। आप कहाँ से आये हो बाबू, जो इतनी छोटी-सी बात भी नहीं समझते?'' किशोरी ने नकुल से प्रश्न किया। ''मेरा जन्म इसी मिट्टी में हुआ था। मेरे पिता जी ने बँग्लादेश के झुलणा जिला से यहाँ आकर इस जमीन को अपने दखल में कर लिया था। कई एकड़ जमीन को उन्होंने अपनी मेहनत से आबाद किया था। अभी उन सभी जमीन का मालिक मेरा भाई बन गया है। उन्हें इंदिरा आवास भी मिला है। मैं तो अवहेला नारी ही बन कर रह गयी।'' उसकी दर्दनाक बातें सुनकर नकुल छटपटाता हुआ वहाँ से लौटने लगा। किशोरी कन्या ने अपने अनुभव से नकुल के हाव-भाव को समझते हुए पूछा-''बाबू, तुम कहाँ से आए हो? अब कहाँ जाओगे?''

''क्या तुम जानती हो, यहाँ मिट्टी का घर और किस-किस का है? मैं अब तक मिट्टी के घर वाले गाँव के तलाश में ही भटक रहा हूँ।'' नकुल ने उस मासूम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लड़की से स्नेहिल शब्दों में पुचकारते हुए पूछा। लड़की ने जवाब में तुरन्त कहा– ''सिर्फ मिट्टी के घर वाला गाँव, तुम्हें यहाँ अब ऐसा गाँव नहीं मिलेगा बाबू। फिर भी यहाँ से एक किलोमिटर दूर एक बडा सा मिट्टी का घर मिलेगा ''ममता गृह'' यदि वहाँ जाना चाहते हो तो जाओ..।'' ''ममता गृह'' वाह, तब तो वहां प्यार–दुलार, स्नेह से सराबोर आँगन होगा, जहाँ ममता की गोद के तले सभी एक बराबर होकर सुखी जीवन व्यतीत करते होंगे? क्या तुम बता सकती हो वहाँ कौन लोग रहते हैं?'' नकुल ने आवेश में आकर पूछा।

लड़की ने मन खिन्नाते हुए कहा, ''ममता न फमता, वहाँ जो तुम्हें देखने को मिलेगा, वैसे माहौल में ममता कोसों दूर तक भी नहीं आ सकती असंख्य अनाथ बच्चों के साथ कई अनाथिन बहू–बेटियाँ, जिनके घर–संसार को समुद्र ने तबाह कर दिया था। वे सभी उन अनाथ बच्चों की माताएँ बनकर वहाँ आश्रित हैं। उन लोगों को कई तरह के मुसीबतों का सामना करना पड़ रहा है। उनकी पूछताछ करने के लिए किसके पास समय है? न सरकार किसी का पिता बन सकता है और न अपने बच्चों की मौत को भूलकर, अपने कर्म का महत्व देते हुए अनाथ बच्चों के लिए दाल–भात बनाकर परोसने वाली दुखियारी माँ पराये बच्चों पर अपना प्यार लूटा सकती है। फिर भी, इतने अनाथिनों के बीच रेणु नाम की एक अनाथिनी है–जो अत्यन्त दुखियारी लेकिन बहुत स्नेही है। बच्चों के प्रति उसकी हमदर्दी है, लेकिन न वह रोती है, न हँसती है और न ही किसी से बातचीत करती है। केवल एक जीवित लाश की भाँती चलप्रचल करती रहती है।

तूफान के बाद उसने बिल्कुल मौन धारण ही कर लिया है। गाँव के लोग उसे प्रेतात्मा के रूप में जानने लगे हैं। इन्सान सुखी होने पर खुश नहीं रह सकता है, बातचीत भी नहीं कर सकता है, लेकिन दुख के समय में एक जीवित इन्सान रोये बिना कैसे रहे सकता है। ऐसा भूतनी या प्रेतनी ही कर सकती है। इतने सारे अनाथ बच्चों के लिए खाना बनाकर उन्हें परोसती, अपनी गोद में सुलाती, उनके आँसू पोंछती, और उनका हमेशा ध्यान रखती। पराये बच्चों के लिए इतना कर पाना क्या कम बात है।''

उस किशोरी की बातें नकुल के निराश मन को अमृत की तरह प्रतीत हो रही थी। नकुल सोचने लगा, क्या यह वही रेणु है जिसके साथ उसकी शादी होने वाली थी? यदि वह विदेश नहीं गया होता तो शायद आज यही उसकी हमसफर होती।

रेणु के साथ इसी गोपनीय आकर्षण के कारण वह विदेश जाने के लिए बिल्कुल भी राजी नहीं था। इस गोपनीय प्रेम को नकुल के अलावा कोई नहीं जानता था। शायद रेणु भी इस बात से अनभिज्ञ थी। उसे विदेश में रहते हुए पाँच साल गुजर गये और रेणु....? तो क्या रेणु समुद्री तूफान के प्रकोप से बच गयी है? नकुल मन ही मन सोचने लगा। इसी जद्दोजेहद में नकुल टेढे–मेढे कच्चे रास्ते को तय करते हुए अहिराजवेदी रास्ते की ओर दौड़ पड़ा। अगर रेणु जीवित होगी तो आज भी उस

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS 2021-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ममतागृह की मिट्टी की दीवार अल्पना से सुसज्जित मिलेगी। यदि उतना भी मिल गया तो नकुल को अपना आधा संसार मिल जाएगा, उसके बाद एक-एक कर वह सभी से मिल पाएगा। उसे देखकर अगर रेणु नहीं भी हँसी तो कोई बात नहीं, उसे देखकर यदि वह रो भी पड़े तो नकुल का निराश मन जरूर प्रसन्न हो उठेगा।

ममतागृह की दीवार में न ही अल्पना अंकित थे और न ही छज्जे पर लौकी कदीमा की लता ही दिखाई पड़े। परित्यक्त गाय के गोहाल की तरह वह मिट्टी का घर बिल्कुल असहाय दिख रहा था। घर के सामने दरवाजे पर कई अर्धनग्न बच्चे, पुष्टिहीन बच्चे, आवार कुत्तों के बच्चे की तरह लाचारीवश घूमते हुए मिले। उनकी ओर निगाह रखे हुए एक अल्पवयस्क विधवा महिला अपने गाल में हाथ रखकर अतीत के ख्यालों में खोयी हुई दिखाई पड़ी, उसे देखते ही नकुल का अन्तर्मन विलाप करते हुए चीख पडा-ओह रेणु इस रूप में कैसे?

अचानक नकुल की दर्दभरी चीख सुनकर वह विधवा उसे अचम्भित होकर देखने लगी। इंदिरा आवास की तरह रेणु का सुकोमल चेहरा भी पत्थर की तरह नीरस दिखाई दे रहा था। उसे इस रूप में देखकर नकुल को विश्वास होने लगा कि वह रेणु को ही नहीं बल्कि एक मुर्दा लाश को देख रहा है।

अपने होशो हवास खोकर नकुल ने रोते हुए रेणु की कमजोर हथेलियों को कसकर पकड़ते हुए पूछा- ''रेणु....क्या तू इस ममता गृह की दीवार को दोबारा गाँव की मिट्टी से लीप पोतकर अल्पना अंकित नहीं कर सकती? सत्यनाशी तूफान के प्रकोप से तू आज हमारे बीच में है, क्या यह बड़ी बात नहीं है? जो हमारे बीच नहीं है, उनके लिए दुखी होना लाजमी है, लेकिन उन सभी के वियोग में अपना जीवन त्याग देना, यह तो संसार का नियम नहीं है।....''

इतने दिनों तक निरीह आँखों से प्रकृति की इस विकराल प्रकोप को चुपचाप देखने वाली रेणु के होठ कँपकँपाने लगे। बिल्कुल निर्दयी की तरह बिना किसी लाग-लगाव के निर्मम प्रहार करते हुए नकुल की आँखों में आँखे डालते हुए रेणु ने बेरोकटोक जवाब दिया। ''उजड़े हुए दीवार में अल्पना अंकित करूँगी, तुम जो भी कहोगे, वह मैं जरूर करूँगी, मुआवजे की पूरी रकम तुम्हारे हाथ में सौंप दूँगी, लेकिन क्या तुम मेरे बच्चों को खोजकर ला पाओगे? मैने अपने पति की लाश को अपनी इन्हीं आँखों से देखा है लेकिन दोनों बच्चों की कोई खबर अब तक नहीं मिल पायी हैं। मैं कैसे विश्वास कर लूँ कि वे दोनों अब जीवित नहीं हैं? उन्हें देखे बिना तो मैं बिल्कुल अंधी हो गयी हूँ-अब अल्पना अंकित करने के लिए मेरी आँखें ही कहाँ हैं?''

इतने दिनों के बाद उस नेत्रहीन आंखों से हँसुआ नदी के नमकीन ज्वार अपने सारे बँधनों को तोडकर नकुल की हथेलियों में बहने लगे थे। नकुल ने भी अपनी बेजुबान आँखे खोने से पहले रेणु के हाथों की पकड़ से खुद को अलग कर लिया।

संपर्क सूत्रः उडीसा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दोहे

–डॉ.सुरेश प्रकाश शुक्ल

विदा हुई बरसात अब, जगा गई है आस।
लदी बालियाँ धान की उगी हरेरी घास।।

ज्यों आई थी देर से, जाने में की देर।
पावस ने तरसा लिया, तब बरसे नभ ढेर।।

आम चुके, जामुन चुके, पर लें केला–सेब।
बहुतायत में मिल रहे, लें जैसी हो जेब।।

दसकंधर के अंत को, राघव थे आश्वस्त।
अच्छाई ने की विजय, हुई बुराई पस्त।।

जन–जन के उत्साह में, हुआ दशानन खाक।
सामूहिक सौगंध थी, जमे न खलु की धाक।।

चौदह वर्षों बाद जब घर लौटे श्रीराम।
लोग जुटे दीपक लिए, स्वागत में अविराम।।

तब से हम दीपावली, मना रहे हर साल।
धनिक, मजूर, किसान सब, दीप सजाएँ थाल।।

पर्व कहे छोडो लतें, नहीं जगाओ मूठ।
रह जाओगे अन्यथा, निपट अकेले ठूँठ।।

बहन भाय की डोर कस, बीती भाई दूज।
पुरखिन करवा चौथ व्रत, रखतीं पति को पूज।।

करवा टोंटी बीच से, कहती ठंढक मीत।
जैसी अति बरसात की वैसी होगी शीत।।

संपर्क सूत्रः 93, पवनपुरी, आलमबाग, लखनऊ–226005,
मोबईल नं.9452741071

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दोहे

–चन्द्रकान्त दीक्षित

अपनों को अपना कहे, अरु गैरों को गैर।
विरला ही कोई मिले, माँगे सब की खैर।।

तेरा मेरा छोड़ कर, करना हम की बात।
यक्ष प्रश्न सुलझे सभी, लगे सफलता हाथ।।

कैसे कैसे लोग हैं, कैसा उनका भेष।
फिर भी हम सब एक हैं, ये देते संदेश।।

मन को साधे सब सधे, कहते ग्यानी लोग।
बड़ा कठिन मन साधना, दिखे जु छप्पन भोग।।

मान बढाये आचरण, लिये सत्य का साथ।
जाने अनजाने सभी, धरें पीठ पर हाथ।।

मन की गति को देखिये, ज्ञानी भी पछताय।
तन बैठे पूजा करे मन भौंरा हो जाय।।

तन नश्वर है जानकर, करना ऐसे काज।
देह रहे चंदन सदा, महके सफल समाज।।

मुख से निकले शब्द भी, करते शर संधान।
कोमल हृदय कपोत सा, होता लहू लुहान।।

आदर श्रद्धा प्रेम की यदि करते हो बात।
जीवन भर तन मन तपे, तब मिलती सौगात।।

संपर्क सूत्रः अन्नपूर्णा रोड़ 167-168, प्रिकांको कॉलोनी, 103, सुख निवास अपार्टमेंट इन्दौर (म.प्र.) पिन.नं.452009.

महत्वपूर्ण सूचना–

1) पुष्पक साहित्यिकी के आजीवन सदस्य या वार्षिक सदस्य बनकर आप हमारे सहयोगी बने, आपका आर्थिक सहयोग हमें शक्ति प्रदान करेगा।

2) जिन सदस्यों की वार्षिक सदस्यता समाप्त हो चुकी है वे 300/रुपये का डी.डी अथवा/बैंक ट्रान्सफर ऑनलाईन से राशि भेजकर इसका नवीनीकरण करवा लें एवं इसकी सूचना दें। जिससे पुष्पक साहित्यिकी उन्हें नियमित रूप से प्राप्त होती रहे। बैंक विवरणः–PushpakSahityaki,Canara Bank A/C No : 6108201000091. IFSC Code : CNRB 0006108.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ग़ज़ल

–राकेश भ्रमर

सुबह शबनम में नहाने के लिए बैठी है
मान करती है, मनौवल के लिए बैठी है

धूप के ताप से घूँघट उतार बैठी है
तन पे मेहनत के पसीने को लिए बैठी है

डाह की आग में जलते हैं लोग, जलने दो
मौत हर एक को ठेंगे पे लिए बैठी है

वो बडा खुश था घटाओं से दोस्ती करके
आज बारिश यहाँ सैलाब लिए बैठी है

किस तरह लोग बहारों में झुलस जाते हैं
क्या हवा आग को दामन में लिए बैठी है?

माँ अगर रूठ भी जाये तो दुआ देती है
हर अंधेरे में उजाले को लिए बैठी है

संपर्क सूत्रः 28, तीसरा माला, गली नं.11, प्रताप नगर, मयूर विहार-1,
दिल्ली-110091 मो.नं. 9968020930

कविता

–डॉ.मनोहर अभय

वातानुकूलित शयनागार में
पुरानी पोथियाँ खँगालते
धर्माचार्य
मनमानी संहिताएँ लिख रहे हैं।
अंगुलिमाल
नरमुंडों की माला पहने
सिंहासन पर बैठा है।
निषिद्ध हैं उसके प्रसाद में प्रवचन
अँधेरी कंदराओं में उकेरे गए
भित्तिचित्रों के आगे धूप, दीप,
अगरबत्तियाँ जला कर
घंटियाँ जरूर बजतीं हैं सुबह-शाम
स्वागत कक्ष में
अभिनन्दन करता हुआ मिलेगा रोबो
विषाणुयुक्त हजारों रणआयुध हैं
उसके पेट में
बटन दबाते ही यह नारंगी सी धरती
आग का बबुला बन फट पड़ेगी
रिमोट
शक्ति-सामंतों की खुफिया जेब में है
तलाश करते रह जाओगे।
प्रियदर्शी अशोक
एक बार फिर कलिंग जीतने को आतुर है
शांति पाठ पढना हो तो
ज्येष्ठ नागरिकों के लिए आरक्षित
मेट्रो में बैठ कर आना
अब पैदल कोई नहीं चलता
सब हवा में उड़ते हैं।

संपर्क सूत्रः आर.एच.III,गोल्ड माइन 135-145, सेक्टर-21 नेसल, नवी मुम्बई-400206

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेम गीत गाओ

–दीपक दीक्षित

सपनों में तो आते हो हकीकत में कभी आओ
एक बार नहीं आ सकते तो फिर किश्तों में ही आ जाओ

दुनियाँ की निगाहों से कुछ दूर चले जाओ
न कोई तुम्हें देखे पर मुझ को नजर आओ

अरमान जो सोएं हैं उनको जगा जाओ
करना कुछ और नहीं तुम सिर्फ मुस्कुराओ

सुन्दर सा साज कोई हाथ में उठाओ
दिल की धड़कनों की धुन पर गुनगुनाओ

सांसों की सरगम पर राग तुम सुनाओ
यूँ ही कुछ बोल तुम बोले चले जाओ

नाचते गाते हुए मस्ती में थिरक जाओ
तुम छोड़ के सब बंधन बस मुझ में समा जाओ

मेरे साथ आओ प्रेम गीत गाओ
दुनियां को बेहतर तुम साथ में बनाओ

संपर्क सूत्रः मोबाईल नं.: 9589030075

आहिस्ता–आहिस्ता

–डॉ.विजय के.सिंह

समझ में तो आई दुनियाँ मगर
आहिस्ता–आहिस्ता
मोम से हम भी हुए पत्थर मगर
आहिस्ता–आहिस्ता
रोशनी तो थी मेरे घर में
मगर चरागों की न थी
जला रहे थे हम अपना जिगर
आहिस्ता–आहिस्ता
शौक तो था कुछ अलग सा
करने का, मालूम न था
सब हो जाएंगे अलग इस कदर
आहिस्ता–आहिस्ता
तेरे साथ पता भी न चला
महीनों और सालों का
तेरे बगैर पल भी गुजरता है मगर
आहिस्ता–आहिस्ता
निकले हैं हम अब सफर पर
ये इरादा करके कि
जीत जाएंगे खेल
जिंदगी का मगर
आहिस्ता आहिस्ता
मुझे भूल पाना इतना
आसाँ भी न होगा लोगों
याद आते रहेंगे हम मगर
आहिस्ता–आहिस्ता

संपर्क सूत्रः 1385/13,गोविन्द पुरी
कालका जी नई दिल्ली–
110019.मो.नं09971728044

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इतिहास के आइने में हमारी भाषा

-प्रो.फूलचंद मानव

पेड़ों के पत्तों
और धाराप्रवाह जल की तरंग
असर दिखाती है भाषा
अभिव्यक्ति के द्वारा
कहने और सुनने में संतुलन
सहज हो जाता है
कह पाता है अपना मन
दूसरों को दुःख-सुख की व्याथा-कथा
अपनी भाषा में
सितारों से किनारों तक
किनारों से कतारों तक
सीधी बात से इशारों तक
प्रभावित करते हैं
प्रकृति के सारे अवयव
ग्रंथों को सुवास, सुगंध
जब मन प्राण की भाषा हो जाती है
आदर्श-उपदेश या संदेश
हमें भाषा सिखाती है
तिरंगे की तरजीह से,
फूलों पत्तों की खुशबू का सफर
जब किताबें, पत्रिकाएं
या अखबार बताते हैं
माध्यम आकाशवाणी हो,
दूरदर्शन या सिनेमा
ज्ञान और सूचना के क्षेत्र में
भाषा की लहलहाती रवानी के
मानचित्र उभरते नजर आते हैं।
देश और दुनियां को जोड़ने का
एक पावन मंच है हमारी भाषा।
जो एक प्रति, वर्ग या
धर्म को ही नहीं
हम सब के सपनों की अभिलाषा है।
भूमंडलीकरण और
बाजारवाद के दौर में यही तो
संतवाणी की परिभाषा है।
इतिहास के आईने में।

संपर्कः साहित्य संगम,239, दशमेश एन्क्लेव.डाकौली जीरकपुर मोहाली पंजाब. मो.9316001549

कविता उभरती है अचानक/सिर्फ मेरे लिए

-डॉ.सुरेश ढींगडा

कविता उभरती है अचानक
हाथ में कलम काग़ज़ होना लाज़िमी
होता है तब,
हो जाता है व्यवधान
कविता खो जाती है कहीं आकाश में
हवा में
बादलों में
जंगल में उगे पेडों में
ज़हन की गहराइयों में,

शायद कभी नहीं निकलेगी
वह कविता दोबारा
लेगी शायद रूप नया
नए शब्द नई रंगत
नए बिम्ब नई संगत,
प्रतीक्षा उस क्षण की
जब जन्मेगी फिर से
कविता
सिर्फ मेरे लिए
सिर्फ मेरे लिए.

संपर्क :- IXIX कादम्बरी, नई दिल्ली,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोई यहाँ नहीं रह पाया

–भानुदत्त त्रिपाठी मधुरेश

जब–जब याद तुम्हारी आयी,
छलक उठा आँखों में पानी।
जाग उठी वेदना विरह की
लगी सुनाने व्यथा–कहानी।।
प्रियतम तुमने मेरे मन को
सुधियों का संसार दिया है।
मेरी उरवीणा के कोमल
तारों को झंकार दिया है।।
क्या जाने क्यों तुमने मुझसे
पहले ही जाने की ठानी।
जब–जब याद तुम्हारी आयी
छलक उठा आँखों में पानी।।
कैसे मन की बात कहूँ मैं
मन ही चुप रहने को कहता।
दुःख से ही संसार बना है
सुख केवल कुछ पल को रहता।।
इस जग में आने–जाने की
परंपरा है बहुत पुरानी।
जब–जब याद तुम्हारी आयी
छलक उठा आँखों में पानी।।
नित्य सत्य को जान गया जो
उसने ही जीवन फल–पाया।
ऐसा कौन जिसे माया ने
नहीं कभी भी नाच नचाया।।
चलती नहीं काल के सम्मुख
यहाँ किसी की भी मनमानी
जब–जब याद तुम्हारी आयी
छलक उठा आँखों में पानी।।
तन नश्वर है, जीव अमर है,
यह रहस्य जग जान रहा है।
किन्तु घोर अभियान मोह के
नव वितान नित तान रहा है।।
कोई यहाँ नहीं रह पाया
चाहे राजा हो या रानी।
जब–जब याद तुम्हारी आयी
छलक उठा आँखों में पानी।।

संपर्क सूत्रः साहित्य मण्डप छंद लोक कालोनी, शाहजादपुर, अकबरपुर
अम्बेदकर नगर,(उ.प्र.) 224122, मोबाईल. नं.7668525342

नहीं रहने देता आदमी

–देवेन्द्र कुमार मिश्रा

हत्याओं का जश्न मनाते
किसने, किस धर्म के कितने मारे
यदि यही विचार–विमर्श है
तो ये अवनति है या उत्कर्ष है
हम किस समय में
जी रहे हैं
इंसानियत के लिए शर्मनाक दौर है।
शहर बदल गये जंगलों में
जहाँ छिपने के लिए भी नहीं ठौर है
लोग नाम से धर्म पहचान लेते हैं
और बिना कसूर के मौत की
सजा देते हैं
दंगाई बनकर भीड़ में छिप जाते हैं
और सामूहिक हत्या की योजना
बनाते हैं
शायद मनुष्य की सबसे बड़ी
भूल है धर्म
जो आदमी को
नहीं रहने देता आदमी।

संपर्क सूत्रः पाटनी कालोनी, भरत नगर, चन्दनगाँव छिन्दवाड़ा,
मध्य प्रदेश 480001. मों.9425405022

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राष्ट्रीय एकता के पहलू

–डॉ.रवीन्द्र कुमार

भारत की राष्ट्रीय एकता न केवल महत्वपूर्ण है, अपितु आवश्यक भी है। राष्ट्रीय एकता ही हिन्दुस्तान की समृद्धि का आधार हो सकती है। दूसरे शब्दों में, भारत के समृद्धि का मार्ग, इसकी राष्ट्रीय एकता की गलियों से ही गुजरता है। हिन्दुस्तान में संसाधन है, स्रोत है। देश में लगभग तेरह लाख वर्ग किलो मीटर खेती योग्य भूमि है। जल की विश्व स्तर पर गम्भीर रूप में उभरती समस्या के बाद भी भारत में अच्छे भूतल नीर स्रोत है। ऊर्जा के क्षेत्र में पर्याप्त संपन्नता के साथ ही उपलब्ध कोयले, थोरियम और लौह के स्रोत भारत की क्षमता के स्वयं परिचायक हैं। इन स्रोतों के बल पर हिन्दुस्तान में विकास की अपार संभावनाएँ मौजूद है।

भारत में असीमित श्रम शक्ति भी मौजूद है। श्रम शक्ति समाधान के लिए भारत विश्वभर में अग्रणीय है। इस हेतु हिन्दुस्तान संसार का नेतृत्वकर्त्ता देश है। इसलिए भारत विश्व में मूलभूत परिवर्तन लाने की पूरी-पूरी क्षमता रखता है। जनसंख्या के एक गंभीर राष्ट्रीय समस्या बन जाने पर भी भारत के लगभग एक अरब पैंतीस करोड़ परिश्रमी लोग संसारभर को बदल देने में सक्षम हैं। यह वास्तविकता किसी से भी छिपी हुई नहीं हैं।

भारतीय बुद्धिमान हैं, सकारात्मकता भारतीयों की बुद्धि से अभिन्नतः जुड़ी हुई है। शताब्दियों से हिन्दुस्तान आध्यात्म, दर्शन और विज्ञान सहित जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में विश्वगुरु के रूप में स्थापित रहा है। काशी, नालन्दा, विक्रमशिला, ओदन्तपुरी, सोम पुरा, जगदल, वल्लभी, तक्षशिला, उदयगिरि, आदि प्राचीनकालीन विश्वविद्यालय-उच्च शिक्षा केन्द्र, जो जापान कोरिया व चीन सहित सम्पूर्ण दक्षिण-पूर्व एशिया के लोगों के अध्ययन एवं शोध-अन्वेषण के केन्द्र रहे, भारत की ज्ञान व खोज के क्षेत्रों में विश्वगुरु के रूप में रही वास्तविकता को प्रकट करते हैं।

वर्तमान में, विभिन्न विषयों में पचास लाख से भी अधिक स्नातक तथा लगभग दस लाख परास्नातक भारत में हैं। डेढ लाख से भी अधिक मेडिकल स्नातक, परास्नातक एवं अध्ययन/शोधकर्त्ता छात्र/छात्राएँ हैं। शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दुस्तान की स्थिति को अनेक त्रुटियों/कठिनाइयों के चलते भी, प्रकट करने के लिए ये आंकड़े पर्याप्त हैं। यही नहीं अनुमानतः पाँच लाख आचार्य, उपाचार्य आदि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हैं। इनमें विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों-विद्यालयों में कार्यरत आचार्य शिक्षक सम्मिलित हैं।

भारत की सभ्यता और संस्कृति, दोनों ही सम्पूर्ण विश्व के लिए पिछले हजारों वर्षों से आदर्शमयी और प्रेरणामयी रही हैं। 'जीओ और जीने दो' के मानवाह्वान के साथ ही सर्व-समन्वय का संदेश देती रही हैं। बिना किसी पूर्वाग्रह के सहिष्णु तथा सहनशील भाव से सबको, समान रूप से उनके कल्याण के दृष्टिकोण से, स्वीकार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करती रही है। विशेष रूप से भारतीय संस्कृति से जिस किसी ने भी एकाकार करने का निश्चय किया, इसकी मूल भावना के अनुसार भारतीय होने का हृदय से प्रयास किया, उसे इसने सदा-सदा के लिए अपना लिया।

इसी प्रकार की अन्य बातें भी भारत के सम्बन्ध में कही जा सकती है। इन सबके बाद भी हिन्दुस्तान की राष्ट्रीय एकता समय-समय पर खतरे में पड़ी हैं, कभी-कभी तो बहुत ही गम्भीर खतरे में। एकबद्ध होकर, बाह्य-आन्तरिक शत्रुओं का मुकाबला न कर पाने के कारण, विशेषकर बाह्य आक्रन्ताओं आतताइयों का एकजुट होकर सामना करने की क्षमता के अभाव में, राष्ट्रीय एकता पर प्रश्नचिन्ह ही नहीं लगे, अपितु वह खण्डित भी हुई। हिन्दुस्तानियों ने अपनी एकता को खोया, परिणामस्वरूप उन्हें पराधीनताएँ झेलनी पड़ी। यह भारत के समक्ष एक गम्भीर और बड़ी चुनौती पूर्ण समस्या रही है। राष्ट्रीय एकता का दुर्बल होना, परिणामस्वरूप देश के वांछित प्रगति और समृद्धि का बुरी तरह प्रभावित होना, वास्तव में भारत की विडम्बना ही कही जा सकती है।

भारत की एकता, एकता के बल पर अखण्डता और अखण्डता से समृद्धि स्वयं हिन्दुस्तान के लिए अति महत्वपूर्ण है। यह भारतीयों के सुनहरे वर्तमान एवं भविष्य, दोनों के लिए परमावश्यक है। यह वास्तविकता है। लेकिन, इसी के साथ यह भी एक सत्यता है कि भारत की एकता, अखण्डता और समृद्धि अंततः विश्व-कल्याण को समर्पित है। भारत का विकास, मानवता की प्रगति का द्योतक है। हजारों वर्षों का ज्ञात भारतीय इतिहास हिन्दुस्तान की अद्वितीय उन्नति का खुलासा करता है। इतिहास के पृष्ठ जीवन के समस्त क्षेत्रों-कला, चिकित्सा, विज्ञान, खगोलशास्त्र, अंतरिक्षविज्ञान, गणित आदि में हिन्दुस्तान के कीर्तिमानों को स्पष्ट रूप में प्रकट करते हैं। ये पृष्ठ साहित्य में भारत की उपलब्धियों एवं उच्च सांस्कृतिक मूल्यों, जो समस्त धरावासियों के कल्याण, प्रगति तथा समृद्धि को समर्पित रहें है, एवं सबको एकता के सूत्र में पिरोकर साथ-साथ आगे बढने का आह्वान करते हैं, की सत्यता को भी प्रकट करते हैं। महर्षि सुश्रुत, चरक, पतञ्जलि से लेकर पाणिनि, आर्यभट्ट, भास्कराचार्य आदि, और इनके बाद भी अनेक महान भारतीयों के ज्ञान, अन्वेषणों और कार्यों से विश्वभर को हुए अभूतपूर्व लाभ, दूसरे शब्दों में हिन्दुस्तानियों की अद्वितीय उपलब्धियों से हुए विश्व-कल्याण को भी इतिहास के पृष्ठ स्पष्टतः दर्शाते हैं।

इतिहास के पृष्ठ सार्वजनिक हैं, सभी आम और खास के सामने है। स्वयं यह साक्षी देने के लिए कि जो कुछ कहा है उसकी वास्तविकता को उनसे ही जान लें। मेरे जैसे किसी साधारणजन द्वारा इस सम्बन्ध में अधिक कुछ कहा जाना, वह भी स्वयं एक भारतीय के रूप मे, कदाचित् उचित नहीं होगा। कहना है तो केवल इतना ही कि भारत की एकता सुदृढता एवं समृद्धि मात्र भारतीयों के उत्थान, प्रगति या सम्पन्नता तक सीमित नहीं हैं। इसका सरोकार सम्पूर्ण धरावासियों से है, यह सार्वभौमिकता को समर्पित है। इसकी परिधि में सम्पूर्ण मानवता है। इसीलिए भारत की राष्ट्रीय एकता आवश्यक है एकता द्वारा समृद्धि परमावश्यक है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भारत की एकता, और एकता से समृद्धि-सम्बन्धी दृष्टिकोण बृहद्-व्यापक है, और इस वास्तविकता को बारम्बार दोहराया जा सकता है। सिद्धांत और व्यवहार, दोनों में ही यह दृष्टिकोण राष्ट्रीय ही नहीं, अपितु वैश्विक महत्व का है। राष्ट्रवादी प्रतीत होने पर भी इसके मूल में रहने वाली सत्यता का सरोकार सम्पूर्ण मानवता से है अतः जब भारत की राष्ट्रीय एकता और इसके माध्यम से देश की समृद्धि की बात की जाए, तो उसे संकीर्ण दृष्टि से नहीं देखना चाहिए। उसके प्रति पूर्वाग्रह नहीं रखना चाहिए। स्वयं भारत के प्राचीनकालिक और सत्यमय सन्देश 'वसुधैव कुटुम्बकम' के परिप्रेक्ष्य में ही इसे देखना और समझना चाहिए।

भारत की राष्ट्रीय एकता के चार प्रमुख सूत्र अथवा पहलू हैं। इनके बल पर ही देश की एकता, अखण्डता, सुरक्षा और समृद्धि को सुनिश्चित किया जा सकता है, दीर्घकालिक बनाया जा सकता है। ये चार सूत्र अथवा पहलू हैं:-

1) वर्ग-जातिहीन समाज, 2) साम्प्रदायिक सौहार्द्र, 3) महिला सशक्तिकरण, एवं 4) राष्ट्रीय राजनीतिक सोच। वर्ग और जाति ने इस देश की एकता और समृद्धि को जो हानि पहुँचाई है, मानव-मानव में भेदभाव करते हुए मनुष्य के समानता के स्वाभाविक अधिकार का उल्लंघन कर समाज में जो विषमता उत्पन्न की है, उससे हम सभी भली-भाँति परिचित हैं।

अतः भारत की राष्ट्रीय एकता और समृद्धि के लिए वर्ग, जाति-विहीन समाज की स्थापना पहली आवश्यकता है। देश में विभिन्न मतों, विश्वासों-सम्प्रदायों के लोग हैं। देश के सनातन मूल्यों और कल्याणकारी विभिन्नताओं में एकता का निर्माण करने वाली तथा विकासोन्मुखी संस्कृति का सम्मान करते हुए- इसके 'जीओ और जीने दो' जैसे मूल सन्देश को व्यवहारों का आधार बनाते हुए सभी के मध्य सौहार्द्र की स्थापना करना दूसरी आवश्यकता है। तीसरी आवश्यकता निस्सन्देह महिला समानता और सशक्तिकरण की है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी नीतियों के निर्माण और क्रियान्वयन में उनकी भूमिका की सुनिश्चितता, तथा शासन-संचालन में सहभागिता महिला-सशक्तिकरण का मार्ग है। अतः महिला सशक्तिकरण को हल्के में न लेते हुए, इसे सुनिश्चित करने से ही राष्ट्रीय एकता सुदृढ हो सकती है, देश समृद्धि प्राप्त कर सकता है।

चौथी बात एक परिपक्व राष्ट्रीय राजनीतिक सोच वह है, जो राष्ट्र की एकता के निर्माण में-देश की अखण्डता, सम्पन्नता और सुदृढता में न केवल अतिमहत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है अपितु इसे सुनिश्चित भी करती है। भारत के लिए परिपक्व राष्ट्रीय राजनीतिक सोच ही उपरोक्त चीजें जाति-वर्ग विहीन समाज निर्माण, साम्प्रदायिक सौहार्द की स्थापना व महिला-सशक्तिकरण का मार्ग भी प्रशस्त कर सकती है। इन चारों सूत्रों के बल पर राष्ट्रीय एकता का निर्माण आज की बहुत बडी आवश्यकता है, यही हिन्दुस्तान को विश्वगुरू के रूप में स्थापित करने का मार्ग है।

संपर्क सूत्रः मेरठ विश्वविद्यालय मेरठ (उत्तर प्रदेश)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS MoE 2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'महाप्राण 'निराला' का परिचयात्मक साहित्य विमर्श'

-सीताराम पाण्डेय

शोषण-दमन के कारा में कैद, भारत की आत्मा को निर्मुक्त करनेवाले, नगर-नगर, डगर-डगर, टिड्डियों की टोली की तरह भटकते भिक्षुकों का शब्द-चित्र खींचने वाले, संवेदना के सशक्त कवि निराला ने अपनी सहस्र किरण-धाराओं से पृथ्वी के पंकिल कद्रमाक्त जीवन को बेवजह चमत्कृत नहीं किया बल्कि जड़ मानवता के मृत प्राणों में अभिनव संजीवन-रस का संचार भी किया।

अपनी कविता के संबंध में निराला ने स्वयं लिखा है:-

उपवन में शतरी शब्द यों जाए,
जैसे फूलों को भार दिये जा रहा हूँ मैं
दुनियाँ के शायरों की किताबों में जो आई,
उस युवती को सिंगार दिये जा रहा हूँ मैं

छायावाद की पगडंडी पर जाती हुई कविता-कामिनी को फूलों से सुसज्जित देख प्रगतिवादी कवि उनकी भाव-भंगिमा का अवलोकन कर सहम गये तथा उसके नुपूर की ध्वनि को बेवक्त ही शहनाई समझ, उनकी टूटी वीणा के अटपटे गीत को सुन दोनों कानबन्द कर लिए। छायावाद के वर्ण्य विषय की संकीर्णता, भावों की अत्यन्त सूक्ष्मता, एवं जीवन से असंबद्धता देख प्रगतिवादी कवियों ने कल्पना-कानन में विचरण करने वाले पलायनवादी कवियों की घोर भर्त्सना की तथा कठोर, कुरूप, घृणित एवं उपेक्षित प्राणियों को गले लगाया।

छायावादी प्रवर्त्तकों में सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' प्रमुख कवि के रूप में प्रतिस्थापित थे। उनका व्यक्तित्व विद्रोह तत्वों से निर्मित हुआ है। वे एक ओर जहाँ अनेक क्रांतिकारी परिवर्तनों के स्रष्टा हुए वहीं दूसरी ओर परम्परावादी हिन्दी काव्य प्रेमियों द्वारा एक लम्बे अरसे तक उपेक्षा के दंश झेलते रहे। निराला की प्रत्येक रचना परिवर्त्तन का आह्वान है। उनके व्यक्तित्व में यह कहावत सटीक बैठती है ''लीक छोड़कर तीन चले, शेर, शायर, सपूत।''

सन् 1886 ई. में परमहंस देव श्री रामकृष्ण महासमाधि में समाविष्ट हो गये थे और उनके समाधिस्थ होने के ठीक दस वर्षों के पश्चात् उन्हीं के बंगाल में महिषादल राज्य के अन्तर्गत मोदिनीपुर जिला में परमहंस देव के 'कमारपुकुर' गाँव (जो वर्द्धमान से 37-38 कि.मी. की दूरी पर अवस्थित है) में श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने सम्वत् 1853 अर्थात् दो फरवरी सन् 1896 ई. तदनुसार माघ शुक्ल बसन्त पंचमी को अपने जीवन और जगत के प्रथम प्रकाश का साक्षात्कार किया और अजीवन उन्हीं के अलौकिक अनुभव से प्रभावित रहे तथा कभी अन्तर्दशा और कभी अर्द्धवाह्य स्थिति में ही जीवन यापन करते रहे। वे दुनियादारी से बिल्कुल अलग रहे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अर्थात् दुनियावी नहीं बन सके। निराला का पैतृक घर उत्तरप्रदेश के उन्नाव जिला अन्तर्गत 'गढाकोला' गाँव में था। जो प्रयाग (इलाहबाद) के इर्द-गिर्द में अवस्थित है। उन्होंने 'समन्वय' और 'मतवाला' जैसे स्तरीय पत्रों का संपादन भी किया और मतवाला के तुक पर उन्होंने अपना उपनाम निराला रख लिया।

'निराला' के पिता पं रामसहाय त्रिपाठी बंगाल में महिषादल राज्य के एक सामान्य कर्मचारी थे। अतः वहीं 'निराला' की प्रारंभिक शिक्षा का श्रीगणेश हुआ। दुर्भाग्यवश मैट्रिकुलेशन में पहुँचते ही उनकी विद्यालयीन शिक्षा का क्रम टूट गया और संघर्षों के बीच से उनका जीवन गुजरने लगा। हालाँकि उन्हीं संघर्षों के मध्य उन्होंने साहित्य-सर्जन का काम प्रारंभ कर दिया।

सन् 1902 ई. में जब विश्वन्द्य स्वामी विवेकानन्द कुण्डलिनी शक्ति जागृत करते हुए निर्विकल्प समाधि में सदा के लिए नींद में सो गये, तब 'निराला' सिर्फ सात वर्ष के थे। लेकिन जैसे 'भक्त सूरदास' भगवान श्रीकृष्ण को अपना सखा समझते थे उसी प्रकार निराला ने भी जीवनभर स्वामी विवेकानन्द को अपना गुरू भाई ही मानते रहे। 'निराला' के दार्शनिक एवं आध्यात्मिक विचारों पर दूसरे से कहीं अधिक स्वामी विवेकानन्द के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की सीधी और गहरी छाप परिदृश्य है।

साम्प्रदायिक दृष्टि न निराला की थी और न हीं स्वामी जी की ही। स्वामी जी निराला को किसी गली में पड़ा हुआ पत्थर नहीं मानते थे। विकास की शिक्षाएँ भले ही दोनों की भिन्न थी। किन्तु वीर दोनों एक समान थे। धीर, गंभीर और मुक्त पुरुष भी। दोनों की दृष्टि जड़ता को हलचल में डाल देनेवाली थी। निराला के मन के सागर सी विशालता और गहराई, आकाश-सी स्थिरता और शांति पद-पद पर स्वामी विवेकान्द की याद दिलाती है तथा उनका वाह्य तो उदात्त व्यक्त्वि का अपराजेय, अनुलंघ्य स्वरूप प्रस्तुत करता ही है।

भले ही उनके द्वारा विद्यालयीन एवं महाविद्यालयीन प्रमाण-पत्र प्राप्त करने की औपचारिकताएँ पूरी नहीं की गई हो, किन्तु अपनी प्रखर-प्रतिभा एवं स्वाध्याय के बल पर हिन्दी साहित्याकाश में ज्योतिर्मय नक्षत्र की तरह प्रज्ज्वलित होते रहे। जन-जीवनोपयोगी, सार्थक एवं शाश्वत् मूल्यों पर आधारित साहित्य की सर्जना कर, यह तो साबित उन्होंने कर ही दिया कि स्वाध्याय एवं श्रम के बदौलत व्यक्ति शैक्षिक प्रमाण-पत्र प्राप्त किये बिना भी जीवन के सभी क्षेत्रों में न केवल विशिष्ठ ज्ञान प्राप्त कर बड़ा विद्वान बन सकता है बल्कि विद्यालीय, महाविद्यालीय डिग्रीधारियों की अपेक्षा राजनैतिक, सामाजिक, साहित्यिक आदि सभी क्षेत्रों में अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

'निराला' का व्यक्तित्व अत्यंत भव्य और आकर्षक था। किशोरावस्था में वे साहित्य की अपेक्षा व्यायाम से अधिक अनुराग रखते थे। उनका पारिवारिक जीवन अतिशय संघर्षमय और दुखपूर्ण रहा। कबीर की तरह उन्होंने भी आजीवन विरोधों का गरल पान किया। उनका सम्पूर्ण जीवन संघर्ष की एक अन्तहीन कहानी है। शायद

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इसी कारण कबीर के समान ही उनमें अखण्ड आत्मविश्वास, रूढियों के प्रति आक्रामक भाव, अक्खड़पन और फक्खड़पन पाया जाता है।

सन् 1911 ई. में 'निराला' का विवाह सुकन्या सुन्दरी एवं विदुषी मनोहरा देवी के साथ सम्पन्न हुआ। सन् 1917 ई. तक वे एक पुत्र 'रामकृष्ण' और एक पुत्री 'सरोज' के पिता बन चुके थे। मनोहरा देवी के साथ उनकी प्रसन्नता पराकाष्ठा पर पहुँच चुकी थी। उनका दाम्पत्य-जीवन अत्यधिक सरस एवं मधुर था। इकलौती पुत्री के प्रति भी उनका गहरा लगाव था। वे उसे अपने प्राण से भी अधिक प्यार करते थे।

निराला के पिता पं.रामसहाय त्रिपाठी संस्कृत के जानकार थे। अतः निराला ने घर पर ही अपने पिता से पढकर संस्कृत में सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर लिया। निराला का बंगला भाषा पर भी समान अधिकार था। संगीत के प्रति भी उनका अगाध प्रेम था। वे यदा-कदा सितार अथवा हारमोनियम पर गुणगुनाकर आनन्द की सरिता में अवगाहन करते। वे स्वतंत्र, स्वाभिमानी और उन्मुक्त भाव के कवि थे। ''बज्रादपि कठोराणि मृदुनि कुसुमादपि'' उनके स्वभाव के लिए अक्षरशः लागू होते हैं।

निराला का ऊँचा और पूरा विशाल पुष्ट तन, तेजस्वी नेत्र, उन्नत ललाट, आकर्षक केश राशि, घन गम्भीर वाणी और ओजस्विनी मुद्रा एक बार जो देख ले तो उसके मन-मस्तिष्क पर सदा के लिए प्रभाव डालने वाली थी। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में विवेकानन्द द्वारा अविष्कृत-परिष्कृत ऐसे कितने ही विषय निराला को उत्तराधिकार में मिले, जिसके कारण वे हिन्दी में इस बंग-तरंगित सांस्कृतिक नव-जागरण के अप्रतिम अग्रदूत थे। पूर्व-पश्चिम की अन्तरावलम्बित सभ्यताओं के भीतर से जो एक नई जातीय संस्कृति बंगाल में जन्म ले रही थी, 'निराला' समस्त 'भारत-भारती' में उसके सर्वोत्तम कवि सिद्ध हुए। निराला ने स्वयं कहा है- ''बंगाल में रहकर परमहंस श्री रामकृष्णदेव तथा स्वामी विवेकानन्द जी के साहित्य से मैं परिचय प्राप्त कर चुका था।''

स्वामी विवेकानन्द ने भारत के आत्म-विस्मृत जनता में उच्च नैतिकता जगाने का प्रयास किया था। उसे औपनिवेशक दासता के उत्पीड़न से उन्मुक्त करने के सपने भी देखे थे। 'निराला' पर उनके मानव-सेवा और सर्वसामान्य को सुख-स्वातंत्र्य प्रदान करने के विश्वासी संदेशों का ही सर्वोपरि प्रभाव रहा। सन् 1918 में मात्र 18 वर्ष की छोटी उम्र में आधुनिक रत्नावली-सी पत्नी मनोहरा देवी के आकस्मिक निधन से 'निराला' बडे शोक-संतप्त हुए और फिर तो लगातार एक-एक कर अनेक स्वजनों का विछोह की दारूण-वेदना को झेलते रहे। उस समय निराला केवल 22 वर्ष के ही थे। स्व. मनोहरा देवी के प्रति उनकी पंक्तियाँ निम्नलिखित हैः-

एक बार भी यदि अजान के, अन्तर से उठ आ जाती तुम।
एक बार भी प्राणों के तम छाया में आ कह जाती तुम।।

निराला की चारित्रिक दृढता एवं निर्लोप साधना की यह प्रत्यभिज्ञा है कि ऐसी कठिन परिस्थिति में भी ज्ञान की अखण्ड ज्योति जलाए रहे। एक ओर संसार का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Bhagat Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भयानक भँवर, आर्थिक विपन्नता मेघमाला की तरह हर घड़ी माथे पर मंडराती हुई दूसरी ओर अपने दोनों बच्चों के अलावा चार बच्चे चचेरे भाई बदलू प्रसाद जी के, के जिन छहों के पालन-पोषण का भार उस अलमस्त कवि निराला पर आ पडी। जो कभी गृहस्थी के गिरफ्त न आया, छँटा-छँटा फिरा, छक्का पंजा करना न जाना।

साधना की कोई कड़ी निराला की फिर भी नहीं टूटी और जैसे-तैसे पारिवारिक नाव को खेते हुए आगे बढते गये। अपने बच्चों को नानी की गोद में डालकर चारों भतीजों को महिषा दल, बंगाल ले गये और 1919 ई. में वहाँ राज्याश्रित होकर नौकरी करने लगे। लगभग दो साल व्यतीत होने के पश्चत् सन् 1921 ई. में एक मामूली-सी विवाद में नौकरी से इस्तीफा दे दिया और चुपचाप अपने गाँव लौट आये। निराला ने स्वयं कहा- ''मेरा दृढ विश्वास है कि मुझ पर ईश्वर की कृपा है। परन्तु उपस्थित स्थिति में मेरी कामोन्नति पर बाधा डाल रही है। मेरे सिर पर मातृ-पितृहीन छः नाबालिग भतीजे आदि का पालन-भार अर्पित है। इसलिए मैंने अभी नौकरी करना स्वीकार किया है। बच्चों को बालिग करके अपने लक्ष्य की ओर बढूँगा।''

इन पर भारतीय-वेदान्त-दर्शन, रामकृष्ण परमहंस स्वामी तथा महाकवि रविन्द्रनाथ ठाकुर के आध्यात्मिक विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा है। सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला को क्रांति और प्रयोग का कवि स्वीकारा गया है। दर्शन और सौंदर्य, विद्रोह और उत्पीड़न, प्रगति और प्रयोग को एक साथ उनकी लेखनी ने रूपायित किया है। हिन्दी कविता की अभिव्यंजन-सामर्थ्य को अपनी काव्य-मेधा के बल पर निराला ने मूर्तिमान किया। निराला ने कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, रेखाचित्र, सम्पादकीय, आलोचना आदि सभी विधाओं का स्पर्श किया, लेकिन हिन्दी कविता को उन्होंने प्रसाधन और भंगिमाशक्ति तथा संप्रेषण की दृष्टि से भव्य आलोक प्रदान किया। उनकी निम्नलिखित रचनाएँ हैं-

काव्य-(क) प्रबंध- तुलसीदास **(ख) मुक्तक -** अधिवास, अनामिका, परिमल, गीतिका, कुकुरमुत्ता, अणिमा, अपरा, नये पत्ते, बेला, अर्चना, आराधना, गीताकुँज, कविश्री, सांध्य काकली, राग-विराग, **(ग) उपन्यास** -अप्सरा, निरुपमा, प्रभावती, कुल्लीभाट, चमेली (अपूर्ण) विल्लेसुर-बंकरिहा, चोटी की पकड, काले कारनामें। **(घ) कहानी संग्रह -** लिलि, सुकुल की बीबी, चतुरी चमार, देवी, सखी। **(ङ) आलोचना:-** रवीन्द्र-कविता-कानन, प्रबन्ध पद्य, प्रबंध प्रतिभा, पंत और पल्लव, चाबुक, चयन, रस-अलंकार। **(च) अनुवाद -** श्री रामकृष्ण वचनामृत (तीन भाग), भारत में विवेकानन्द कवितावली (विवेकानन्द की कविताएँ), मानस विनय खण्ड, संक्षिप्त महाभारत, वात्स्यायन कृत कामसूत्र, बंकिम के उपन्यासों का अनुवाद आनन्द मठ, कपाल कुण्डला, चन्द्रशेखर, रजनी, कृष्णकान्त, कानविंल, युगांगुलीय, राजरानी, देवी चौधरानी, राजसिंह, दुर्गेशनंदिनी, विषवृक्ष। **(छ) जीवनी-** भक्त ध्रुव, महाराणा प्रताप, भक्त प्रहलाद, भीष्म।

निराला की रचनाएँ मुख्यतः चार प्रकार की है -(1) दार्शनिकता-प्रधान (2)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रकृति-संबंधी (3) प्रेम-रस और (4) प्रगतिवादी। निराला की दार्शनिक अथवा आध्यात्मिक कविताओं पर विवेकानन्द का काफी प्रभाव है। यहाँ उनमें सैद्धांतिक रहस्यवाद दिखायी देता है। छायावादी कवियों में प्रसाद-पंत-महादेवी ने यहाँ भावनात्मक प्रेम-परक रहस्यवाद की अभिव्यंजना की है, एकमात्र निराला ही सैद्धांतिक रहस्यवाद का पल्ला पकड़कर चले हैं। 'तुम और मैं' आदि कविताएँ उदहारण स्वरूप है। शुष्क बौद्धिकता की प्रधानता के कारण निराला की ऐसी कविताएँ अत्यंत दुरूह है।

'निराला' आधुनिक हिन्दी कविता के सर्वोच्च शिखर हैं। आचार्य नलिन विलोचन शर्मा ने एक स्थान पर लिखा है कि ''हिन्दी इसलिए भी राष्ट्रभाषा है कि उसमें निराला जैसे कवि हैं।'' निराला की कविता में जीवन-सत्य और काव्य सत्य का तथ्य और शिल्प की दूरी मिट गयी है। निराला ने सिद्धांत और उपदेश को कविता में कमजोरी ही माना है। उनकी कविता उपदेश नहीं, दृष्टि देती है तथा समझदारी बढाती है।

प्रिये इकलौती पुत्री 'सरोज' के असामयिक निधनोपरान्त निराला का हृदय अत्यधिक आहत हुआ और उन्होंने 'सरोज स्मृति' नामक रचना का लेखन किया। 'सरोज स्मृति' निराला जी के एक मात्र पुत्री के असामयिक निधन पर एक पिता की वेदना, क्षोभ, सहायता एवं अवसाद की अत्यंत मार्मिक अभिव्यक्ति है, जो मानवता की आधारशिला कही जा सकती है:-

मुझ भाग्य की तू सम्बल, युग वर्ष बाद जब हुई विकल।
दुख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूँ आज जो कही नहीं।।
इस पथ पर मेरा कार्य सफल, हो भ्रष्ट-शीत के-से शतदल।
कन्ये गत कर्मों का अर्पण, कर करता मैं तेरा तर्पण।।

'निराला' ने जहाँ एक ओर श्रृंगारिक और आध्यात्मिक रचनाएँ की, वही दूसरी ओर उन्होंने पौरुष और राष्ट्र-प्रेम से ओत-प्रोत कविताएँ भी लिखी है। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से सामाजिक विषमताओं पर करारा व्यंग्य किया है। वे ओज और पौरुष के कवि थे। रुपगर्विता शूर्पणखा का सौन्दर्य वर्णन जिस सहज संवेदनशीलता के साथ किया है, इसे देखकर बडे-बडे तपस्वियों का भी धैर्य छूट जाता है-

देख यह कपोत-कंठ बाहुबली कर-सरोज,
उन्नत उरोज पीन, क्षीण कटि।
नितम्बभार, चरण सुकुमार गतिमंद-मंद,
छूट जाता धैर्य ऋषि-मुनियों का।।
देवों और देवियों की तो बात ही निराली है।

मैथिली शरण गुप्त ने भी सुन्दरी शूर्पणखा का वर्णन करते हुए लिखा है:-

कटि के नीचे चिकुर-जाल में उलझ रहा था बायाँ हाथ,
खेल रहा हो ज्यों लहरों में लोल कमल भौरों के साथ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दायें हाथ लिए थी सुरभित, चित्र-विचित्र सुमन माला।
टाँग धनुष की कल्पलता पर मानसिज ने झूला डाला।

दोनों के वर्णन में उपमान और उपमेय का सुन्दर-साम्यसुषमा समाविष्ट है।

सन् 1916 ई. में 'जूही की कली' खिल चुकी थी। भाषा और भावों की कितनी मुश्किल मंजिलें पार कर चुकी थी। उस प्रेम-पुस्तक की सरसता किसी अनुपम सौन्दर्य शालिनी रमणी से कम नहीं है। 'जूही की कली' में यौवन का उददाम-प्रवाह तथा उष्मा मुखरित है। कवि ने प्रकृति की पृष्ठभूमि पर नारी-सौन्दर्य का सांगोपांग वर्णन किया है। 'निराला' अलौकिक प्रेम-वर्णन में किसी प्रेमोपासक कवि से कम नहीं हैं।

वह सुमन बहुरंग निर्मित एक सुन्दर हार,
एक ही कर से गुँथा, उर एक शोभा-भार

उस अज्ञात परम प्रियतम से मिलोत्कंठा व्यक्त करते हुए निराला लिखते हैं-

नव जीवन का प्रबल उमंग
जा रही मैं मिलन के लिए पार कर सीमा
प्रियतम असीम के संग

उनके आध्यात्मिक श्रृंगार का एक मादक चित्र देखिएः-

नयनों का नयनों से बंधन, कॉपे थर-थर, थर-थर तन।

'जागो फिर एक बार' शिवाजी का पत्र, बादल राग, खण्डहर के प्रति, राम की शक्ति पूजा आदि इनके पौरुष के ओज से दीप्त कविताएँ। 'निराला' रचित 'गीतिका' (काव्य संग्रह) से संगृहित 'वसन्त आया' शीर्षक कविता में वासन्ती प्रकृति का बड़ा ही नयनाभिराम चित्रांकन कवि ने प्रस्तुत किया है। कवि कहता है-

सखि बसन्त आया, भरा हर्ष वन के मन नवोत्कर्ष छाया।

पूर्ण वन-उपवन हर्षोत्फुल्ल हो उठा है। नई सुकुमारी लताओं में 'नवीन कोंपलें उग आयी हैं। वह अपने निकटवर्ती वृक्ष रूपी पति का आलिंगन करती हुई उस पर आरोहण कर रही है। इसमें बासन्ती प्रकृति का मनोरम चित्रण तो है ही, वन का मानवीकरण भी किया गया है। इसमें वानस्पतिक संभोग-चेष्टा के माध्यम से वसन्तोदीप्त नर-नारी की काम चेष्टाओं की ओर भी प्रतीकात्मक संकेत है।

'बादल राग' कविता में शोषण एवं अत्याचार के शिकार उस कृषक की दयनीय दशा देख कवि के द्वारा अत्यधिक मार्मिक कविताएँ लिखी गईं-

जीर्ण बाहु है शीर्ण शरीर, तुझे बुलाता कृषक अधीर,
ऐ विप्लव के वीर।
चूस लिया है उसका सार, हाड़-मांस ही है आधार,
ऐ जीवन के पारावार।

'निराला' के 'तुलसीदास' में 'तमसोमाज्योतिर्गमय' के आह्वान के साथ-साथ लोक-हित तथा विश्व-कल्याण की भावना अन्तर्निहित है। उनकी 'दान'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS/MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नामक कविता में मानवता का उत्कृष्ट रूप द्रष्टव्य है।

नव गति, नव लय, ताल छन्द नव, नवल कंठ, नव जलद-मद्रव
नव नभ के नव विहग-वृन्द को, नव पर, नव स्वर दे।
वर दे, वीणा वादिनी वरदे।।

सदियों गुलामी की जंजीर में जकड़े रहने के कारण भारत के नौजवानों में कई तरह के दुर्गुण आ गये हैं, जिसे दूर करने के लिए कवि अपने सरस्वती-वन्दना-गीत के माध्यम से प्रार्थना करता हुआ कहता है कि - हे सरस्वती माता! आप अपनी वीणा के वादन से ऐसी ध्वन्यात्मक-शक्ति का संचार करें, जिससे भारत वासियों के हृदय में सदियों से समाविष्ट अज्ञानता एवं अनैतिकता रूपी अंधकार का अन्त कर, ज्ञान-विवेक रुपी प्रज्जवलित प्रकाश की धारा प्रवाहित हो सके तथा साथ-साथ भारत में स्वतंत्रता के स्वर्णिम सुप्रभात का समागम भी हो जाये। नवीनता का आग्रही होने के कारण कवि सम्पूर्ण वातावरण को एक नवीन रूप में देखना चाहता है। सुन्दर शब्द-चित्रकारिता, शिल्पों की कलात्मकता और निरीक्षण की नवीनता के कारण यह वन्दना-गीत लोकप्रिय बन गया है।

निराला ने भिक्षुक, तोड़ती पत्थर तथा विधवा शीर्षक जैसी अपनी कविताओं में लोक-चेतना से आप्लवित होकर भारतीय समाज के बहुसंख्यक दलितों, शोषितों एवं पीड़ितों के दुःख-दर्द का स्वाभाविक किन्तु व्यंजनात्मक वर्णन किया है। 'परिमल' (काव्य संग्रह) से उधृत 'भिक्षुक' शीर्षक कविता में करुणा की पराकाष्ठा और दरिद्रता की जघन्यता का दर्दनाक दृश्य है। यदि आदि कवि वाल्मीकि क्रौंच पक्षी की आहत-वेदना को बर्दास्त नहीं कर सके, तो फिर इन दम घुटते एवं मौत की घडियों को गिनते हुए इन्सान के लिए निराला क्यों न काव्य-कला के करुण दुकुल को पकड़े?

वह आता
दो टूक कलेजे को करता पछताता पथ पर आता
पेट-पीठ दोनों मिलकर हैं एक
चल रहा लकुटिया टेक
मुट्ठीभर दाने को भूख मिटाने को
मुँह फटी पुरानी झोली को फैलाता।।

कवि का यह सम्बोधन कितना करुण और कटाक्षपूर्ण है। आह ! आठ-आठ आँसू रोती हुई आँखें। डगमगाते हुए कदम!! काँपती हुई कृषकाय !!! उस कंकाल विकराल रूप को देखकर कवि का कलेजा छलनी हो जाता हैं।

भिखारी बच्चों को विकलान्त देख मानवता का आँचल छोड़, दानवता की डोर पकड़ के किनारे नाले में चला जाता है जहाँ जूठी पत्तलें भी धनियों का श्वान उनसे झपट लेने को उद्यत हैः-

चाट रहे झूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खड़े हुए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।

'भवभूति' की करुणा चाहे यहाँ चुप हो जाये, मानवों का हृदय चाहे पत्थर बन जाये, पर निराला सरल एवं स्वाभाविक ढंग से शब्दों द्वारा उसका सच्चा किन्तु मर्मस्पर्शी और करुण चित्र खींचे बिना नहीं रह सकते।

निराला ने इलाहबाद के किसी सड़क के किनारे एक मजदूरिन (स्त्री) को पत्थर तोड़ते देखा। उस पर उन्होंने बड़ी मार्मिक एवं करुणाद्र कविता लिखी।

महिषादल (बंगाल) से आकर जीवन के अन्तिम दस-बारह वर्षों तक निराला 'प्रयाग' के दारागंज मुहल्ले में विक्षिप्त की तरह रहते थे। वे जलोदर, हर्निया और किडनी की बीमारी से त्रस्त होकर निरन्तर मृत्यु से संघर्ष कर रहे थे। इसी बीच सुमित्रानन्दन 'पंत' जब इन्हें देखने आये तो निराला ने प्रसन्न होकर कहा

हम रहे न रहे
तुम सलामत रहो हजार बरस।

बीमारी की स्थिति में सम्पूर्णानन्द, राममनोहर लोहिया, कमलापति त्रिपाठी आदि गणमान्य-जन भी उन्हें देखने आये।

मुख पर कष्ट या विकारों की भंगिमा नहीं थी और न कोई अंग ही टेढा हुआ था। जीवनभर संघर्षों और कठिनाईयों से जूझने वाले उस महान साहसी एवं अदम्य योद्धा ने मृत्यु का स्वयं वरण करते हुए 15 अक्टूबर, 1961 ई. को अपनी जीवन-लीला समाप्त कर दी और चिर-शांति की गोद में सदा के लिए अखण्ड निद्रा में शाश्वत रूप से सो गये।

'निराला' की मृत्यु से सारे हिन्दी संसार को एक जोरदार झटका लगा। एक अव्यक्त वेदना लाखों हृदय में उमड़-घुमड़ उठी। पत्र-पत्रिकाओं में विशेषांक निकलने लगे तथा लेखकों में संस्मरण लिखने की कोड़ लग गई। भारतेन्दु से लेकर अबतक हिन्दी के जितने लेखक दिवंगत हुए उन सब मिलकर भी इतने संस्मरण और लेख नहीं लिखे गये होंगे।

निराला जी ने अपनी लुकाठी से अपना घर जलाकर ही साहित्य-सृजन किया था। इसके पीछे उस सरस्वती के वरद् पुत्र ने अपना सबकुछ लुटा दिया था। परन्तु मृत्युपर्यन्त उस स्वाभिमानी कवि ने हार नहीं मानी। साहित्यकारों के सम्मान को सबसे ऊँचा देखा। उसने भीख दी, लेकिन भीख कभी नहीं ली।

बड़ा बाजार पुस्तकालय, कलकत्ता के एक समारोह में राष्टकवि दिनकर जी ने कहा था ''भाई निराला तो मरकर हिन्दी संसार में छा गये।''

'निराला' अब नहीं हैं। भारतेन्दु ने उनके विषय में कहा था:-''प्यारे हरिचन्द की कहानी रह जायेगी।'' सो अब निराला जी की कहानी भर रह गई है। अवश्य ही उनका अब भौतिक शरीर नहीं रहा, किन्तु जबतक हिन्दी भाषा है, जबतक संसार में शुद्ध काव्य के पारखी है, जबतक दलित, पतित और पीड़ित मानव है और जबतक उनके कष्टों की वाणी देने की या वकील की आवश्यकता है, तबतक निराला

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding By MKS 2021-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जी का शरीर अमर है। तबतक उनकी वाणी जीवित है। हिन्दी के तो वे गौरव थे। उनके समान तेजस्वी, मेधावी, मौलिक और ऊँची उड़ान लेनेवाला कवि तथा शब्दों का बादशाह यदा-कदा ही जन्म लेता है।''

डॉ.राधाकृष्ण, भारत के राष्ट्रपति सर्वमान्य विद्वान ने उनके चित्र का अनावरण करते हुए कहा था ''निराला'' भारत के ऋषि-मुनियों की ही परम्परा में एक सच्चे ऋषि और विद्रोही क्रान्तिकारी तथा युगप्रवर्तक कवि थे। उनके काव्यों में मानवता के वर्णन होते हैं, जो जाति एवं राष्ट्र की सीमाओं में बँधी नहीं है। वह सत्य के पुजारी और धुन के पक्के थे। उन्होंने साहित्य की परम्पराओं, नई शैलियों का समावेश किया तथा प्रजातंत्र, मानवता, एवं प्रगति के लिए अपना सारा जीवन लगा दिया।''

निराला के निधनोपरान्त कुछ ही काल पश्चात् सरस्वती पत्रिका के सम्पादकीय स्तम्भ में श्री नारायण चतुर्वेदी ने लिखा ''हम अपने किसी पूर्व जन्म के बहुत बडे सुकृत का ही फल समझते हैं कि उन्होंने अपनी सर्वोत्तम कृति 'तुलसीदास' हमें समर्पित की और (समर्पण) में हमें अपना अग्रज घोषित किया। घोषित ही नहीं किया अपितु अन्त तक उस संबंध का निर्वाह भी किया। हिन्दी काव्य संसार के यह विभ्रष्ट-शब्द चितेरा जीवन के अप्रतिम मूल्यों को जिस अन्दाज में समर्पित किया है, उसका द्वितीय विकल्प ढूँढ पाना सम्प्रति संभव नहीं लगता।

सम्पूर्ण जीवन संघर्षों और कठिनाइयों से जूझते रहने वाले उस महान साहसी अदम्य योद्धा का भौतिक शरीर भले ही प्रकृति की गोद में शाश्वत रूप से सो गया हो, किन्तु उनकी सुदीर्घ साहित्य-साधना एवं आध्यात्मिक कीर्ति-काया हिन्दी साहित्याकाश में ज्योतिर्मय नक्षत्र की तरह चिर काल तक चमकते रहेंगे।

शिशु पाते हैं माताओं के वक्ष स्थल पर भूला जाम ।
माताएँ भी पाती शिशु के अधरों पर अपनी मुस्कान।।-'निराला'

संपर्क सूत्रः- रामबाग चौड़ी, पोस्ट. रमना, जिला-मुजफ्फरपुर-842002 (बिहार). मो.नं.9386752177.

नए आजीवन-सदस्य

नामः-आदर्शलता एस पंचोली
जन्मः-2-10-1955
शिक्षाः- बी.ए. (एक्नोमिक्स) एल.एल.बी
रुचिः-समाज सेवा
संप्रतिः-अवकाश प्राप्त केन्द्र सरकारी कर्मचारी, बोलचाल की अंग्रेजी का प्रशीक्षण केन्द्र संचालन तथा वोकेशनल कोर्स का प्रशिक्षण केन्द्र का संचालन, काटन एवं सिल्क कपड़ों की प्रदर्शनी लगाना।

संपर्कः-सी/14 प्रगति सोसाईटी, 4-1-10 तिलक रोड़ रामकोट हैदराबाद

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

व्यंग्य

बाबा रघुवर दयाल और उनकी पोती चुन्नो

–डॉ.राकेश कुमार सिंह

यह कोई ऐसा-वैसा बैनर नहीं, राजनीतिक बैनर है, ऐतिहासिक बैनर है। चौधरी रघुदयाल ने अपनी पोती चुन्नो को बताया-''जिस प्रकार महान शासक अपने निर्णय रात को बारह बजे लेते हैं, उसी प्रकार मैंने भी इस बैनर का अपहरण बारह बजे रात को किया था।'' यहाँ रघुवर दयाल को लूटने के मुकाबले अपहरण शब्द का प्रयोग ज्यादा गरिमामय लगा। समझाने लगे-'अच्छे कपड़े का है। लम्बाई-चौडाई भी अच्छी है। तूं इसका दुपट्टे की तरह इस्तेमाल कर ले। चुनाव के कायदों का कुछ तो उपयोग हो। लूट और अपहरण की चीजों के उपयोग का आनन्द ही अलग है।''

''दुनिया आगे बढ रही है और आप पीछे लौट रहे हैं बाबा। दुपट्टे का जमाना गया। हीरोइन रिरियाती रही- इन्हीं लोगों ने, इन्हीं लोगों ने छीना दुपट्टा मेरा।'' और किसी के कान पर जूँ न रेंगी तो यह मानते हुए कि 'न रहेगा बाँस न, बजेगी बाँसुरी' दुपट्टे का ओढना ही बंद कर दिया।'' चुन्नों फिर ठुनकी ''अब तो जमाना स्कर्ट का है। देखो न, बिग-बी अपनी पोती और अपनी नातिन को चिठ्ठी लिखकर बता रहे हैं-स्कर्ट की ऊँचाई से चरित्र तय नहीं होता।''

'अरी चुन्नो' रघुवर दयाल ने प्यार से कहा-''मैं बाबा जरूर हूँ, दुनियाँ में और भी बाबा हैं, नाना हैं लेकिन कोई भी बिग-बी यानी अमिताभ जैसा है क्या। वे तो सदी के महानायक हैं। वे आज धरती के भगवान हैं। जानती हो, उनके मुँह से तो निकला झूठ भी हम जैसे लोगों के सच से ज्यादा महान है। उनकी तो एक-एक बात करोड़ों रुपये की है। वह चाहे बच्चों को मैगी खाने के लिए कहें, चाहे सिर में दर्द हो तो नवरत्न तेल लगाने के लिए। लोग मानते हैं कि यह सदी के महानायक हैं तो झूठ थोड़े ही बोलते होंगे।''

रघुवर दयाल ने हाथ में लगा बैनर खुद ही चादर की तरह लपेट लिया। बोले ''चाय बनाकर रखो। अभी आता हूँ।'' फिर यह गुनगुनाते हुए घर से बाहर निकल गये-

'न लिख सकता, न पढ सकता यारो गजब का शायर हूँ मैं।
दुनिया पूजती है आज भी हम को हुआ क्या अगर, फटा टायर हूँ मैं।।'

थोड़ी देर बाद वापस लौटे। उनके हाथ में अखबार था। आते ही चिल्लाये-''चुन्नो'' लो अखबार पढो। इसमें अमिताभ बाबा की स्कर्ट वाली चिठ्ठी के बारे में कुछ लिखा है। चुन्नो ने बाबा रघुवर दयाल को चाय का प्याला पकड़ाया और फिर अखबार पढने लगी।

''महानायक अमिताभ बच्चन की नातिन नव्या और पोती आराध्या को लिखे जिस पत्र को अति संवेदनशील कहा जा रहा था, उसे अन्ततः फिल्म पिंक के क्रियेटिव प्रोड्यूसर सुजीत सरकार ने प्रमोशन का हिस्सा मान लिया है। सुजीत कह रहे हैं कि यह एक ईमानदार प्रयास था।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो फिर बेईमान प्रयास क्या होता? चुन्नो के मुँह से निकल गया।

मैं कह रहा था न, कि बड़े-बड़े लोगों की बड़ी-बड़ी बातें। रघुवर दयाल मुस्काये, फिर कहने लगे- ''बड़े-बड़े लोग जो कुछ भी कहते हैं, जो कुछ भी करते हैं, उसमें सच्चाई और ईमानदारी के अलावा कुछ होता ही नहीं। उनका स्वांग, स्वांग नहीं होता, लीला होती हैं।''

''लेकिन बाबा'', चुन्नो ने कहा-'साहित्य के बड़े-बड़े विद्वान तो इस पत्र को नेहरू जी के उन पत्रों की बराबरी पर रख रहे थे जिन्हें उन्होंने अपनी पुत्री इन्दिरा को लिखा था।''

''अरी चुन्नो बिटिया।'' रघुवर दयाल ने गम्भीर होकर कहा-''चापलूसी भी गदहों के वश की बात है क्या।''

चाय की आखिरी चुस्की ली। फिर रघुवर दयाल ने पूछा ''और कुछ भी लिखा है इस अखबार में।''

''हाँ।'' चुन्नो पढने लगी-भट्ट कैम्प की क्रिमनल के प्रमोशन के लिए मुम्बई के अखबार के मुख पृष्ठ पर मनीषा कोईराला की हत्या की खबर छपी। यह विज्ञापन था। बाद में और झूठ चले। फिर 'गर्दिश' के वक्त जैकी श्राफ गिरफ्तार, 'बेवफा सनम' के समय शिल्पा शिरोड़कर की हत्या और 'डुप्लीकेट' के सेट पर शाहरुख खान को गोली मारने की अफवाहें उड़ी।''

''वाह री सच्चों की दुनिया। तुम्हारी दुनिया तुम्हें ही फले फूले। हमारे अंगने में तुम्हारे क्या काम है।'' रघुवर दयाल बुदबुदाये।

''और भी कुछ लिखा है?'' फिर पूछा। ''हाँ'' लिखा है। चुन्नों ने कहा-लेकिन मैं पढूँगी नहीं। उसे पढते हुए मुझे शरम आती है।''

''रहने दे, रहने दे।'' रघुवर दयाल बोले- ''बड़े-बड़े लोग जब शरम की खोज में इधर-उधर भटकेंगे तब तुम जैसियों के पास मिल तो जावेगी।''

चुन्नों शरमा कर भीतर चली गई। अकेले बैठे रह गये रघुवर दयाल, बडबडाये।

''झूठ इतना हो गया उपयोगी,
न कोई लाज से मरता
फुसफुसा कर रह गया हुआ फायर हूँ मैं।
मुझको लगा है कभी, नहीं रघुवर हूँ मैं
दिल दिमाग में बैठा घुसा 'डायर' हूँ मैं।'

चौधरी रघुवर दयाल असाधारण आदमी न थे। लेकिन चुनाव वेला में वह असाधारण हो जाते। जब वह जवान थे, यदाकदा कहा करते-''कोई भी जाति बिना राजनीतिक शक्ति के उठकर खड़ी नहीं हो सकती और राजनीति में ताकत आयेगी वोटरों से। इसलिए वोटर पैदा करो। परिवार नियोजन सत्ता से दूर रखने की बड़े-बड़ों की साजिश है, मत फंसो इस साजिश में। वोटर पैदा करो। हर हाथ को काम मिलेगा, हर हाथ में दाम मिलेगा, तो फिर क्यों न, वोटर पैदा करें?'' परिणाम आज

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इनके पास वोटरों की ताकत है। आज आलम यह है कि कोई भी दल हो, कोई भी प्रत्याशी हो, इनका साथ टेके बिना अपनी जीत की कामना ही नहीं कर सकता।

चुनावकाल में आजानबाहु हो जाते हैं, इनका पेट भीम का पेट हो जाता है। जो भी मिले सब स्वाहा। कहीं से बैनर झपटते तो कहीं से ब्रान्डी। औरतों को साड़ियाँ दिलवाते तो बच्चों को जी भर कर पूड़ियाँ खिलवाते। चुनाव तक इनकी बस्ती में 'महाभोज' चलता ही रहता। हाथ में नकदी कौन कितनी रख गया, गिनते न थे। वजन से उसका अनुमान लगाते। प्रत्याशी को आया देखकर बड़ी सी खटिया पर पैर लटका कर बैठ जाते ताकि उनके पैरों पर सिर रखने में उसे किसी प्रकार की कठिनाई न हो।

चौधरी रघुवर दयाल बहुत ही उदार किस्म के वोटरबली थे। इन्हें चुनाव प्रमोशन के लिए कोई कुछ भी देता, कभी भी मना न करते। कई बार, प्रायः प्राप्त किये गये बैनरों के नकल बनवाने पड़ते बनियानें सिलवानी पड़ती। इनकी बस्ती में चुनाव प्रचार में प्राप्त की गई साइकिलें थी, लैपटाप थे, टैबलेट्स थे, धोती, कुर्ता थे, साड़ियाँ थीं।, टिकुली-बिन्दी और चूड़ियाँ थीं। चुनाव की थकान दूर करने व जुकाम-बुखार से निपटने के लिए ब्रॉन्डी की बोतलें भी थीं। इधर चुनाव में कुछ दिनों से आराम से लेटे-बैठे, उनको उठाने के लिये कोई दूसरा आदमी कष्ट उठाये, यह चौधरी साहब को स्वीकार न था। इसी भलमानशाहत के वशीभूत होकर, जब सभा खत्म हुई, उन सभी खाटों को खुद ही उठा लाये या उठवा लाये जिन पर वह लेटे थे, या बैठे थे। लेकिन चौधरी साहब को उस समय बहुत कष्ट हुआ, जब अखबार वालों ने लिख दिया-''खाटें लुट गईं।'' चौधरी साहब ने इस पर इतना ही कहा-''नेकी का तो जमाना ही नहीं हमने ही थूका, हमने ही चाटा तो बुरा क्या किया।''

चौधरी रघुवर दयाल बहुत ही दूरदर्शी थे। इन्होंने सबसे पहले उस मचिया पर कब्जा किया जिस पर नेता ने बैठकर खाट सम्मेलन को सम्बोधित किया था। यह जानते थे कि यह मचिया लाखों की है। इसी शहर में इससे पहले जिस कुर्सी पर बैठकर बड़े नेता ने भाषण दिया था, वह दसियों लाख की बोली लगने के बाद भी अभी तक नीलाम नहीं हो पाई है। फिर यह तो मचिया है, कुर्सी की तरह बाँझ थोड़े ही है। मचिया के भी बच्चे हो गये तो....। मजे ही मजे। मचिया के बच्चे कैसे होंगे, यह चौधरी साहब देखते अपना अहोभाग्य मानते हुए गा उठते-

'नमो-नमो मचिया महरानी, तुम पर बैठे बातों के दानी
शबरी के घर उधार का खाकर, पीते दूध बताते पानी
वन्दनीय मचिया महरानी, नमो नमो मचिया महरानी।।'

चुन्नो रघुवर दयाल के नवें नम्बर के बेटे छुन्ना की बेटी है। छुन्ना बूथ कैप्चरिंग में शहीद हुआ था। उस समय उसकी उम्र पैंतीस बरस और चुन्नो की उम्र दस बरस रही होगी। तब से अब तक नौ-दस बरस से चुन्नो अपने बाबा रघुवर दयाल के संरक्षण में है। अपने पिता की तरह ही उच्च कोटि की समझ रखने वाली। अपने बाबा की तरह ही राजनीति को व्यवसाय समझने वाली चुन्नों में गजब की प्रतिभा थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक दिन खाट सम्मेलन से लौटे बाबा रघुवर दयाल से चुन्नो ने कहा- ''बाबा अब मैं चुनाव लड़ूँगी। राजनीति में युवाओं की, सुन्दरियों की, कुमारियों की आवश्यकता है। मैं अपने पिता की शाहदत पर वोट माँगूंगी। मैं आपकी चौधगाहट पर वोट माँगूंगी। चुनाव जीतने के लिए मेरा अपना पाँच सूत्रीय कार्यक्रम भी है।

बाबा, ध्यान से सुनो। पाँच सूत्रिय कार्यक्रम में एक तो है- सभी खूनियों के सब खून माफ। इन्हीं में से अनुभव के आधार पर फोर्स का गठन। देखें, अपराधी कैसे काबू में नहीं आते।

दूसरे, व्यापारियों को किसी भी तरह से धन कमाने की सुविधा। इससे व्यापारी और अपना पार्टी फंड दोनों ही मजबूत होंगे।

तीसरे, छात्र-छात्राओं को परीक्षा से मुक्ति। कैसी भी ऊँची से ऊँची डिग्री हो वांछित शुल्क देकर खरीदने की पूरी छूट। इससे राजनीतिक आन्दोलनो में सक्रिय भागीदारी के लिए छात्र-छात्राओं के पास समय का अभाव न रहेगा। शादी ब्याह में अच्छा दहेज माँग सकेंगे। सोसायटी के पास धन की कमी थोड़े ही है। आवश्यकता है, बस उसके सही वितरण की। यदि भारत में समाजवाद दहेज के रास्ते से आये तो विश्व राजनीति में एक नई उपलब्धि होगी।

चौथे, भारतीय किसानों को गाँजे की खेती के लिए प्रोत्साहित करना। उन्हें इसके लिए आवश्यक अवसर प्रदान करना। गाँजे को लोग पियें और राग-विराग से उदासीन हो, मस्त रहे। उन्हें फिर आत्महत्या करने की आवश्यकता न दिखेगी।

और पाँचवें, चुने हुए प्रतिनिधियों का कार्यकाल कम से कम बीस वर्ष हो ताकि वे जमकर अपनी योजनाओं का कार्य कर सकें। जल्दी-जल्दी होने वाले चुनावों में होनेवाले खर्चे से देश बचेगा। जनता हलाकान होने से बचेगी। प्रत्याशियों को थोड़े-थोड़े समय के बाद बार-बार वोट माँगने की टेंशन न रहेगी।

ऐसा घोषणा पत्र है किसी के पास। नहीं न, तो फिर अपनी जीत निश्चित है''

रघुवर दयाल सुनते रहे, उनसे कोई जवाब न सूझ रहा था। वे समझ न पा रहे थे कि चुन्नो का दिमाग यकायक इतना 'फर्टाइल' कैसे हो गया। निश्चित ही फिर इसके अन्दर किसी मंझे हुए राजनेता की आत्मा भूत बनकर प्रवेश कर गई है।

काफी देर तक न चुन्नो बोली, न ही रघुवर दयाल। चुन्नो ने ही फिर बातचीत का सिलसिला आगे बढाया, कहा-''राजनीति में संगठन की मजबूती के लिए अन्दरूनी यानी गृह-कलह भी आवश्यक है। आप तो राजनीति के मँजे हुए खिलाडी हैं। बताओ, इसकी शुरूआत कौन से ताऊ और कौन सी ताई से की जाये।''

''चुन्नो, हमें सोचने और समझने का मौका दो'' रघुवर दयाल ने कहा। और फिर गुनगुनाते हुए वहाँ से चल दिये।

''प्रत्याशी सभी अब तर लगे अच्छे डटकर सभी का माल है खाया।
एक मत किसको दिया?
सबको दिया नम्बर एक का लायर हूँ मैं।''

चौधरी रघुवर दयाल अपने पैरों को लगभग घसीटते हुए किसी योग्य ओझा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की खोज में बढे चले जा रहे थे। रास्ते में एक घर पड़ा, जिसमें वह पहले भी आ चुके थे। इसमें रहते थे डॉ.श्याम मुरारी बाबा। यह कोई चिकित्सक न थे। महाविद्यालय में पढाते थे साहित्य के डॉक्टर थे रघुवर दयाल क्या जाने डॉक्टरों की यह पोप लीला। उनकी नजर में तो डॉक्टर सब एक से, चिकित्सक। रघुवर दयाल भर-भरा कर रो पड़े- ''पोती जवान है। कहती है चुनाव लड़ूँगी। उसके अन्दर निश्चित ही किसी राजनीतिज्ञ का भूत प्रवेश कर गया है।'' चुन्नो की कही गई सारी बातें रघुवर दयाल ने डॉ.बाबा को कह सुनायी।''अब आप ही बताओ, उसकी यह जिद कैसे छूटे? आप की नजर में कोई योग्य ओझा हो तो....

डॉ.श्याम मुरारी बाबा आज हल्के मूड में थे। बोले भाई रघुवर। तुम्हारे घर में चुनावी माल बहुत है। यह हम जानते हैं। इस चुनावी माल में कुछ ऐसा तो नहीं है जिसे चुन्नो प्रयोग कर रही हो या हाल ही में अभी उसका प्रयोग शुरू किया हो।

रघुवर दयाल सोचने लगे। सोचते रहे। चुन्नों की पूरी दिनचर्या पर दिमाग घुमाया। फिर बोले...''हाँ एक मचिया है जिस पर बैठ कर उसने बेसन बनाने के लिए चकिया चलायी। यह वह मचिया है जिस पर बैठ कर बड़े नेता ने खाट सम्मेलन को सम्बोधित किया था।''

''बस बस। मिल गया।'' डॉ.श्याम मुरारी बाबा बोले-''यह मचिया ही है इस सारे फसाद की जड़।'' फिर उन्होंने विक्रमादित्य के राज सिंहासन की कथा कह सुनायी। अन्त में बोले ''महान व्यक्ति जहाँ बैठते हैं, जिस आसन पर बैठते हैं, या जिन वस्त्रों को धारण करते हैं उस जगह पर, उस आसन पर, उन वस्त्रों में उनके शरीर से निकलती ऊर्जा, उसकी कुछ तरंगे रह जाती हैं। फिर उस जगह पर या आसन पर जो भी बैठता है या जो भी उन वस्त्रों को धारण करता है, वह भी उस ऊर्जा और उन तरंगों से आवेशित होने लगता है। इसका एक विस्तृत विज्ञान है। मैंने तो इसे तुम्हें तुम्हारे मुताबिक समझाया।''

''तो फिर?'' रघुवर दयाल ने साश्चर्य पूछा। ''चुन्नो अब दुबारा इस मचिया पर न बैठे। नहीं तो....। नहीं तो उसकी भी आत्मा राजधानी की कुर्सी के इर्द-गिर्द मंडराने लगेगी।'' ''नहीं बैठेगी। उस मचिया को मैं एन्टीक पीस की तरह रखूँगा। करोड़पति बना देगी कभी। लेकिन चुन्नो को तबियत अब ठीक कैसे होगी?''

''कुछ नहीं।'' डॉ.श्याम मुरारी बाबा ने बताया-''बीमारी घर की तो उसका इलाज भी घर का। जाओ, विरोधी पार्टी का बैनर ओढाकर उसे सुला देना। जहर ही जहर को काटेगा। सब ठीक हो जायेगा।''

रघुवर दयाल खुशी-खुशी घर लौटे। घर पर आकर जो देखा, जो सुना उससे वे सुन्न हो गये। सोचने लगे-अब कौन से मनचले की पहनी हुई टोपी इसने पहन ली। टोपी का प्रभाव है यह। चुन्नो सिर पर चुनाव की टोपी लगाये थिरक रही थी- ''डोन्ट टच माई बॉडी मोहन रसिया।''

संपर्क सूत्रः- सुमन कॉटेज, शिवा कुंज, बाबरपुर, सिकन्दरा, आगरा-282007, उ.प्र.
मोबाईल 9456800617

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

असंगत नाटक (एब्सर्ड ड्रामा)

डॉ. उषारानी राव

सामाजिक सांस्कृतिक विसंगतियों से जूझती हुई सकारात्मक शक्तियों के संघर्ष में भारतीय नाट्य परंपरा के अंतर्गत असंगत नाटकों का प्रचलन समय और समाज की नाटकीयता को मनोवैज्ञानिक रूप से समझने के लिए अभिव्यक्त हुआ। मन के अनेकयामी संघर्ष को एकयामी मानकर चलने से मनुष्य के बचे रहने की संभावना में उसे अति विशिष्ट मानकर प्रस्तुत करने की अवधारणा एक द्वंदात्मक प्रक्रिया से होकर गुजरती है।

'दी थियेटर ऑफ दी एबसर्ड' से प्रभावति सैमुअल वैकेट से भारत का असंगत रंगमंच प्रेरणा पाता रहा। हिंदी के विभिन्न नाटककारों ने असंगत नाटकों की रचना की है। भुवनेश्वर का तांबे का कीड़ा बेतुके संवाद के लिये चर्चित रहा। इसी क्रम में मुद्राराक्षस का ''मरजीवा'' मणि मधुकर का ''रस गंधर्व'' लक्ष्मीकांत वर्मा का ''रोशनी एक नदी है'' सत्यव्रत सिन्हा का ''अमृत पुत्र'' काशीनाथ सिंह का ''धोआस'' आदि ऐसे नाटक हैं। जिनको हिंदी नाटक एवं रंगमंच ने एक नई पहचान पाने के लिए थियेटर की नव्यता को स्वीकारा।

हम भारतीय भाषा के अंतर्गत कन्नड़ भाषा के नाटकों की ओर दृष्टि डालें तो हम पाते हैं कि गिरीश कर्नाड मानवीय असंगति की मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति के साथ दृढता से खड़े दिखाई देते हैं। रंगमंच में नव्यता के प्रणेता के रूप में माने जानेवाले कर्नाड की नाट्यकृति ''तुगलक'' उनके प्रख्यात नाटकों में से एक है। यह नाटक 1964 में लिखा गया था। नाटक के कथानक में चारित्रिक विरोधाभास में जीने वाले तुगलक का मानसिक चित्रण किया गया है। इस नाटक में सशक्त दृश्य बिंबों का प्रयोग किया गया। इतिहासकारों की दृष्टि में तुगलक एक सिरफिरा व्यक्तित्व है। तुगलक के माध्यम से समय की विसंगतियों का समाज पर और समाज की विसंगतियों का व्यक्तित्व पर प्रभाव को प्रभावी ढंग से रंगमंच पर प्रस्तुत किया गया।

नाटक की महत्वपूर्ण भूमिका के अंतर्गत ''लिटरेरी टर्न'' के रूप में भी इसे समझा जा सकता है। गिरीश कर्नाड की पैनी दृष्टि ने तुगलक युग और नेहरू युग में गहरी साम्यता देखी। एक तरह से भारतीय राजनीति के अंतर्विरोध की जड़ों को तलाशने के लिए इतिहास को नाटक के विषय में आदर्शवादिता के दौर और सफलता के परिणाम स्वरूप नैराशय पूर्ण स्थितियों को रूपक के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

अतिशय आदर्शवादिता किसी भी व्यक्तित्व में काफी हद तक उच्छृंखलता, नृशंसता, अधैर्य आदि के द्वारा संचालित होने में कारक बनता है। वर्तमान से भविष्य को देखने वाली विस्तारक दृष्टि ही एक रचनाकार को इतिहास में ले जाती है। इतिहास की घटनाओं को केंद्रित करके ऐतिहासिकता के साथ संयोजन कर समकालीन द्वंदों को अभिव्यक्ति के द्वारा इस अनोखे नाटक शैली की शक्ति को पहचाना जा सकता है।

कर्नाड कहते हैं कि ''वृहत्तर अर्थवत्ता की घटनाओं में भाग लेने की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चेतना को दर्शकों में जगाना ही मुख्य उद्देश्य है।'' तुगलक में मुख्यतः दो प्रकार के दृष्टियों का विवेचन किया गया है। एक ओर तानाशाही स्वभाव है तो दूसरी ओर उदार आकांक्षाएँ भी समानांतर चलती हैं। इन दोनों ही विचार प्रवृत्तियों के बीच विरोधाभासों के मौजूद होते हुए भी तुगलक अपनी ऐतिहासिकता के साथ वर्तमान का मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति में सफल होता है।

कर्नाड ने तुगलक के नाट्य शिल्प को आधुनिक रंग-बोध से नया आयाम स्थापित किया है। वस्तुतः तुगलक का चरित्र आदर्शवाद को लांघता हुआ क्रूरता और निरंकुशता के उन्माद में पराभव की कहानी कहता है। वे इस चरित्र के द्वारा इतिहास के अंतर्वस्तु से वर्तमान की कडी को जोड़ते हैं। तुगलक को इस दृष्टि से देखना सार्थक होगा कि स्वतंत्रता के बाद से राजनीतिक पटल पर आज तक किसी का भी जन आकांक्षाओं की कसौटी पर पूर्ण रूप से साबित न होना यह दर्शाता है कि राजनीति जन विरोधी एवं लोलुपता का केन्द्र बन गयी है।

संपर्क:-कवयित्री एवं लेखिका विभागाध्यक्ष बॉल्डविन महिला महाविद्यालय संबद्ध केन्द्रीय वि.वि.बेंगलुरु ,कर्नाटक।

फार्म-4 (नियम 8 देखिए)

पंजीकरण संख्या -आर एन आई नं-टेल हिं-2017/74301

नाम	- पुष्पक साहित्यिकी
भाषा	- हिंदी
प्रकाशन अवधि	- त्रैमासिक
प्रकाशक	- डाँ. अहिल्या मिश्र
राष्ट्रीयता	- भारतीय
पता	- 93सी राज सदन, वेंगलराव नगर-हैदराबाद-500038
स्वामित्व	- डाँ.अहिल्या मिश्र
राष्ट्रीयता	- भारतीय
पता	- 93सी राज सदन, वेंगलराव नगर-हैदराबाद-500038 प्रकाशन का स्थान-हरिओम प्रिंटर्स-काचीगुडा, हैदराबाद
मुद्रक का नाम	- डाँ.अहिल्या मिश्र
राष्ट्रीयता	- भारतीय
पता	- 93सी राज सदन वेंगलराव नगर-हैदराबाद

मै डाँ.अहिल्या मिश्र एतद् द्वारा घोषित करती हूँ कि उपरोक्त ब्यौरा मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास के अनुसार सत्य हैं।

डाँ. अहिल्या मिश्र
प्रधान सम्पादक

तिथी-11-3-2021

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Archiving by DSPMoE-2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इतना तो ज़िन्दगी में किसी की ख़लल पड़े– कैफ़ी आज़मी

–प्रवीण प्रणव

साल 1965 में एक फ़िल्म आई, जिसका नाम था 'हक़ीकत'। इस फ़िल्म का संगीत दिया था मदन मोहन ने। इस फ़िल्म का एक गीत जिसमें सिर्फ रफ़ी साहब की सधी हुई आवाज़ और इसके साथ वायलिन की दर्द में डूबी हुई संगत थी, ने इसे अमर गीत बना दिया। गीत के बोल थे –

मैं ये सोचकर उसके दर से उठा था, कि वो रोक लेगी मना लेगी मुझको ।
हवाओं में लहराता आता था दामन, कि दामन पकड़कर बिठा लेगी मुझको ।
क़दम ऐसे अंदाज से उठ रहे थे, कि आवाज़ देकर बुला लेगी मुझको ।

मगर उसने रोका न मुझको मनाया, न दामन ही पकड़ा न मुझको बिठाया ।
न आवाज़ ही दी न मुझको बुलाया, मैं आहिस्ता–आहिस्ता बढ़ता ही आया ।
यहाँ तक कि उससे जुदा हो गया मैं, जुदा हो गया मैं, जुदा हो गया मैं ।

इस गीत में बजने वाले वायलिन को बजाया था प्यारेलाल जी ने (लक्ष्मीकांत – प्यारेलाल), और गीत के बोल लिखे थे मशहूर शायर कैफ़ी आज़मी ने। लेकिन बहुत कम लोगों को पता है कि कैफ़ी साहब ने ये नज़्म किसी फिल्म के लिए नहीं लिखी थी।

यह नज़्म कैफ़ी आज़मी की एक पर्सनल नज़्म थी। एक बार किसी बात पर कैफ़ी आज़मी की कहासुनी अपनी पत्नी शौक़त आज़मी से हो गई। इस कहासुनी के बाद ही कैफ़ी ने इस नज़्म को अपने लिए लिखा। लेकिन इस नज़्म को दुनिया के सामने आना था। सबसे पहले यह नज़्म फ़िल्म 'पंचायत' (1958) के लिये संगीतकार इक़बाल क़ुरैशी ने मोहम्मद रफ़ी की आवाज़ में रिकार्ड की थी। लेकिन किसी वजह से यह नज़्म उस फिल्म में नहीं आ सकी। फ़िल्म 'पंचायत' के लिये रफ़ी साहब की आवाज़ में रिकार्ड हुआ यह गाना अब कहीं भी उपलब्ध नहीं है। चेतन आनंद ने जब इस नज़्म को सुना तो उन्हें यह बहुत पसंद आई। चेतन आनंद उन दिनों फ़िल्म 'हक़ीकत' बना रहे थे जो युद्ध पर आधारित फ़िल्म थी। इस फ़िल्म में इस नज़्म को लेना मुश्किल लग रहा था लेकिन चेतन आनंद ने इस नज़्म को अपनी फ़िल्म में लेने की ठान लिया था। उन्होंने इस गीत के लिए किरदार और हालात गढ़े। इस बार मदन मोहन ने संगीत दिया और आवाज़ थी एक बार फिर से रफ़ी साहब की। फ़िल्म 'हक़ीकत' के जरिए यह नज़्म लोकप्रिय हुई और दुनिया ने एक बार फिर लोहा माना कैफ़ी साहब का।

कैफ़ी आज़मी का असली नाम अख्तर हुसैन रिजवी था। उत्तर प्रदेश के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आजमगढ़ जिले के छोटे से गाँव मिजवां में 14 जनवरी 1919 में इनका जन्म हुआ। इन्होंने अपने बारे में लिखा कि मैं कब पैदा हुआ ...याद नहीं, कब मरूँगा ... मालूम नहीं। अपने बारे में यक़ीन के साथ सिर्फ इतना कह सकता हूं कि मैं गुलाम हिंदुस्तान में पैदा हुआ, आजाद हिंदुस्तान में बूढ़ा हुआ और सोशलिस्ट हिंदुस्तान में मरूंगा। कैफ़ी साहब का जन्म एक किसान परिवार में हुआ था। इनके पिता के पास थोड़ी ज़मीन थी जिसकी वजह से छोटी-मोटी जमींदारी भी थी। लेकिन इनके पिता ने समझ लिया था कि इस जमींदारी का कोई भविष्य नहीं, इसलिए घर के सदस्यों के विरोध के बावजूद नौकरी की तलाश में लखनऊ चले गए। लखनऊ में कैफ़ी साहब के पिताजी को अवध की एक सुप्रसिद्ध स्टेट 'बिलहरी' में तहसीलदार की नौकरी मिल गई। कैफ़ी आज़मी के पिता चाहते थे कि उनके बच्चे अच्छी शिक्षा पा कर कुछ करने योग्य बन सकें इसलिए नौकरी मिलते ही उन्होंने अपनी पत्नी और तीन बड़े बेटों को भी लखनऊ बुला लिया और बेटों को अंग्रेजी मीडियम स्कूल में दाखिला दिलवा दिया।

कैफ़ी आठ भाई-बहन थे। तीन भाइयों के बाद, चार बहनें और फिर कैफ़ी सबसे छोटे थे। तीन भाइयों के लखनऊ जाने के बाद, चार बहनों के साथ कैफ़ी गाँव में अपने चाचा के साथ रहे। इनके पिता को अपनी बेटियों से बहुत प्यार था लेकिन सबसे बड़ी बेटी को टी.बी. की बीमारी हो गई और बहुत इलाज के बाद भी उसे बचाया नहीं जा सका। छूत से फैलने वाली बीमारी ने इस घर में डेरा जमा लिया था, नतीजा यह रहा कि एक के बाद बाकी बची तीन बहनें भी इसी बीमारी से चल बसीं। कैफ़ी सबसे छोटे थे, हर बार इलाज के लिए माँ के साथ कैफ़ी भी जाते थे। बहुत छोटे उम्र में ही कैफ़ी ने अपनी चार बहनों की मृत्यु देखी जिसका उनके मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस सदमे ने कैफ़ी का बचपना छीन लिया।

अपनी बेटियों की मृत्यु के बाद कैफ़ी के पिता सोचने लगे कि मैंने अपने बेटों को अंग्रेजी मीडियम से पढ़ाया इसीलिए मेरी बेटियों पर यह मुसीबत आई। अंग्रेजी मीडियम की पढ़ाई से उन्हें चिढ़ होने लगी। उन्होंने कहना शुरू किया कि जब मैं मरूंगा तो मेरा कोई बेटा फ़ातिहा (मृत व्यक्तियों की आत्मा की सद्गति के लिए उनकी कब्र पर फ़ातिहा पढ़े जाने की एक रस्म) भी नहीं पढ़ेगा, क्योंकि अंग्रेजी मीडियम में फ़ातिहा पढ़ना सिखाया ही नहीं जाता। कैफ़ी सबसे छोटे थे तो इनके पिता ने निर्णय लिया कि कैफ़ी को मदरसे में दीनी शिक्षा दिलाई जाएगी ताकि उन्हें फ़ातिहा पढ़ना आ सके और उन्हें शहर न बुला कर गाँव के ही मदरसे में पढ़ने भेज दिया गया। प्रसिद्ध लेखिका आयशा सिद्दकी ने एक लेख में लिखा कि कैफ़ी साहब को उनके बुजुर्गों ने एक दिनी मदरसे में इसलिए दाखिल किया थाकि वहाँ फ़ातिहा पढ़ना सीख जाएंगे। कैफ़ी साहब इस मदरसे में मज़हब पर फ़ातिहा पढ़ कर निकल आए।

कैफ़ी आज़मी के पिता शायर नहीं थे, अलबत्ता उन्हें शायरी की अच्छी समझ जरूर थी। पिता की रुझान ने ही शायद इनके तीनों बड़े बेटों को शायरी की तरफ मोड़ा और तीनों शायरी करने लगे। सबसे बड़े भाई सैयद ज़फ़र हुसैन,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'मजरुह' तख़ल्लुस से शायरी लिखते थे। उनसे छोटे भाई सैयद हुसैन ने 'बेताब' तख़ल्लुस से शायरी की तो उनसे छोटे भाई सैयद शब्बीर हुसैन ने तख़ल्लुस 'वफ़ा' का इस्तेमाल किया। तीनों भाई जब छुट्टियों में लखनऊ से गाँव आते थे तब मुशायरा होता था जिसमें गांव के शायर भी भाग लेते थे। जब कैफ़ी के तीनों बड़े भाई अपनी शायरी पढ़ते, तो कैफ़ी सोचा करते कि क्या मैं भी कभी इनकी तरह शेर कह सकूँगा। कैफ़ी एक बार मुशायरे में बैठे तो इन्हें यह कह कर उठा दिया गया कि तुम्हें शायरी क्या समझ में आएगी, जाओ पान बनवा कर लाओ। कैफ़ी रोते हुए अपने बाजी के पास गए और उन्हें कहा, देखिए मेरे साथ क्या हुआ, मैं एक दिन इन सबसे बड़ा शायर बन कर दिखा दूंगा और वक़्त गवाह है कि कैफ़ी ने यह कर दिखाया।

इन्हीं दिनों की बात है, कैफ़ी के पिता बहराइच में थे और वहाँ एक मुशायरा हुआ। उन दिनों तरही मुशायरों का चलन था, इस मुशायरे की 'तरह' थी 'मेहरबां होता', 'राजदां होता' आदि। कैफ़ी ने एक शेर पढ़ा:

वह सबकी सुन रहे हैं, सबको दाद-ए-शौक देते हैं
कहीं ऐसे में मेरा किस्सा-ए-ग़म भी बयां होता

शेर को बहुत सराहा गया लेकिन लोगों ने दाद ऐसे दी कि आपकी याददाश्त बहुत तेज़ है कि आपने अपने भाई के लिखे शेर याद करके सुनाए। लोगों के कहने का तो उन्होंने बुरा नहीं माना लेकिन घर में पिताजी की भी यही सोच थी और यह बात कैफ़ी को खल गई। कैफ़ी रोने लगे। भाई शब्बीर ने कहा कि शेर इसके थे या नहीं इसके लिए इम्तिहान ले लेते हैं। इम्तिहान के लिए इन्हें 'तरह' दी गई 'इतना हंसो कि आँख से आंसू निकल पड़े'। भाई ने कहा कुछ दिनों का समय ले लो और इस तरह पर ग़ज़ल लिख कर लाओ। कैफ़ी ने दीवार की तरफ मुंह किया, कुछ देर तक सोचते रहे और फिर वहीं ग़ज़ल पढ़ी।

इतना तो ज़िन्दगी में किसी की ख़लल पड़े
हंसने से हो सुकून ना रोने से कल पड़े

जिस तरह हँस रहा हूँ मैं पी-पी के अश्क-ए-ग़म
यूं दूसरा हंसे तो कलेजा निकल पड़े

एक तुम के तुम को फ़िक्र-ए-नशेब-ओ-फ़राज़ है
एक हम के चल पड़े तो बहरहाल चल पड़े

मुद्दत के बाद उस ने जो की लुत्फ़ की निगाह
जी ख़ुश तो हो गया मगर आंसू निकल पड़े

ग्यारह साल की उम्र में लिखी गई ये कैफ़ी की पहली ग़ज़ल थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उस समय का कैफ़ी का लिखा आज कुछ भी उपलब्ध नहीं है। यह ग़ज़ल किसी तरह बेगम अख्तर के हाथ लग गई और उन्होंने इसे अपनी आवाज़ में गा कर सारे हिंदुस्तान और पाकिस्तान में मशहूर कर दिया।

कैफ़ी गांव के मदरसे में पढ़ रहे थे जबकि इनके तीनों बड़े भाई शहर में अंग्रेजी में पढ़ाई कर रहे थे। जब उनके भाई छुट्टियों में आते और उसके बाद जब वापस जाने लगते तब कैफ़ी बहुत रोते और शहर जाने की ज़िद करते थे। उनकी ये हसरत जल्द ही पूरी हो गई। उनके चाचा ने एक बार उन्हें खेत भेजा जहां फसल की कटाई हो रही थी। कटाई के बाद 20 गट्ठर जमींदार की होती थी और 1 फसल काटने वाले की। गांव की एक खूबसूरत लड़की भी फसल काट रही थी। उम्र का तकाजा था, लड़की की तरफ कैफ़ी का ध्यान गया और कैफ़ी उसे देखते ही रहे। लड़की ने भी जब देखा कि कैफ़ी उस पर मोहित हो रहे हैं तब उसने 20 गट्ठर तो छोटे-छोटे बांधे और अपनी वाली बड़ी गट्ठर बांधी। कैफ़ी का ध्यान तो उसे देखने में ही लगा रहा। लड़की ने अपनी वाली बड़ी गट्ठर उठाई और चलती बनी। कुछ देर बाद कैफ़ी के चाचा खेत पर आए और उन्होंने एक बुढ़िया, जिसने अपने लिए बड़ी गट्ठर बांध रखी थी, को डांट लगा दी। बुढ़िया ने शिकायत की कि कैफ़ी ने लड़की पर मोहित हो कर उसे तो बड़ी गट्ठर ले जाने दी और आप मुझे डांट रहे हो। इससे कैफ़ी के चाचा बहुत नाराज़ हुए और उन्होंने कैफ़ी को भी लखनऊ भेज दिया।

लखनऊ आने के बाद भी कैफ़ी को अंग्रेजी मीडियम में नहीं डाला गया। उनका दाखिला लखनऊ के सबसे बड़े मदरसे 'सुल्तानुल मदारिस' में बोर्डिंग में करवाया गया। कैफ़ी यहीं स्टूडेंट यूनियन के संपर्क में आए। यह दौर था जब कैफ़ी ने संजीदगी के साथ शायरी शुरू कर दी थी। शुरुआती दौर के कुछ ग़ज़ल तो इन्होंने बने-बनाए ढर्रे पर लिखे लेकिन इसके बाद उनकी रचनाओं में सामाजिक सरोकार और विद्रोह ने स्थान ले लिया। लखनऊ में जहां कहीं भी स्टूडेंट यूनियन आंदोलन करती, कैफ़ी वहां जा कर अपनी नज़्म सुनाते।

कैफ़ी अपने नज्मों की वजह से न सिर्फ विद्यार्थियों बल्कि शायरी के चाहनेवालों में भी मशहूर हो चुके थे। ऐसे ही किसी आंदोलन में जब कैफ़ी अपनी नज़्म पढ़ रहे थे तब एक बुजुर्ग ने रुक कर उनको सुना। बाद में उन्होंने कैफ़ी से बात की, उनसे नज़्म मांग कर ली और उन्हें अपने साथ चलने को कहा। जब कैफ़ी ने उनका परिचय पूछा तो उन्होंने अपना नाम अब्बास हुसैनी बताया। कैफ़ी बहुत खुश हुए, उन्होंने अब्बास हुसैनी को देखा नहीं था लेकिन उनके नाम से परिचित थे जो उर्दू साहित्य में बड़ा नाम रखते थे। अब्बास हुसैनी साहब ने कैफ़ी को कई लोगों से मिलवाया जिनमें अली सरदार जाफरी भी थे। यहीं से कैफ़ी का जुड़ाव कम्युनिस्ट विचारधारा से हुआ और यह उनकी शायरी में भी दिखा। अपनी एक प्रसिद्ध नज़्म में उन्होंने लिखा:

आज की रात बहुत गर्म हवा चलती है,
आज की रात न फुटपाथ पे नींद आएगी,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सब उठो, मैं भी उठूँ, तुम भी उठो, तुम भी उठो,
कोई खिड़की इसी दीवार में खुल जाएगी ।

कैफ़ी आज़मी का हैदराबाद से गहरा नाता है। उन दिनों हैदराबाद में मुशायरे हुआ करते थे जिनमें देश भर से प्रगतिशील लेखक/शायर जैसे साहिर, मजरुह, सरदार अली जाफरी, कैफ़ी आदि भाग लिया करते थे। ऐसे ही एक मुशायरे के लिए ये सब हैदराबाद आए हुए थे। उन दिनों मुशायरे में भाग लेने आए शायर अपने जान-पहचान वालों के यहाँ ही ठहरा करते थे। शौकत आज़मी के पिता हैदराबाद में मुशायरों का आयोजन करवाते थे और शायर इनके घर ही ठहरा करते थे। इस मुशायरे में कैफ़ी भी आए थे और पहली बार कैफ़ी ने शौकत को देखा। दो जवां दिलों की नजरें मिलीं। मुशायरे के बाद लड़कियाँ कैफ़ी के ऑटोग्राफ के लिए उनके पास जमा हो गईं। शौकत भी ऑटोग्राफ लेना चाहती थीं लेकिन उन्होंने भीड़ का हिस्सा बनना अच्छा नहीं समझा और सरदार अली जाफ़री के ऑटोग्राफ के लिए चली गईं। बाद में उन्होंने कैफ़ी का भी ऑटोग्राफ लिया। कैफ़ी ने शौकत की सहेलियों की डायरी में अच्छे शेर के साथ अपने ऑटोग्राफ दिए थे लेकिन शौकत की डायरी में यूँ ही कुछ लिख दिया था। अगले दिन घर पर शौकत ने कैफ़ी से इसकी शिकायत की तो कैफ़ी ने कहा कि दूसरी लड़कियाँ पहले मेरे पास आई थीं और तुम अली जाफ़री के पास चली गई इसलिए मैंने ऐसा किया। शौकत को हैरानी भी हुई और अच्छा भी लगा कि कैफ़ी ने उन्हें इतने गौर से देखा था।

इसके बाद दोनों ने घंटों बातें की। दोनों के जज़्बात एक-दूसरे के लिए पनपने लगे थे लेकिन बातों के दौरान पता चला कि कैफ़ी की शादी अगले तीन महीने में होने वाली थी और शौकत का रिश्ता भी कहीं तय हो चुका था। इस मुहब्बत में इजहार से पहले ही अड़चन आ गई, लेकिन दोनों एक दूसरे को अच्छे लगे। हैदराबाद से कैफ़ी, मजरुह और शौकत का परिवार औरंगाबाद घूमने गए जहां दोनों ने एक दूसरे से प्यार का इज़हार किया। औरंगाबाद से हैदराबाद आने के बाद मजरुह तो बंबई लौट गए लेकिन कैफ़ी हैदराबाद रुक गए।

शौकत और कैफ़ी यहाँ एक-दूसरे के और नजदीक आए लेकिन ये नजदीकी शौकत के परिवार को पसंद नहीं आई और शौकत को कैफ़ी से मिलने से मना कर दिया गया। थोड़े दिनों बाद कैफ़ी को भी बंबई लौट जाने को कह दिया गया और बिना शौकत से मिले कैफ़ी बंबई लौट गए। शौकत इस घटना से बहुत उदास हुईं, उन्होंने कैफ़ी के कमरे में जा कर देखा तो कैफ़ी ने उनके लिए एक ख़त छोड़ा था और अपना बंबई का पता भी लिखा था। शौकत की उदासी को उमड़ आई मुहब्बत ने दबा दिया।

पता मिला तो चिट्ठियों का दौर शुरू हुआ। घर पर चिट्ठियाँ तो मंगवाई नहीं जा सकती थी इसलिए शौकत ने अपने एक रिश्ते के भाई के स्कूल का पता लिख कर कैफ़ी को ख़त लिखा और फिर दोनों एक दूसरे को एक-एक दिन में 7-8 ख़त लिखने लगे। लेकिन जल्द ही घरवालों को चिट्ठियों के जरिए पनपती प्रेम कहानी का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पता चल गया और पाबंदियाँ और बढ़ा दी गई। उधर कई दिनों तक जब शौकत की कोई चिट्ठी कैफ़ी को नहीं मिली तो उन्होंने अपने खून से लिख कर एक चिट्ठी शौकत को भेजी। उस चिट्ठी को पढ़ कर शौकत ने निश्चय कर लिया कि अब घर में खुल कर बात करनी ही पड़ेगी। उन्होंने अपने पिता से बात की लेकिन उनके पिता ने ये कहते हुए बात टाल दी कि शायर लोग बात बनाने में उस्ताद होते हैं। उसने अपने खून से नहीं किसी बकरे के खून से चिट्ठी लिखी होगी।

इधर कैफ़ी की बेचैनी बढ़ती जा रही थी। तब कैफ़ी कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर थे। उनके दोस्त कैफ़ी की मदद के लिए आगे आए। उनके एक दोस्त हैदराबाद आ कर शौकत के पिताजी से मिले और उन्हें इस रिश्ते के लिए मनाया। घर में विरोध को देखते हुए शौकत के पिता ने शौकत से कहा कि मैं तुम्हें कहीं और ले जाने के बहाने बंबई ले चलता हूँ। तुम बंबई देख लो, अगर तुम्हें लगे कि तुम वहां रह सकती हो तो मैं घर में बिना बताए तुम्हारी शादी कैफ़ी से करवा दूंगा। शौकत को मुंह मांगी मुराद मिल गई, अपने पिता के साथ शौकत बंबई के सफ़र पर निकल पड़ीं। शौकत अपने पिता के साथ कैफ़ी से मिलीं। उन दिनों कैफ़ी कम्युनिस्ट पार्टी के लिए काम करते थे और उन्हें पार्टी की तरफ से चालीस रुपए महीना मिलता था। पार्टी त्रैमासिक पत्रिका 'नया अदब' निकालती थी, कैफ़ी उसके संपादक थे। कैफ़ी का जीवन बहुत सादगी भरा था और शौकत अच्छे परिवार से आई थीं। उनके पिता को लगा था, कैफ़ी की हालत देख कर शौकत उनके साथ हैदराबाद लौट जाएंगी,लेकिन शौकत ने कैफ़ी से ही निकाह करने की बात कही और उनके पिता ने कैफ़ी के दोस्तों की उपस्थिति में बंबई में ही इन दोनों का निकाह करवा दिया। उनके पिता के पास उस वक्त 500 रुपये थे जो वह अपनी बेटी को दे कर हैदराबाद लौट आए।

ख़ुद को खोकर तुझको पा कर क्या-क्या मिला क्या कहूँ
तेरा होके जीने में क्या-क्या आया मज़ा क्या कहूँ
कैसे दिन हैं कैसी रातें कैसी फ़िज़ा क्या कहूँ
मेरी होके तूने मुझको क्या-क्या दिया क्या कहूँ
मेरी पहलू में जब तू है फिर मैं दुआ क्या करूँ
दिल भी तू है, जाँ भी तू है, तुझपे फ़िदा क्या करूँ

शादी तो हो गई लेकिन समस्या अब घर चलाने की थी। कम्युनिस्ट पार्टी से कैफ़ी को ज्यादा पैसे नहीं मिलते थे, कैफ़ी को रहने और अपने खाने का पैसा पार्टी को देना होता था। अब कैफ़ी को शौकत के खाना खाने के पैसे भी भरने थे। और पैसे कमाने के लिए कैफ़ी ने एक उर्दू अखबार 'जम्हूरियत' के लिए लिखना शुरू किया। शौकत अपने पति को इतना काम करते देख परेशान थीं। उन्होंने भी कुछ काम करने की सोची। अपने स्कूल के दिनों में शौकत नाटकों में भाग लिया करती थीं और उनकी आवाज़ भी अच्छी थी। कैफ़ी साहब के एक दोस्त की पत्नी एस.डी. बर्मन के एक गाने में कोरस गाने वाली थीं, उन्होंने शौकत को भी बर्मन साहब से मिलवाया और बर्मन दा को शौकत की आवाज़ अच्छी लगी। इस गाने को मुकेश

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ने गाया था और कोरस में शौकत ने भाग लिया। इसके लिए उन्हें 30 रुपए मिले थे। इसके बाद उन्हें डबिंग के काम मिलने लगे और इसके लिए उन्हें महीने के 200 से 500 रुपए तक मिलने लगे।

इन्हीं दिनों शौकत को इस्मत चुगताई द्वारा लिखे नाटक में काम करने का मौका मिला,जिसे भीष्म साहनी ने डायरेक्ट किया था और इसमें जोहरा सहगल ने भी काम किया था। इसके बाद शौकत ने एक और नाटक 'घोस्ट ट्रेन' किया, जिसमें उन्होंने बलराज साहनी के साथ काम किया। इस नाटक का पहला मंचन अहमदाबाद में हुआ जिसे बारह हजार लोगों ने देखा और सराहा, लेकिन अब भी उन्हें काम लगातार नहीं मिल रहा था और गृहस्थी की गाड़ी अब भी सुचारु रूप से नहीं चल रही थी। इन दुश्वारियों के बीच 1948 में कैफ़ी और शौकत के घर नया मेहमान आने वाला था। कैफ़ी, शौकत के साथ लखनऊ अपने परिवार के पास आ गए। यहीं 26 अप्रैल 1948 को लखनऊ में उन्हें बेटा हुआ जिसका नाम खैय्याम रखा गया। गांव में आमदनी का कोई साधन नहीं था इसलिए शौकत को लखनऊ में छोड़ कर कैफ़ी वापस बंबई आ गए। एक महीने बाद उन्होंने शौकत को भी बंबई बुला लिया। लेकिन अब तक बंबई के हालात बदल चुके थे, पार्टी दफ़्तर के कई लोग पाकिस्तान चले गए थे। पहले जहां सब लोग साथ रहा करते थे, वह जगह अब बंद हो गई थी।

उधर शौकत के घर हैदराबाद में भी सब ठीक नहीं था। उनके पिताजी रिटायर हो चुके थे। उनके दो भाई बंटवारे के बाद पकिस्तान चले गए और हाल में ही उनकी एक बहन का हार्ट अटैक से निधन हो गया था। लेकिन शौकत का मन बंबई में नहीं लगा और वह अपने बेटे के साथ हैदराबाद चली गईं। खैय्याम जब ग्यारह महीने का था तो उसे बुखार हुआ। कैफ़ी के पास तब कोई काम नहीं था, शौकत के पास पैसे नहीं थे और वह अपने घरवालों पर बोझ नहीं बनना चाहती थीं। शौकत एक होमियोपैथ डॉक्टर जो उनके परिवार से पैसे नहीं लेता था, उससे दवा ले कर आईं। दवा से कोई फायदा नहीं हुआ, दो-तीन बार दवा बदल कर देख लिया लेकिन बुखार ठीक नहीं हुआ। उनके पिता ने एलोपैथिक डॉक्टर से दिखाने को कहा तो शौकत ने कहा कि नहीं वे मेरे बेटे को मार डालेंगे जबकि हकीकत यह थी कि उनके पास डॉक्टर को देने के लिए पैसे नहीं थे।

जब तबीयत बिगड़ने लगी तो खय्याम को डॉक्टर जोसुरिया (जो सरोजिनी नायडू के बेटे थे) से दिखाया गया। उन्होंने बताया कि खय्याम को टी.बी. है और वह 12 घंटे से ज्यादा नहीं बचेगा। 26 अप्रैल को खय्याम का जन्मदिन था जिसके लिए शौकत ने बड़े प्यार से एक कुर्ता सिला था लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। 19 अप्रैल को खय्याम की मृत्यु हो गई, टी.बी. ने कैफ़ी के परिवार का एक और चिराग बुझा दिया। कैफ़ी हताश थे, शौकत बुरी तरह टूट गई थीं।

इस घटना के बाद कुछ दिनों तक तो शौकत हैदराबाद रहीं फिर बंबई आ गईं। लेकिन बंबई के हालात बहुत बदल चुके थे, कम्युनिस्ट पार्टी पर प्रतिबंध लगा दिया गया था, पार्टी के सभी कार्यकर्ता भूमिगत हो गए थे जिनमें कैफ़ी भी थे। उन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिनों शौकत को भी कैफ़ी से मिलना होता था तो किसी कामरेड की मदद से ही मुलाकात हो पाती थी क्योंकि सिर्फ उन्हें पता होता था कैफ़ी कहाँ हैं। शौकत ने यह समय किसी तरह काटा।

1950 में शौकत जब दूसरी बार माँ बनने वाली थीं तो पार्टी ने उन्हें गर्भपात करवा लेने को कहा। कैफ़ी अभी भी भूमिगत थे, आमदनी का कोई जरिया नहीं था, ऐसे में पार्टी के सदस्यों को चिंता थी कि बच्चे की परवरिश कैसे होगी। लेकिन शौकत इस सलाह को न मानते हुए हैदराबाद आ गईं। कैफ़ी और शौकत की अच्छी दोस्त थीं इस्मत चुगताई। जब उन्हें यह बात पता चली तो उन्होंने अपने शौहर शाहिर लतीफ़ जो फ़िल्म बनाते थे, से कहा कि आप अपनी फिल्मों के लिए कैफ़ी से गाने क्यों नहीं लिखवाते, इससे उनकी कुछ मदद हो जाएगी। कैफ़ी ने तब तक फिल्मों के लिए गाने नहीं लिखे थे लेकिन शाहिर लतीफ़ के दबाव में उन्होंने दो गाने लिखे जिसके बदले में शाहिर लतीफ़ ने एक हजार रुपया शौकत को हैदराबाद भिजवाया।

17 सितम्बर 1950 को शौकत ने हैदराबाद में एक बेटी को जन्म दिया जिसका नाम उन्होंने शबाना आज़मी रखा। शबाना जब साढ़े तीन साल की थी तब 13 सितम्बर 1953 को उनके भाई बाबा आज़मी का जन्म हुआ। बाबा आज़मी का नाम यूं तो अहमेर आज़मी रखा गया लेकिन बड़े हो कर इन्होंने दक्षिण की फिल्मों में सिनेमेटोग्राफर का बहुत काम किया जहाँ लोगों को इनका नाम लेने में कठिनाई होती थी इसलिए लोगों ने इन्हें इनके घर के नाम बाबा आज़मी से संबोधित करना शुरू कर दिया और अब सब इन्हें बाबा आज़मी के नाम से ही जानते हैं।

कैफ़ी आज़मी यूँ तो फिल्मों में गाने लिखने लगे थे जिससे उन्हें कुछ आमदनी होने लगी थी लेकिन फ़िल्मों में उन्हें पहली बड़ी सफलता फ़िल्म 'काग़ज के फूल' (1959) से मिली। उनके लिखे दो गाने 'देखी ज़माने की यारी, बिछड़े सभी बारी-बारी' और 'वक़्त ने किया, क्या हसीं सितम, तुम रहे न तुम हम रहे न हम' बड़े हिट साबित हुए लेकिन फ़िल्म नहीं चली और गुरूदत्त डिप्रेशन में चले गए। इसके बाद फ़िल्म शोला और शबनम के साथ भी यही हुआ। कैफ़ी के लिखे गाने 'जाने क्या ढूंढती रहती हैं ये आँखें मुझमें' और 'जीत ही लेंगे बाजी हम-तुम' बेहद सफल रहे लेकिन फ़िल्म नहीं चली। जब ऐसा ही कई और फ़िल्मों के साथ हुआ तब फ़िल्म इंडस्ट्री में यह बात फैल गई कि कैफ़ी साहब गाने तो बढ़िया लिख लेते हैं लेकिन जिस फ़िल्म के लिए कैफ़ी गाने लिखते हैं वह फ़िल्म नहीं चलती। इस बात के फैलते ही लोगों ने कैफ़ी से किनारा करना शुरू कर दिया।

इसी दौर में 1963-64 में एक दिन चेतन आनंद, कैफ़ी आज़मी से मिलने आए और कहा कैफ़ी साहब, बहुत दिनों के बाद मैं एक फिल्म बना रहा हूं। मैं चाहता हूं कि मेरी फ़िल्म के गाने आप लिखें। कैफ़ी साहब ने कहा मुझे इस वक़्त काम की बहुत ज़रूरत है और आपके साथ काम करना मेरे लिए बहुत बड़ी बात है, लेकिन लोग कहते हैं कि मेरे सितारे गर्दिश में हैं। चेतन आनंद ने कहा मेरे बारे में भी लोग यही कहते हैं। मैं मनहूस समझा जाता हूं। चलिए, क्या पता दो निगेटिव

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिलकर एक पॉजिटिव बन जाएँ। आप इस बात की फ़िक्र न करें कि लोग क्या कहते हैं। इन दोनों ने साथ काम किया, फ़िल्म थी हक़ीकत जिसने इतिहास रच दिया। फ़िल्म भी सफल रही और इसके गाने भी। इस फ़िल्म के लिए कैफ़ी ने कई यादगार गाने जैसे 'हो के मजबूर मुझे उसने भुलाया होगा', 'मैं ये सोचकर उसके दर से उठा था', 'जरा सी आहट होती है तो दिल सोचता है', 'कर चले हम फ़िदा जान-ओ-तन साथियों' लिखा और साथ ही शुरू हुआ फ़िल्मों में उनकी कामयाबी का दौर। गाने लिखने के बारे में कैफ़ी आज़मी ने खुद लिखा ''उस जमाने में फ़िल्मों में गाने लिखना एक अजीब ही चीज थी। आम तौर पर पहले ट्यून बनती थी। उसके बाद उसमें शब्द पिरोए जाते थे। ये ठीक ऐसे ही था कि पहले आपने क़ब्र खोद ली, फिर उसमें मुर्दे को फिट करने की कोशिश करें। तो कभी मुर्दे का पैर बाहर रहता था तो कभी कोई अंग। मेरे बारे में फ़िल्मकारों को यकीन हो गया कि ये मुर्दे ठीक गाड़ लेता है, इसलिए मुझे काम मिलने लगा।''

कैफ़ी साहब ने 80 से भी ज्यादा फ़िल्मों के लिए गाने लिखे। 1969-70 में चेतन आनंद एक फिल्म बना रहे थे जिसके लिए उन्होंने एक प्रयोग करने की सोची। उन्होंने कैफ़ी साहब से फ़िल्म के सारे संवाद शायरी में लिखने को कहा। कैफ़ी साहब ने सारे संवाद शायरी में लिखे और इस फ़िल्म के गाने भी लिखे। फ़िल्म थी 'हीर रांझा'। हिंदी सिनेमा में इस तरह का प्रयोग पहले नहीं हुआ था। कैफ़ी साहब ने इसके लिए बहुत मेहनत की। उनकी तबीयत पहले से ही ठीक नहीं थी, उन्हें हाई ब्लड प्रेशर था। कैफ़ी साहब सिगरेट बहुत पीते थे। इस फ़िल्म के लिए कई रात जागकर काम करते रहे। हीर रांझा बहुत बड़ी हिट साबित हुई। इसके गाने जैसे - 'मिलो न तुम तो हम घबराएं', 'ये दुनिया ये महफ़िल मेरे काम की नहीं', 'तेरे कूचे में तेरा दीवाना आज दिल दे बैठा' लोगों की ज़बान पर चढ़ गए।

9 फरवरी 1973 को कैफ़ी साहब को एक मुशायरे में जाना था। जब जाने के लिए कैफ़ी अपनी कुर्सी से उठे तो उनके पांव लड़खड़ा रहे थे। शौकत ने पूछा आप ठीक तो हैं? तो उन्होंने कहा अपनी बीवी की एक नज़र मेरा संतुलन बिगाड़ने के लिए काफी है। उस रात मुशायरे में ही उन्हें ब्रेन हैम्रेज हुआ, ब्रीच कैंडी हॉस्पिटल में उनका लम्बा इलाज चला फिर भी वे पूरी तरह ठीक नहीं हुए। बाद में उन्हें इलाज के लिए रूस ले जाया गया जहाँ उनकी तबीयत थोड़ी ठीक हुई। रूस से वापस आने के बाद कैफ़ी साहब ने फिर से मुशायरों में जाना शुरू कर दिया लेकिन अब उन्होंने फ़िल्मों के लिए गाने लिखना कम कर दिया।

1982 में महेश भट्ट ने फिल्म बनाई अर्थ। इसके संगीतकार थे जगजीत सिंह और इस फिल्म के लिए तीन गाने कैफ़ी आज़मी ने लिखे थे। 'झुकी-झुकी सी नज़र बेकरार है कि नहीं', 'तुम इतना जो मुस्कुरा रहे हो', 'कोई ये कैसे बताए कि वो तन्हा क्यों है' - तीनों गाने सफल रहे। शबाना आज़मी ने इसमें अभिनय किया था और उन्हें बेहतरीन अभिनय के लिए फिल्म फेयर और राष्ट्रीय पुरस्कार से नवाज़ा गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कैफ़ी ऐसे शायर रहे जिन्होंने अपनी शायरी और अपने फ़िल्मी गीतों, दोनों से इज्जत कमाई। कैफ़ी के लिए व्यक्तिगत संबंध, पैसे से ज्यादा अहमियत रखते थे। उन्होंने कभी पैसे की वजह से काम करने से मना नहीं किया, न जाने कितने गाने कैफ़ी ने लिखे जिसके लिए उन्हें पैसे नहीं मिले। कैफ़ी की शायरी में जो सामाजिक सरोकार रहे, कैफ़ी ने उन्हें अपनी जिंदगी में निभाया भी। कैफ़ी ने जब फ़िल्मों के लिए गाने लिखने कम कर दिए तब उन्होंने अपने गांव मीजवां की याद आई और वह मुंबई छोड़ कर मीजवां आ गए। कैफ़ी ने मीजवां वेलफ़ेयर सोसायटी के अंतर्गत समाज सेवा के कई काम जैसे लड़कियों के लिए हायर सेकेंडरी स्कूल, इंटर कॉलेज, कम्प्यूटर ट्रेनिंग सेंटर और एम्ब्रॉयडरी व सिलाई सेंटर जैसे काम किए। ये सारे काम कैफ़ी ने बिना किसी सरकारी मदद के अपने दम पर की। कैफ़ी ने अपनी जिंदगी के बीस साल अपने गांव मीजवां को दिए। सरकार ने भी कैफ़ी के इस प्रयास को सराहा और उनके साहित्यिक और सामाजिक योगदान को देखते हुए उनके गांव मीजवां जाने वाली सड़क का नाम कैफ़ी आज़मी रोड, सुल्तानपुर-फूलपुर हाईवे का नाम कैफ़ी आज़मी हाई-वे, दिल्ली से आज़मगढ़ ट्रेन का नाम कैफ़ियत एक्सप्रेस, मुंबई के जुहू में पार्क का नाम कैफ़ी आज़मी पार्क, दिल्ली में आर.के. पुरम के पास सड़क का नाम कैफ़ी आज़मी रोड रखा।

झंकार, आखिरे-शब, आवारा सिज्दे, दूसरा वनवास, और इब्लीस की मजिलसे शूरा कैफ़ी आज़मी की प्रमुख प्रकाशित नज़्मों और ग़ज़लों के संग्रह हैं। कैफ़ी आज़मी ने एक बार शौकिया तौर पर अभिनय भी किया था। उन्होंने सईद मिर्ज़ा की फ़िल्म 'नसीम' (1997) में अभिनय किया था। फ़िल्म का यह किरदार पहले अभिनेता दिलीप कुमार करने वाले थे। कैफ़ी आज़मी लिखने के लिए केवल 'मॉन्ट ब्लाँक पेन' का इस्तेमाल करते थे। यही उनकी एक मात्र महंगी शौक थी। उनकी पेन की सर्विसिंग न्यूयॉर्क के 'फाउंटेन हॉस्पिटल' में होती थी। जब उनकी मृत्यु हुई, तो उनके पास अट्ठारह मॉन्ट ब्लाँक पेन थे। कैफ़ी साहब ने 1997 में एक फ़िल्म 'चंद्र ग्रहण' के लिए गाना लिखा था लेकिन यह फ़िल्म रिलीज नहीं हो सकी।

कैफ़ी आज़मी को 'सात हिंदुस्तानी' (1969) के लिए सर्वश्रेष्ठ गीतकार के 'राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। उन्हें फ़िल्म गर्म हवा (1975) के लिए सर्वश्रेष्ठ कथा, पटकथा एवं संवाद के लिए फ़िल्मफेयर पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। कैफ़ी आज़मी को आवारा सिज्दे के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार के अलावा साहित्य अकादमी फेलौशिप अवार्ड, महाराष्ट्र गौरव अवार्ड - महाराष्ट्र सरकार, दिल्ली सरकार राज्य अवार्ड, सोवियत लैंड नेहरू अवार्ड, अफ्रो-एशियन राइटर्स लोटस अवार्ड, यश भारतीय अवार्ड उ.प्र.सरकार जैसे पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

भारत सरकार के उनके साहित्यिक योगदान को देखते हुए उन्हें पद्म श्री सम्मान से सम्मानित किया। कैफ़ी आज़मी का निधन 10 मई 2002 को दिल का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh-Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दौरा पड़ने के कारण मुंबई में हुआ। जावेद अख्तर ने कैफ़ी आज़मी को श्रद्धांजलि देते हुए एक नज़्म लिखा:

अजीब आदमी था वो

मोहब्बतों का गीत था, बग़ावतों का राग था
कभी वो सिर्फ़ फूल था, कभी वो सिर्फ़ आग था
अजीब आदमी था वो

वो मुफ़लिसों से कहता था, कि दिन बदल भी सकते हैं
वो जाबिरों से कहता था, तुम्हारे सर पे सोने के जो ताज हैं,
कभी पिघल भी सकते हैं
वो बंदिशों से कहता था, मैं तुम को तोड़ सकता हूँ
सहूलतों से कहता था, मैं तुम को छोड़ सकता हूँ
हवाओं से वो कहता था, मैं तुम को मोड़ सकता हूँ

वो ख़्वाब से ये कहता था, कि तुझ को सच करूँगा मैं
वो आरिज़ों से कहता था, मैं तेरा हम-सफ़र हूँ, तेरे साथ ही चलूँगा मैं
तू चाहे जितनी दूर भी बना ले अपनी मंज़िलें, कभी नहीं थकूँगा मैं

वो ज़िंदगी से कहता था, कि तुझ को मैं सजाऊँगा
तू मुझ से चाँद माँग ले, मैं चाँद ले के आऊँगा
वो आदमी से कहता था, कि आदमी से प्यार कर
उजड़ रही है ये ज़मीं, कुछ इस का अब सिंगार कर
अजीब आदमी था वो

वो ज़िंदगी के सारे ग़म, तमाम दुख,
हर इक सितम से कहता था, मैं तुम से जीत जाऊँगा
कि तुम को तो मिटा ही देगा, एक रोज़ आदमी
भुला ही देगा ये जहाँ, मेरी अलग है दास्ताँ
वो आँखें जिन में ख़्वाब हैं, वो दिल है जिन में आरज़ू
वो बाज़ू जिन में है सकत, वो होंठ जिन पे लफ़्ज़ हैं
रहूँगा उन के दरमियाँ, कि जब मैं बीत जाऊँगा
अजीब आदमी था वो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साहित्य में जितना आवश्यक है नए रचनाकारों को प्रोत्साहन और नए शिल्प का निर्माण और मूल्यांकन, उससे कहीं ज्यादा आवश्यक है हमारे धरोहर को संजो कर रखना। संजोने का आशय यह नहीं कि हमारे पूर्वकालिक साहित्यकारों की रचनाओं को कहीं संजो कर रख दिया जाय और फिर उसे भूल जाया जाय। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम बार-बार उनकी रचनाओं को पढ़ें और समझें कि आख़िर ये रचनाएँ काल की सीमाओं को तोड़ कर इतनी प्रसिद्ध क्यूँ हुईं। पुष्पक साहित्यिकी में 'धरोहर' के अंतर्गत हम आपका परिचय उन चुनिन्दा रचनाकारों और उनकी चुनी हुई रचनाओं से करवाएँगे जिनकी जन्मतिथि या पुण्यतिथि पत्रिका के प्रकाशन अंक के महीनों में होगी। हमारा ये प्रयास आपको कैसा लगा, हमें ये जानने की उत्सुकता रहेगी। अपने सुझाव pushpakhyderabadgmail.com पर भेजें। - प्रवीण प्रणव

मोहन राकेश

(8 जनवरी 1925 - 3 जनवरी 1972)

मोहन राकेश का जन्म अमृतसर, पंजाब में हुआ था। उनके पिता पेशे से वकील थे और साथ ही साहित्य और संगीत के प्रेमी भी थे। पिता की साहित्यिक रुचि का प्रभाव मोहन राकेश पर भी पड़ा। मोहन राकेश ने पहले लाहौर के 'ओरियंटल कॉलेज' से 'शास्त्री' की परीक्षा पास की। किशोरावस्था में सिर से पिता का साया उठने के बावजूद उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और पढ़ाई जारी रखी। इसके बाद उन्होंन 'पंजाब विश्वविद्यालय' से हिन्दी और अंग्रेज़ी में एम.ए. किया। उन्होंने अनेक वर्षों तक दिल्ली, जालंधर, शिमला और मुम्बई में अध्यापन का कार्य किया। बाद में मोहन राकेश ने अध्यापन का काम छोड़ दिया और एक वर्ष तक उन्होंने 'सारिका' पत्रिका का सम्पादन किया। इसके बाद इस काम को भी छोड़ कर जीवन के अन्त तक स्वतंत्र लेखन करते रहे। मोहन राकेश को आरंभिक सफलता कहानियों से मिली लेकिन नाटक के लिए इनके काम ने इन्हें पहचान दिलाया। हिन्दी नाट्य साहित्य में भारतेंदु हरिश्चंद्र और जयशंकर प्रसाद के बाद यदि कोई लीक से हटकर नाम उभरता है तो वह मोहन राकेश का है। वर्ष 1968 में मोहन राकेश को 'संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था।

प्रमुख कृतियाँ: उपन्यास - अंधेरे बंद कमरे, अन्तराल, न आने वाला कल। नाटक - आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे अधूरे, पैर तले की जमीन (अधूरा, कमलेश्वर ने पूरा किया) । एकांकी - अण्डे के छिलके कहानी संग्रह -क्वार्टर तथा अन्य कहानियाँ, पहचान तथा अन्य कहानियाँ, वारिस तथा अन्य कहानियाँ। निबंध संग्रह - परिवेश, अनुवाद - मृच्छकटिक,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Digitized by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शाकुंतलम। यात्रा वृताँत - आखिरी चट्टान। धरोहर के इस अंक में प्रस्तुत है मोहन राकेश का निबंध 'कहानी क्यों लिखता हूँ' जो हमें उनकी लेखन प्रक्रिया से परिचित करवाता है।

कहानी क्यों लिखता हूँ

क्यों?...इस प्रश्न का उत्तर देना कठिन है। जीवन में हम कोई भी काम क्यों करते हैं? हँसते क्यों हैं? रोते क्यों हैं? प्रसन्न, चिंतित या व्याकुल क्यों होते हैं? इसका एक मात्र उत्तर यही है कि ऐसा होना स्वाभाविक है। जीवन की हर परिस्थिति की हम पर कोई न कोई प्रतिक्रिया होती है। हम कितना भी चाहें उस प्रतिक्रिया से बच नहीं सकते। हवा चलती है तो वृक्ष के पत्ते अवश्य हिलते हैं। यह पूछने से कि भाई इस तरह क्यों हिलते हो, वे क्या उत्तर देंगे? यही कि हम बने ऐसे हैं कि हवा का स्पर्श हमें चंचल कर देता है।

हम में से हर व्यक्ति प्रतिदिन का जीवन जीता हुआ बहुत कुछ महसूस करता है, बहुत कुछ सोचता है। परन्तु हर व्यक्ति की महसूस करने और सोचने की प्रक्रिया अपनी-अपनी होती है और इसलिए परिणाम भी अलग-अलग होता है। कोई केवल घुटकर रह जाता है, कोई हँस-रोकर बात टाल देता है, कोई परिस्थितियों से जूझने के लिए क्षेत्र में उतर आता है और कोई उनके सम्बन्ध में लिखकर संतुष्ट हो लेता है। मुझे जीवन के सम्बन्ध में अपनी प्रतिक्रियाओं को लिखकर व्यक्त करना स्वाभाविक लगता है इसलिए मैं लिखता हूँ। कहानी क्यों लिखता हूँ, इसका उत्तर देने के लिए अपने आज तक के जीवन के कुछ टुकड़े इकट्ठे करना आवश्यक होगा।

जब हम पाँचवीं या छठी जमात में पढ़ते थे तो बाज़ार से 'सखी लुटेरा' और 'बहराम डाकू' जैसे उपन्यास घरवालों से चोरी से किराये पर लाकर पढ़ा करते थे। उन दिनों हमें भी अपने पैरों के नीचे की सारी ज़मीन सुरंगों और तहख़ानों से भरी प्रतीत होती थी और हम उन तहख़ानों के रहस्योद्घाटन की बातें सोचा करते थे। हम दो साथी थे। बाज़ार में बहराम डाकू की ज़िन्दगी के जितने उपन्यास मिल सकते थे वे सब पढ़ चुकने पर हम दोनों इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि उससे आगे की उसकी ज़िन्दगी का वृतांत लिपिबद्ध करने का दायित्व अब हम पर ही है और हम दोनों ने मिलकर इस काम को कर डालने का निश्चय किया। पहली किस्त लिखकर मैंने अपने उस मित्र को दे दी कि वह दूसरी किस्त लिखे। मगर उसका भविष्य उसे एक साबुन के कारख़ाने की तरफ़ ले जा रहा था, इसलिए वह दूसरी किस्त कभी नहीं लिखी गयी। इस बात पर उससे लड़ाई हो गयी और बहराम डाकू सदा के लिए तहख़ाने में बन्द हो गया।

कॉलेज के दिनों में मुझे कविता लिखने का शौक़ पैदा हुआ। एक तो इसलिए कि कविता ही एक ऐसी चीज़ है जो सुनायी जा सकती है और उन दिनों सुनाना हमारे लिए लिखने से अधिक महत्त्वपूर्ण था, और दूसरे इसलिए कि हमें विश्वास था कि साहित्य का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग कविता ही है। यह विश्वास मैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समझता हूँ कि हिन्दी के बहुत-से आलोचकों को अभी तक बना हुआ है जो साहित्य की चर्चा करते समय वाल्मीकि से आरम्भ करते हैं और नई प्रयोग-शील कविता पर आकर दम तोड़ देते हैं। उन दिनों की मेरी कविताएँ या तो उस समय की प्रचलित शैली का अनुकरण-मात्र थीं, या व्यंग्यात्मक। परन्तु शीघ्र ही मुझे महसूस होने लगा कि मैं जब ईमानदारी से लिखता हूँ तो कविता, कविता नहीं रहती...उसमें बहुत अंश तक प्रक्थन और विवरण आ जाता है। परिणामतः यूनिवर्सिटी के जीवन में मैंने कहानी लिखना आरम्भ किया। उसके बाद ज्यों-ज्यों जीवन और जीवन को प्रभावित करनेवाली परिस्थितियों से अधिक गहरा परिचय हुआ, मैंने यह पाया कि अपने और दूसरों के जीवन के जो सूक्ष्म द्वन्द्व और अन्तर द्वन्द्व मेरे सामने आते हैं, वे सब बातें जो मुझे दुखी, प्रसन्न या उदास छोड़ जाती हैं, उन्हें मैं कहानी के माध्यम से अधिक सफलतापूर्वक व्यक्त कर पाता हूँ। यूँ तो पिछले दस वर्ष में मैंने कहानी के अतिरिक्त नाटक और निबंध भी लिखे हैं, परन्तु किसी भी परिस्थिति को ठीक से पकड़ पाने या अभिव्यक्त कर पाने का जो संतोष मुझे कहानी लिखकर मिलता है वह दूसरी रचनाओं में नहीं मिलता। यद्यपि कहानी की कलात्मक सीमाएँ अपना अंकुश लगाये रखती हैं...क्योंकि कहानी ही एक ऐसी चीज़ है जिसके बिखर जाने की बहुत संभावना रहती है और कई बार व्यक्ति स्वयं भी नहीं पहचान पाता कि वह जो लिख रहा है वह केवल एक स्केच या रिपोर्ताज ही तो नहीं...फिर भी कहानी लिखने में मैंने यह सुविधा पायी है कि जीवन के किसी भी टुकड़े, किसी भी मूड, किसी भी चरित्र या किसी भी घटना को कहानी के अंतर्गत ईमानदारी से उतारा जा सकता है। कहानी छोटी भी लिखी जा सकती है और बड़ी भी, मगर बात उस नुक़्ते को पकड़ने की है, जीवन के उस व्यंग्य, संवेदना, विरोध या अन्तर विरोध को शब्दों में उतारने की है जो कई बार अपनी सूक्ष्मता के कारण पकड़ में नहीं आता। बात वही साधारण होती है। वही जीवन हम सब जीते हैं। लगभग एक-सी परिस्थितियों से हम सभी को गुज़रना पड़ता है। कोई भी अच्छी कहानी हम पढ़ें, जीवन का वह खंड-सत्य हमारे लिए अपरिचित नहीं होता। उस सत्य को कैसे उठाना है, कितनी बात कहनी है और किन सार्थक शब्दों में कहनी है...यह जानना ही संभवतः कहानी कहने की कला है। हम जानते हैं कि अपरिचित और असाधारण जीवन को चित्रित करनेवाली रचनाएँ उतनी लोकप्रिय नहीं होतीं जितनी साधारण, रोज़मर्रा के जीवन को चित्रित करनेवाली रचनाएँ। मैं साधारण जीवन जीता हूँ और हर दृष्टि से एक बहुत साधारण व्यक्ति हूँ। इसलिए भी कहानी लिखना, अपनी इस साधारणता के वातावरण को कहानी में ढालना, मुझे बहुत स्वाभाविक लगता है।

कुछ ही दिनों की बात है, लखनऊ में मेरे एक मित्र जो एक सुपरिचित कहानीकार हैं, मुझसे कह रहे थे कि बम्बई में रहते हुए वे जब भी दादर के लम्बे पुल पर से गुज़रे हैं तो उनका मन हुआ कि उस पुल के जीवन के एक क्षण को किसी कहानी में कैप्चर करें, मगर यह चीज़ अभी तक उनसे बन नहीं पायी। बहुत साधारण-सी बात है लेकिन यह दो बातों पर प्रकाश डालती है। पहली बात तो यह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कि कहानी लिखनेवाले को रास्ता चलते कहीं कहानी मिल सकती है...कोई भी साधारण पदार्थ कहानी के नायक के रूप में अपने को उसके सामने प्रस्तुत कर सकता है। और दूसरी बात यह कि उस साधारण पदार्थ की कहानी लिख देना लेखक के लिए उतनी आसान और साधारण बात नहीं होती। साहित्यिक आलोचक तो उसकी प्रताड़ना बाद में करेंगे, सबसे पहले उसे डाँट बतानेवाला और उसकी दिनों की मेहनत पर सिर हिला देनेवाला एक आलोचक उसके अपने अन्दर ही रहता है। साहित्यिक आलोचक तो यही जानता है कि उसने क्या और कितना लिखा है, परन्तु वह अन्दर का आलोचक यह भी जानता है कि वह क्या लिखना चाहता था और नहीं लिख पाया। उससे न वह कुछ छिपा सकता है, और न ही किसी तरह की व्याख्या से उसे संतुष्ट कर सकता है। मेरे मन में प्रायः: कहानी लिखने के बाद यह असन्तोष उत्पन्न होता है कि वह बात नहीं बनी जो मैं चाहता था, कहीं कुछ कम है या और का और हो गया है। कई बार दो-दो, तीन-तीन दफ़ा लिखकर भी संतोष नहीं होता। इस तरह अपने मस्तिष्क से सदा बैर चलता है। जो कुछ बाहर दिखाई देता या जो कुछ महसूस होता है, उसके चित्र या प्रभाव मस्तिष्क आसानी से अपने में समेट लेता है, परन्तु शब्द जब उन्हें व्यक्त करने लगते हैं तो दोष निकालने का बीड़ा उठा लेता है। कहानी लिख चुकने पर जब मुझे महसूस होता है कि बात नहीं बनी तो झुँझला कर लिखे हुए काग़ज़ों को तो फाड़ ही देता हूँ, साथ चाहता हूँ कि दोष ढूँढने में दक्ष अपने इस मस्तिष्क को भी कुछ सजा दूँ। मगर मैंने पाया है कि हर नष्ट की हुई रचना मुझे और परिमार्जित करती है, हर असफल प्रयत्न कहीं से मुझे सँवार देता है। कभी-कभी मन कहता है कि यह सारा झंझट क्यों मोल लेते हो...इस तरह अपने से ही जूझते जाने में क्या रखा है? मगर दूसरे ही क्षण मैं यह पाता हूँ कि मेरी यह झुंझलाहट भी एक कहानी का विषय है...कहानी न कह पाने की असमर्थता पर भी एक सुन्दर कहानी लिखी जा सकती है।

और इसी तरह यह क्रम चलता रहा है और चल रहा है। मैंने बहुत लोगों से सुना है कि सारे जीवन और साहित्य में कुछ थोड़ी-सी ही तो कहानियाँ हैं जिन्हें हर लेखक बार-बार लिखता है...वही प्रेम, वही ममता, वही ईर्ष्या, वही राग-द्वेष...सब कुछ आदिम काल से आज तक वही है। थोड़ी-सी हेर-फेर के साथ हर कहानी किसी न किसी पहले की कहानी की पुनरावृत्ति होती है। मगर मुझे स्थिति आज तक इससे सर्वथा विपरीत प्रतीत हुई है। मुझे सदा यही लगा है कि जीवन ने मुझे इतनी कहानियों की पूंजी दी है कि सारा जीवन लिखता रहूँ तो भी वे सब कहानियाँ नहीं लिखी जाएंगी...केवल समय के अभाव के कारण ही नहीं, बल्कि इसलिए भी कि बहुत सी कहानियाँ हैं जो हज़ार चाहने पर भी नहीं बन पातीं, या वैसी नहीं बनतीं जैसी लिखते समय कल्पना होती है। इसलिए यह अपने जीवन से जीवन-भर की होड़ है। इस होड़ में मैं हारना नहीं चाहता। जब कहानी नहीं भी लिखता तो सोचता अवश्य हूँ कि यह या वह कहानी अभी लिखनी रहती है। बन पड़ता है तो लिख डालता हूँ और नहीं बन पड़ता तो यह विश्वास किये जाता हूँ कि कभी-न-कभी अवश्य लिखूँगा।

CC-0 Agamnigam Foundation. Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मख़दुम – मोहीउद्दीन

(4 फरवरी 1908 – 25 –अगस्त 1969)

मख़दुम मोहीउद्दीन का पूरा नाम था अबू सईद मोहम्मद मख़दूम मोहीउद्दीन हुज़री। उनका जन्म आंध्र प्रदेश के करीब मेडक में हुआ था। जो उस जमाने में हैदराबाद रियासत का हिस्सा हुआ करता था। सन 1936 में उस्मानिया युनिवर्सिटी से उन्होंने परास्नातक की डिग्री ली थी। सन 1943 में उन्होंने हैदराबाद में प्रगतिशील लेखक संघ का गठन किया था। मख़दूम को उनके विद्रोह शायरी की वजह से शायर-ऐ-इंकलाब के नाम से भी जाना जाता है। वे कम्यूनिस्ट पार्टी के सक्रिय सदस्य थे। 1946-47 में हुए तेलंगाना विद्रोह में मख़दूम ने अहम योगदान दिया था। मख़दूम ने 1934 में सिटी कॉलेज में एक व्याख्याता के रूप में काम करना शुरू किया और उर्दू साहित्य पढाया। वह बिसात-ए-रक्स (द डांस फ्लोर) नामक कविताओं के संग्रह के लिए सब से ज्यादा जाने जाते हैं, जिसके लिए उर्दू में 1969 साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

उनके प्रकाशित कार्यों में निबंध टैगोर और उनके कविता, एक नाटक, होश के नाखुन (अनवरलिंग), शॉ के विधवाओं के सदनों का अनुकूल, और गद्य निबंधों का संग्रह शामिल है। बिसात-ए-रक्स मख़दूम की कविता पूरा संग्रह है जिसमें उनके दो पहले संग्रह सवेरा (1944) और गुल-ए-तर (1961) शामिल हैं। कई हिंदी फिल्मों में उनके गज़लों और गीतों का इस्तेमाल किया गया है। उनके उल्लेख रोमांटिक गजल हैं:-एक चमेली के मंडवे तले, आप की याद आती रही रात भर, फिर छिडी रात बात फूलों की, ये कौन आया तन्हाइयों में जाम लिए आदि:-'धरोहर के इस अंक में पढिये मखदूम की गज़ल 'आप की याद आती रही रात भर।'

आप की याद आती रही रात भर– मख़दूम मोहिउद्दीन

आप की याद आती रही रात भर
चश्मे नम मुस्कुराती रही रात भर ।
रात भर दर्द की शम्मा जलती रही
ग़म की लौ थरथराती रही रात भर ।
बाँसुरी की सुरीली सुहानी सदा
याद बन बन के आती रही रात भर ।
याद के चाँद दिल में उतरते रहे
चाँदनी जगमगाती रही रात भर ।
कोई दीवाना गलियों में फिरता रहा
कोई आवाज़ आती रही रात भर ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

महादेवी वर्मा

(26 मार्च 1907 - 11 सितम्बर 1987)

महादेवी का जन्म फ़र्रुख़ाबाद उत्तर प्रदेश, भारत में हुआ। उनके परिवार में लगभग 200 वर्षों या सात पीढ़ियों के बाद पहली बार पुत्री का जन्म हुआ था। अतः पिता ने घर की देवी - महादेवी मानते हुए पुत्री का नाम महादेवी रखा। महादेवी जी की शिक्षा इंदौर में मिशन स्कूल से प्रारम्भ हुई साथ ही संस्कृत, अंग्रेज़ी, संगीत तथा चित्रकला की शिक्षा अध्यापकों द्वारा घर पर ही दी जाती रही। विवाहोपरान्त महादेवी जी ने 1919 में क्रास्थवेट कॉलेज इलाहाबाद में प्रवेश लिया और कॉलेज के छात्रावास में रहने लगीं। 1921 में महादेवी जी ने आठवीं कक्षा में प्रान्त भर में प्रथम स्थान प्राप्त किया। यहीं पर उन्होंने अपने काव्य जीवन की शुरुआत की।

वे सात वर्ष की अवस्था से ही कविता लिखने लगी थीं और 1925 तक जब उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की, वे एक सफल कवयित्री के रूप में प्रसिद्ध हो चुकी थीं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपकी कविताओं का प्रकाशन होने लगा था। 1932 में जब उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एमए पास किया तब तक उनके दो कविता संग्रह नीहार तथा रश्मि प्रकाशित हो चुके थे।

महादेवी का कार्यक्षेत्र लेखन, सम्पादन और अध्यापन रहा। उन्होंने इलाहाबाद में प्रयाग महिला विद्यापीठ के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया। इसकी वे प्रधानाचार्य एवं कुलपति भी रहीं। 1923 में उन्होंने महिलाओं की प्रमुख पत्रिका 'चाँद' का कार्यभार संभाला। 1930 में नीहार, 1932 में रश्मि, 1934 में नीरजा, तथा 1936 में सांध्यगीत नामक उनके चार कविता संग्रह प्रकाशित हुए। 1939 में इन चारों काव्य संग्रहों को उनकी कलाकृतियों के साथ वृहदाकार में यामा शीर्षक से प्रकाशित किया गया। उन्होंने गद्य, काव्य, शिक्षा और चित्रकला सभी क्षेत्रों में नए आयाम स्थापित किये। इसके अतिरिक्त उनकी 18 काव्य और गद्य कृतियाँ हैं जिनमें मेरा परिवार, स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी, शृंखला की कड़ियाँ और अतीत के चलचित्र प्रमुख हैं। सन 1955 में महादेवी जी ने इलाहाबाद में साहित्यकार संसद की स्थापना की और पं इलाचंद्र जोशी के सहयोग से साहित्यकार का सम्पादन संभाला। यह इस संस्था का मुखपत्र था। उन्होंने भारत में महिला कवि सम्मेलनों की नीव रखी। इस प्रकार का पहला अखिल भारतवर्षीय कवि सम्मेलन 15 अप्रैल 1933 को सुभद्रा कुमारी चौहान की अध्यक्षता में प्रयाग महिला विद्यापीठ में सम्पन्न हुआ। वे हिंदी साहित्य में रहस्यवाद की प्रवर्तिका भी मानी जाती हैं। महादेवी बौद्ध धर्म

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से बहुत प्रभावित थीं। महात्मा गाँधी के प्रभाव से उन्होंने जनसेवा लेकर झूसी में कार्य किया और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भी हिस्सा 1936 में नैनीताल से 25 किलोमीटर दूर रामगढ़ कसबे के उमागढ़ नामक गाँव में महादेवी वर्मा ने एक बँगला बनवाया था। जिसका नाम उन्होंने मीरा मन्दिर रखा था। जितने दिन वे यहाँ रहीं इस छोटे से गाँव की शिक्षा और विकास के लिए काम करती रहीं। विशेष रूप से महिलाओं की शिक्षा और उनकी आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए उन्होंने बहुत काम किया। आजकल इस बंगले को महादेवी साहित्य संग्रहालय के नाम से जाना जाता है। उनके सम्पूर्ण गद्य साहित्य में पीड़ा या वेदना के कहीं दर्शन नहीं होते बल्कि अदम्य रचनात्मक रोष समाज में बदलाव की अदम्य आकांक्षा और विकास के प्रति सहज लगाव परिलक्षित होता है। उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद नगर में बिताया। 11 सितंबर 1987 को इलाहाबाद में उनका देहांत हो गया।

जो तुम आ जाते एक बार – महादेवी वर्मा

जो तुम आ जाते एक बार

कितनी करूणा कितने संदेश
पथ में बिछ जाते बन पराग
गाता प्राणों का तार तार
अनुराग भरा उन्माद राग

आँसू लेते वे पथ पखार
जो तुम आ जाते एक बार

हँस उठते पल में आर्द्र नयन
धुल जाता होठों से विषाद
छा जाता जीवन में बसंत
लुट जाता चिर संचित विराग
आँखें देतीं सर्वस्व वार
जो तुम आ जाते एक बार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लूई अल्बर्टो एम्ब्रोगियो

सन् 1945 में अर्जेन्टिना के कोरोडोबा में जन्मे और सन् 1967 से अमेरिका में रह रहे लूई अल्बर्टो एम्ब्रोगियो एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के हिस्पैनिक-अमेरिकन कवि, लेखक, निबंधकार, अनुवादक और भाषाविद् हैं। इनकी गिनती अमेरिका के हिस्पैनिक (लैटिन अमेरिका में बोली जाने वाली स्पैनिश भाषा) लेखकों में एक अति महत्त्वपूर्ण कवि के रूप में की जाती है । एक आलोचक और निबंधकार के तौर पर एम्ब्रोगियो मशहूर कवियों के द्विभाषावाद, पहचान और विवेचनात्मक अध्ययन से जुड़े विषयों पर स्पैनिश में लिखी अमेरिकी कविताओं के विशेषज्ञ माने जाते हैं। इनके बीस कविता संग्रह (जिसमें चार द्विभाषी हैं), कविता लेखन की कला, एक लघु कथा संग्रह और निबंधों की कई पुस्तकें अर्जेन्टिना, कोस्टारिका, स्पेन एवं अमेरिका से प्रकाशित हैं। कविता संग्रहों में डिफिकल्ट ब्यूटी : सेलेक्टेड पोएम्स, दि विन्ड्स आर्कियोलॉजी, व्हिटमैन / वि आर ऑल व्हिटमैन, ट्रिब्यूट टू रोड आदि तथा निबंधों में रूबेन डारियो एण्ड वाल्ट व्हिटमैन, थॉमस जेफर्सन एण्ड दि स्पैनिश लैंगुएज प्रैक्सिस, विज़न एण्ड फिलॉसफी आदि प्रमुख हैं । इन्होंने विलियम कार्लोस, डी. एच. लॉरेन्स, डायलन थॉमस व रॉबर्ट पिंसकी जैसे विख्यात कवियों की कविताओं का अनुवाद भी किया है ।

एम्ब्रोगियो की लेखन शैली बहुआयामी है । इनकी कई कविताओं में निजी जीवन में अनिश्वरवाद / संशयवाद, सामाजिक प्रतिबद्धता, प्रेम व निर्वासन की झलक मिलती है। इनकी कविताएँ बुद्धिमत्तापूर्ण व दार्शनिक हैं। इनमें अनुकरणीय अलाप, असमान्य विवेक और दहकती गहराई है क्योंकि कविताओं की नीलिमा में आग है, गीतकाव्य सूची में एक पार्थिव रचनात्मकता है। इनकी कविताओं की मुख्य विशेषता तात्कालिकता, बिंबों की जीवंतता है जो सीधा असर करती है यद्यपि कि वे पूर्णतया कला की उपज है। इनका मस्तिष्क दार्शनिक है जो मुठभेड़ की अथाह गहराई के लिए हमेशा मचलता है। इनकी ज्ञान पिपासा इतनी अनवरत है कि इनकी कविताएँ अति भावबोधक नियंत्रण एवं उत्कृष्ट सौंदर्य के साथ जीवन की जटिलताओं और निश्चितताओं के बीच घूमती हैं।

एम्ब्रोगियो ने मैसाचूसेट्स ऐमहर्स्ट विश्वविद्यालय एवं फ्लोरिडा गल्फ कोस्ट विश्वविद्यालय में अध्यापक के रूप में कविता लेखन कला के साथ-साथ विभिन्न विषयों पर संगोष्ठियों को संबोधित किया है। साथ ही, विभिन्न देशों के तीस से ज्यादा विश्वविद्यालयों में काव्यपाठ किए और व्याख्यान दिए हैं। ये नॉर्थ अमेरिकन एकेडमी ऑफ स्पैनिश लैंगुएज और स्पैनिश रॉयल एकेडमी के सदस्य तथा वाशिंगटन डी. सी. में डेलिगेशन ऑफ दि अमेरिकन एकेडमी ऑफ दि स्पैनिश लैंगुएज के चेयरमैन हैं। इसके साथ ही स्पैनिश भाषा से जुड़ी कई साहित्यिक व सांस्कृतिक संस्थाओं से भी सम्बद्ध रहे हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Bhandari Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इनकी मूल हिस्पैनिक कविताओं का अंग्रेजी, फ्रांसीसी, इटालियन, रूमानियन, मैन्डारिन, कोरियन, हिब्र्यू, पुर्तगाली, जापानी, तुर्की आदि कई भाषाओं में अनुवाद हुआ है और इनकी कविताएँ अमेरिकी संसद (कांग्रेस) के पुस्तकालय के हिस्पैनिक साहित्य अभिलेखागार में भी संग्रहित हैं ।

एम्ब्रोगियो को इनके साहित्यिक उपलब्धियों के लिए कई डिप्लोमा व पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जिनमें स्पैनिश टी. वी. (टी.वी.ई.) का वर्ष 2004 का प्रथम पुरस्कार, मैड्रिड के प्रोमेथ्यूस पोएट्री एसेसिएशन द्वारा उत्कृष्टता का सम्मान, कविता के लिए अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार 'दि लिबरेटर 2010' एवं ब्लू से रेड तक के संकलन के लिए फूलब्राईट-हेस स्कॉलरशीप शामिल हैं ।
यहाँ प्रस्तुत है लूई अल्बर्टो एम्ब्रोगियो की तीन कविताएं । अंग्रेजी से हिन्दी में इसका अनुवाद किया है अवधेश कुमार सिन्हा ने ।

उस कवि को जो बचा रहता है

स्वर्ण काल !
वे कहते हैं कि शताब्दियों की स्मृति में
हजारों कवियों में केवल तीन
बचे रह गए हैं
और संभवतः हमारे समय के बहुत सारे कवियों में
केवल एक रह जाएगा बचा ।
पुनः अप्राप्य आनन्दपूर्ण पद्यों के बीजारोपण की खामोशी
अलग किया हुआ सौंदर्य की सनक
पुनरावर्तन भी बचा नहीं पाएगा एक निश्चित कविता,
संभवतः एक अज्ञात शिलालेख
और यातनाओं को आच्छादित करने वाले धूल
रह जाएंगे सुरक्षित ।
हाँ, नदी टिकी रह जाएगी
अपने अपाठ्य लहरों में
और कोन्डोर 1 अपनी उड़ान में हो जाएंगे अनंत,
प्रेम भी दोहराएगा अपने साहसिक कृत्यों को
मृत्यु करेगी अनुसरण स्वर्ग के रास्ते का
कवियों में केवल एक ही जान पाएगा चमकने की कला
आने वाले समय की कल्पनाएं,
इनके लिए कितने अतिरिक्त शब्द, पन्ने, मिनट
और पेड़ों की कटाई होंगे नष्ट,
अनुत्क्रमणीय विलोपन
भीड़ से चिल्लाता है केवल एक
(सिर्फ एक आसन संत की उपाधि से विभूषित)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भूलने की मितव्ययिता सदैव है चौंकानेवाली
महासागर के अनंत फुसफुसाहट में
रेत का एक बहुत ही छोटा कण
एक एकल शोर ।

1. लैटिन अमेरिकी देशों में पाए जाने वाले गिद्ध की एक प्रजाति

साक्ष्य उसकी आत्मा को करता है अनावृत्त

मैं लिखता क्यों हूँ ?
स्वयं को चढ़ाने सूली पर और पश्चात्
लेने के लिए पुनर्जन्म मासूम, नम मिट्टी के रूप में
होने के लिए अंतिम और प्रथम
रोक देने के लिए नदी को तुरंत अपने हाथों में
और पीने के लिए जल
ताकि जब बूँदों की लें घूँट अन्य, एक नदी है वे जानेंगे,
क्योंकि कटकटाते हैं मेरे दांत ठंढ से, पत्थर व रोष से
और क्योंकि दिन व रातों की मेरी छाया खो देते हैं
अपनी सभी चित्रलिपि,
ताकि विविध टोपें पहन जो करते हैं सैर सड़क पर
उनके द्वारा समझा, नहीं समझा जा सकूँ मैं
ताकि जो मुझे समझते हैं
वे कर सकें मेरी खोज बिना पीड़ित हुए कमरदर्द से,
मैं लिखता हूँ बोने के लिए बहुरंगी राख
विशाल एकांत और महा खामोशी में
और क्योंकि मैं लेता हूँ चुम्बन बिना चुम्बन की कोशिश किए ,
मरता हूँ मैं बगैर मृत्यु की कोशिश के
और अनिद्रा की तिरस्कारणीय रातों से भरा मैं
निकल जाता हूँ बदलने के लिए
रात को हर्षपूर्ण प्रकाश और दिन को दो लाल सपनों में,
मैं लिखता हूँ स्वयं को गुमनामी में दोबारा खो जाने को और
करने के लिए याद प्रत्येक पद्य को गुमनामी में
और क्योंकि आरम्भ व अंत
इस तरह हो जाते हैं सदा ज्वलनशील ।

शरीर का महत्त्व

एक शरीर की उक्ति

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चली जाती है ईश्वर की निठुराई के पार,
लहरों के रोष के आगे आज्ञाधीन शरीर
मृत्यु, पुनर्जीवन और पश्चात् दीप्ति के समय हठी शरीर
शरीर जो वृक्ष हैं, विशाल सागर हैं, नम धरती हैं
जो शोर और गुम हैं, जो करते हैं आवेशित हवा को
और चीखते हैं, मांगते हैं लाखों बार वापसी का रास्ता
क्योंकि वे कभी खोते नहीं हैं अपनी स्मृति,
रूह जो उठती है मृत्यु को देने चुनौती
एक सदा सतर्क प्रकाश की तरह
हम देते हैं शरीर को उनके पंख ।

(सम्पर्क : जे-501, ग्रीनआर्क सोसायटी, जी.एच.-10ए, सेक्टर-टेकजोन 4, ग्रेटर नोएडा (पश्चिम), गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश 201306, मोबाईल नं. : 9347901419)

नए आजीवन सदस्य

नाम : कोनेरु हेमलता
जन्म : 1 मार्च 1959, **जन्म-स्थानः**-गुंटूर जिल्ला आन्ध्र प्रदेश
शिक्षा : एम.ए.बी.ई.डी,पीएच.डी.
व्यवसाय : 28 वर्षों से महाविद्यालयों में सेवारत
साहित्य लेखन एवं अन्य गतिविधियाँ :-
1) राहुल सांस्कृत्यायन (हिन्दी से तेलुगु) (2) कई पौराणिक स्त्री पात्र (तेलुगु से हिन्दी) (3) आकाशवाणी विजयवाडा से कई डाक्यूमेंट्स, कहानियाँ एवं नाटक हिन्दी अनुवाद, (4) 'गाँधी जी के पथ पर' इस डाक्यूमेंट को आलइंडिया रेडियो की ओर से प्रथम पुरस्कार, (5) कई मूल कहानियों का सृजन एवं वाचन आकाशवाणी से, (6) 'सुखांत' अन्नूरी छायादेवी कहानी-हिन्दी अनुवाद, (7) गुडिपाटि वेंकटचलम तेलुगु उपन्यास ब्राह्मणीकम्-हिन्दी अनुवाद 'नया नीड' उत्तम हिन्दी अनुवाद का प्रथम पुरस्कार ए.पी. हिन्दी अकादमी से, (8) 'गुर्रं जाषुवा' तेलुगु काव्य फिरदौसी हिन्दी अनुवाद को, उत्तम अनुवाद प्रथम पुरस्कार, (9) 'गुर्रं जाषुवा' गन्निलम्- 'चमगादड़' नाम से हिन्दी अनुवाद, (10) 'गुर्रं जाषुवा' 'कोत्तलोकम' तेलुगु काव्य-'नई दुनिया' नाम पर हिन्दी अनुवाद, (11) 'तिरुमल चरितामृतम'-तेलुगु का हिन्दी अनुवाद।

संपर्क सूत्र : 4-103, वाटर टैंक रोड़, निडमानूरू, विजयवाड़ा-521104., मोबाईल नम्बरः-9440159229,8500546386.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कच्चे आहार का परिशोधन

–श्री सन्त समीर

वे सन् 2009 के उत्तरार्ध वाले दिन थे। एक दिन मन में एक अजब-सा संकल्प जगा। कुछ यूँ कि क्यों न कुछ दिनों के लिए हर खाई जा सकने वाली चीज कच्ची ही खाई जाए। जैसे कि वह प्रकृति में मिलती है। बचपन से ही अपनी आदत कुछ ऐसी रही है कि कोई चीज मन में आ जाय कि इसे करना चाहिए तो बस उस काम में जुट ही जाता था। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि बडे-बुजुर्ग क्या कहते हैं। मन बेचैन आज भी होता वैसे ही है पर अगल-बगल वालों का खयाल कर अब कई चीजों से ध्यान हटाना पड़ता है।

इस संकल्प के पीछे की वजह एकदम से स्पष्ट तो नहीं है, पर रह-रहकर प्रसिद्ध इतिहासकार धर्मपाल जी का चेहरा जरूर उभरता है। जब मैं वर्धा के सेवाग्राम आश्रम में उनके साथ वाली कुटिया में रह रहा था, तो उनकी बतकही में भी कभी-कभार शामिल हो जाता था। धर्मपाल जी से मिलने हर चार-छह दिन में देश-विदेश का कोई-न-कोई बडा नाम आ जाता था। नन्दकिशोर आचार्य, उदयन वाजपेयी, पवन गुप्ता, गोविन्दाचार्य जैसों की एक लम्बी सूची है, जिन्हें मैंने पहली बार वहीं देखा। एक बार की चर्चा कुछ यूँ चली कि कच्चा खाना, अंकुरित करके खाना या सलाद वगैरह बनाकर खाना भारतीय परम्परा की चीजें नही हैं। बडे-बुजुर्गों के बीच बहस थी तो मैं बस चुपचाप सुनता रहा, पर यह बात मेरे मन में अटक गई। मुझे राम के चौदह साल के जंगल का जीवन और ऋषि-मुनियों के कन्द-मूल-फल के किस्से याद आते रहे। समय गुजरता रहा पर बात मन के किसी कोने में अटकी ही रही जो शायद कई बरस बाद इस संकल्प का कारण बनी।

खैर जुनूनी मन में संकल्प जग ही गया तो पका खाना बन्द। हर चीज कच्ची खाई। एक दो दिन फलों पर गुजारा किया फिर खयाल आया कि सब्जियों को सलाद की शक्ल दी जा सकती है। लौकी, तुरई, खीरा, ककडी, टमाटर, परवल, लोबिया, भिण्डी, जिसकी जैसी भी उपलब्धता रही काटकर सलाद बनाकर खाना शुरू किया। कच्चे आलू खूब खाए। बस करेला खाने की हिम्मत नहीं हुई।

सोचा था कि यह सब ज्यादा से ज्यादा चार छह दिन चलेगा, जैसे कि नैचुरोपैथी वाले दो-चार दिन के लिए कर लेते हैं, पर एक-एक दिन करके बीत गए लगभग दस महीने। आज उन दिनों को याद करता हूँ तो खुद पर ताज्जुब होता है कि कैसे इतने दिनों तक आग पर पका या तला-भूना एक भी दाना मैं नहीं खाया। कच्चा चबाने का यह सिलसिला शायद और आगे बढता, पर दो घटनाओं ने इस पर विराम लगा दिया। शरद पूर्णिमा का दिन था और दफ्तर से देर रात मैं घर लौटा। अचानक ध्यान में आया तो पत्नी से पूछ बैठा...आज तो खीर वाला दिन है, बनाया नहीं क्या? पत्नी बोली...तुम को खाना नहीं तो बनाना किस के लिए? ओह....अब लगा कि तीज त्यौहार, परिवार भी कोई चीज है। दूसरा वाकया यह हुआ कि माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलपति

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2023-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रहे अच्युतानन्द मिश्र जी ने याद किया तो मैं और इन्द्रेशा नन्हीं बिटिया के साथ एक दिन उनसे मिलने उनके इन्दिरापुरम वाले घर जा पहुँचे। अच्युता जी जब भी मिलते मिठाई जरूर खिलाते। घर पर ही नहीं घर के बाहर भी। जाहिर है थोड़ी देर में मिठाई के प्लेट हाजिर हो गई। मैंने बताया कि मैं नहीं खाऊँगा। अपक्काहार की कथा सुन वे हँसे और खफा हुए। इन्द्रेशा से बोले कि तुम्हारी जिम्मेदारी है कि अगली बार यहाँ आने से पहले कच्चा खाने की कहानी बन्द मिलनी चाहिए। इस तरह से लोकव्यवहार की विवशता ने मेरे इस काम पर विराम लगवा दिया। यूँ आजकल जब-तब एक बार फिर इसे आजमाने के खयाल आने लगे हैं, पर नोएडा कि ड्यूटी में जरा मुश्किल है।

जीवन की हर घटना कोई-ना-कोई काम का अनुभव देती है। इसने मुझे कई बढिया अनुभव दिए। एक बात तो यह समझ में आई कि आहार का मन पर असर होता है। प्रकृति के जितने ही करीब जाइए, मन के विक्षोभ कम होने लगते हैं। इस बहाने कच्चा खाने वालों के बारे में कई जानकारियाँ मिली। नवभारत टाइम्स के प्रणव प्रियदर्शी जी ने एक दिन बताया कि दिल्ली वासी एक कृष्णमोहन जी भी हैं जो इस तरह का कुछ प्रयोग करते रहते हैं। कृष्णमोहन जी से बात भी हुई।

सबसे बड़ी बात यह हुई कि इस कच्चा-काण्ड से अनुभव के इतर एक ऐसा विश्वास मिला जो आप सबके काम का हो सकता है। अगर आप में से किसी को कोई असाध्य बीमारी, मसलन कैंसर, डायबिटीज..या ऐसा कुछ हो जिसके चलते डॉक्टर घोषित कर चुके हो कि आप साल-दो-साल से ज्यादा के मेहमान नहीं हैं तो बस आज से ही पका खाना बन्द करके कच्चा खाना शुरू कर दीजिए। हो-न-हो साल-दो-साल बीतते-बीतते आपका नया हाल देखकर डॉक्टर को ही शॉक लगने की नौबत आ जाए। जी हाँ यह अविश्वसनीय है, पर आप सचमुच ठीक हो सकते हैं। यह बात जरूर है कि कच्चा खाने के लिए कुछ सावधानियाँ तो बरतनी ही पड़ेगी जिसके लिए हमारे जैसों से सलाह ले सकते हैं। अपक्काहार शुरू में बेहद कष्टप्रद है। क्योंकि हमारी देह पके भोजन वाली आदत की गुलाम बन चुकी है। मैंने देखा है कि प्राकृतिक चिकित्सालयों में दो-चार दिन भी अगर पका भोजन न मिले तो लोग रोटी-रोटी चिल्लाने लगते हैं। सबसे बड़ी शर्त तो यही है। डॉक्टर कितना भी डराए पर कच्चे की आदत बना रहे हो तो पका हुआ चखना भी मना है।

न ठीक होने वाली बीमारी की गिरफ्त में हों तो मेरी सलाह मानिए और इस कच्चा-काण्ड का पाठ आप जरूर कीजिए। एलोपैथी का डॉक्टर आपको डराएगा, क्योंकि आधुनिक चिकित्साशास्त्र पके भोजन को आधार मानकर विकसित हुआ है और इसकी ज्यादातर दवाएँ भी इसी आधार पर बनाई गई हैं। जो भी हो ठीक हो गए तो आपको बताने की जरूरत नहीं कि आपके साथ क्या होगा... और अगर मरना ही पड़ा तो भी क्या परेशानी क्योंकि मरना तो आपको था ही। हाँ जब आप मर रहे होंगे तो आखिरी साँसे खींचते हुए सुकून जरूर महसूस करेंगे कि मरते दम तक भी आपने जीने की कोशिश नहीं छोड़ी।

सम्पर्क सूत्रः-319/एफ-2, शालीमार गार्डेन, एक्सर-2, (त्रिवेणीधाम हनुमान मंदिर के पास) साहिबाबाद, गाजियाबाद-201005. (यू.पी.)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यादों की बारात

समीक्षक-डॉ.टी शान्ता कुमारी

डॉ.सी.जे.प्रसन्नकुमारी सरकारी महिला-कॉलेज की विभागाध्यक्षा के पद से अवकाश प्राप्त साहित्यकार हैं। ये केरल विश्वविद्यालय की शोध-निदेशिका तथा कालडी संस्कृत विश्वविद्यालय के सिंडिकेट बोर्ड की सदस्या रहीं। अध्यापन कार्य में कार्यरत रहती हुई प्रो. प्रसन्नकुमारी जी ने साहित्य के क्षेत्र में अपनी छाप अंकित की हैं। भाषा साहित्य और संस्कृति : चिन्तन के कण, राजभाषा हिन्दी के बहुमुखी आयाम, आलोचन-विविधा, साहित्य और संस्कृति आदि इनके कुछ ग्रन्थ मात्र हैं। अपनी रचनाओं के लिए इन्होंने कई पुरस्कार प्राप्त किये हैं-राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन-2008, केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार, अम्बिका प्रसाद दिव्य-स्मृति, रजत-पुरस्कार, भारत गौरव अवार्ड 2016, हिन्दीतर भाषी लेखक पुरस्कार 2017 आदि कई पुरस्कारों से लेखिका सम्मानित हुई हैं। खुशी की बात है कि प्रसन्नकुमारी जी अब भी साहित्य रचना के क्षेत्र में व्यस्त हैं।

'यादों की बारात' प्रसन्नकुमारी जी द्वारा रचित सोलह कहानियों का संग्रह है। यह लेखिका की प्रथम कहानी-संग्रह है। यह पुस्तक जवाहर पुस्तकालय द्वारा प्रकाशित है। कहानी संग्रह दो खण्डों में विभक्त हैं। 'भोला गाँव' और 'असीम शहर।' लेखिका स्वयं कहती हैं 'सृजन की मेरी प्रेरणा मेरे गाँव की सीधी सादी जिन्दगी है। वहाँ के गंवार भोले-भाले लोग हैं जो कभी झगड़ते हैं, कभी प्यार करते हैं, विपत्तियों के समय हमेशा एक साथ हैं।' ऐसे गँवार भोले-भाले लोगों के छोटे-मोटे सुख-दुःख ही प्रथम खण्ड की कहानियों को जीवन्त बनाते हैं।

प्रथम खण्ड की कहानियों में गाँव की हँसी-खुशी, आँसू-रुदन, प्रेम-घृणा, करुणा-कातरता, गरीबी-लाचारी सब साकार हो उठी हैं। इन कहानियों के कथापात्र लेखिका के अंतर्मन के भाव-तरंगों के जीते-जागते प्रतिनिधि हैं। लेखिका कथापात्रों में सुनायी देती हैं। गाँव के खेतों-खलिहानों, नदी-नालों, कुआँ-सरिताओं, पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों, टीलों-तराइयों, बच्चों-मनुष्यों से कहानीकार का लगाव इन कहानियों में साकार हो उठा है। ये सब कहानीकार के बाल्य-काल की गृहातुर स्मरणाओं के जीवन्त चित्र हैं। दृश्य-पट पर उतरते दृश्य बिम्बों के समान ये हमारे मन में कसक पैदा करने में सक्षम हैं।

'बाढ की यादें' नमक प्रथम कहानी में लाल फ्रॉक पहनी राजी के मर्मस्पर्शी अंत के द्वारा बाद के भयानक तांडव का रेखाचित्र खींचा गया है। साथ-साथ गाँव के मासूम लोगों के पारस्परिक प्रेम और मिलन सरिता का भावपूर्ण चित्र भी अंकित है। 'गाँव-वापसी' में केरल के ग्रामीण वातावरण का वर्णन है। कथा नायिका गिरिजा अपने बचपन में मन्दिर जाकर देव को फूल-माला चढाती थी, अहाते में इमली, आम, कटहल, काजू के पेड़ थे। गोशाला में गाय-भैंस थे, वर्षों बाद घर आकर वह निराशा होती है कि गाँव की सारी हरियाली नष्ट हो गई है। उसका पोता मिटू

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by-IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्रिकेट-कराटे में उलझकर रहना चाहता है, ग्रामीण जीवन नहीं चाहता।

'यादों की बारात' की पौर्णमी बचपन की यादों में खो जाती है। पापा के स्नेह, गणेश पूजा, रामनाम जाप, दीप जलाना, कसावे की खेती करना, अहाते में करेला, बैंगन, हरी मिर्च, भिंडी के पौंधे लगाना आदि यादों में वह खो जाती है। 'दर्जिन सत्यभामा' में अनाथ बच्चे की आठवें पुत्र के रूप में गोद लेनेवाली गरीबन का मर्मस्पर्शी चित्र है। सत्यभामा अद्‌भुत साहस और असीम करुणा का प्रतिरूप बन गयी है। 'बंटवारा' में बंटवारे के बाद दादी को चिरपरिचित घराने से अलग ले जानेवाले बेटे बेटियों पर करारा व्यंग्य कसा गया। असहनीय आत्मा-ग्लानि और निस्सहायता से दादी कहती है "आजकल मैं नारायण पिल्लै की धर्मपत्नी और भरे-पूरे घर की मालकिन नहीं केवल शिवराम पिल्लै की सास और वनजाक्षी की माँ-बाप हूँ।"

'विषु की याद' कहानी में बूढे माँ-बाप को बस स्टैंड में या गुरुवायूर में छोड़ जानेवाले बेटों को फटकार सुनाया गया है। पुराने जमाने में घर के लोग शुभकार्य करते समय दादा-दादी का चरणस्पर्श करते थे। लेकिन समय बदल गया है और आज बूढे लोग अवज्ञा और अवमाणना के पात्र बनकर कूडे-कचरे के समान निरुपयोगी हो गये हैं। कर्णिकार का फूल तोडना, विषुक्कणि सजाना, विषुक्कैनीटम देना आदि विषु के त्यौहार के स्मरण-चित्रण में केरल की संस्कृति की झाँकी प्रस्तुत है। पति के अभाव में रात दिन मेहनत करके जीनेवाली पार्वती केरल की अनेक विधवाओं का प्रतिनिधित्व करती है। उसके अश्रान्त परिश्रम से बच्चे बडे ओहदे पर काम करते हैं और घर में शान्ति का वातावरण स्थापित हुआ है। 'पापा और अम्मा बनाम मम्मी' कहानी में दो बच्चों को गोद लिए कोलम्बी से आयी विधवा बुद्धि शक्ति और मेहनत के जरिये कैसे परिवार को सुस्थापित और सुव्यवस्थित करती है, इसका आदर्श चित्र दर्शाया है जो सचमुच स्त्रियों के लिये आदर्श और अनुकरणीय है।

'मन की धुकधुकी' में ननिहाल में पलकर माँ-बाप के पास पहुँची लडकी के कारण परिवार में जो बवंडर खड़ी हुई उसका भावाविष्कार किया गया है। वर्षों बाद ननिहाल में पहुँचने पर वह देखती है कि खेत-गाय, नदी-नाले, पेड-पौंधे सब गायब है और गाँव नगरीय संस्कृति का शिकार हो गया है। 'यादों की बारात' के प्रथम खण्ड की कहानियों में गाँव का रहन-सहन, पहनना-ओढना, वर्षा-जलवायु आदि का सहज वर्णन मिलता है। कहानीकार ने कथायानों के चित्रों को इतना जीवन्त बनाया है कि ये दिल में घर कर लेते हैं। गायों के सेहत पर ध्यान रखने वाली विलासिनी दादी, रसोई में फटाफट काम करनेवाली बहुएँ तथा अन्य काव्य पात्रों के रेखाचित्र गाढे रंगों से रचे गये हैं।

दूसरे खण्ड की कहानियाँ में नगरीय वातावरण के कृत्रिमता का अंकन है। विदेश में रहनेवाले बेटे-बेटियाँ उनके बच्चों का देखभाल करनेवाली माँ, वृद्ध महिलाओं के मन-बहलाव के लिए बनायी वृद्ध मंडली, बेटे-बहुओं की अवगणना से कुढ़ती माताएँ, बच्चे के बर्थ डे पार्टी में माँ को अकेली घर में छोड़ जाने वाले बेटे बहुएँ, फ्लैट की जिंदगी का अकेलापन, बच्चे की दादी माँ से दूर रखनेवाली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funded by IKS-MoE-2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बहुएँ, मोबाइल फोन के प्रति बच्चों का अतिमोह, शनिवार-रविवार में दस बजे तक सोनेवाली बेटियाँ, घर में दादा-दादियों की अवहेलना, क्रिकेट, कराटे के प्रति बच्चों की अति आसक्ति आदि का स्वाभाविक वर्णन इन कहानियों में प्राप्त है।

संक्षेप में ये कहानियाँ केरल के नगरों तथा गाँवों का यथार्थ रूप चित्रित करती है। लेखिका ने गाँव के कथापात्रों का रेखाचित्र इतना तन्मय होकर खींचा है कि वे हठात् मन में बैठ जाते हैं। दूसरे खण्ड में नगरीय जीवन और संस्कृति की रेखायें बिखरी हुई है। कहानीकार ने हर कहानी में किसी न किसी सामाजिक या पर्यावरण की समस्या को ऐसे पिरोया है जैसे सोने में सुगंध। बहुस्तरीय मंजिलों के निर्माण के कारण पानी के बहाव रोकने की समस्या समाज में बूढे-बूढियों की समस्या, विधवाओं की समस्या, परिवार के विघटन की समस्या आदि इनमें प्रमुख है। भाषा भाव के अनुकूल सर्वथा सरल और सहज है। मैं प्रसन्नकुमारी जी का अनुमोदन करती हूँ कि उन्होंने केरल के ग्रामीण जीवन और संस्कृति का सही चित्र हिन्दी पाठकों के सामने उपस्थित किया है। आशा है कि वे आगे भी ऐसी मार्मिक कहानियाँ लिखकर पाठकों का मनोरंजन करेंगी।

पुस्तक :-'यादों की बारात' लेखकः-डॉ.सी.जे.प्रसन्नकुमारी।
समीक्षकः-डॉ.शान्ता कुमारी, हिन्दी विभागाध्यक्ष, एम.जी.कॉलेज., तिरुवनन्तपुरम।

श्रद्धांजलि

पूर्व राज्यपाल गोवा एवं साहित्यकार श्रीमती मृदुला सिन्हा 18 नवम्बर 2020 को संक्षिप्त अस्वस्थता के पश्चात इहलोक त्याग कर परलोक गमन कर गई वे कादम्बिनी क्लब एवं पुष्पक साहित्यिकी से गहरे जुडी थी। इन्हें मरणोपरान्त पद्मश्री सम्मान से भारत सरकार ने सम्मानित किया हैं।

श्री मंगेश डबराल प्रतिष्ठित आलोचक एवं कवि भी हमसे पिछले माह में बिछड़ गए। वे भी अपना देह त्याग कर परलोक गमन कर गए।

मनोज किंकाण हमारे पुष्पक साहित्यिक के संरक्षण सदस्य को इस महामारी के काल में हमने खो दिया।

श्री हरिश्चन्द्र गुप्ता जी हैदराबाद में हिन्दी भाषा के वाचिक परम्परा में पहली पीढी के कवि एवं साहित्यकार का निधन जनवरी 2021 में हो गया। श्री जगन्नाथ विश्व प्रसिद्ध कवि साहित्यकार भी अपना देह त्यागकर गए।

वास्तव में कोरोनाकाल में हमने भयंकर साहित्यिक क्षति उठाई हैं। इसकी पूर्ति संभव नहीं हो सकती हैं। हमारे संरक्षक एवं सहयोगी भी हमने खोया है। वर्ष 2020 एक त्रासदायक वर्ष ही अधिक सिद्ध हुआ है। पुष्पक साहित्यिकी त्रैमसिक पत्रिका परिवार की ओर से हम अपने सभी साहित्यकारों सकारात्मक सहयोगी एवं सहयात्रियों को अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते है। उनकी आत्मशांति हेतु प्रार्थना करते है।

- सम्पादक पुष्पक साहित्यिकी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसने गाँधी को क्यों मारा

–डॉ.लक्ष्मीनारायण मित्तल

यह कहा जाता है कि बाइबिल के बाद सबसे ज्यादा गाँधी पर लिखा गया है। बहुत से लोग गाँधी को कायर, बेसहारा मान कर कहते हैं कि गाँधी ने कहा था कि कोई तुम्हारे एक गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरा गाल आगे कर देना चाहिये या मजबूरी का नाम महात्मा गाँधी। गाँधी की ताकत को कम लोग ही पहचानते हैं। आज के नये दौर में गाँधी से रू-ब-रू होना जितना जरूरी है। उतना ही यह भी समझना कि गाँधी तो आग का गोला थे।

राजकमल प्रकाशन से सितम्बर 2020 में अशोक कुमार पांडेय की पुस्तक 'उसने गाँधी को क्यों मारा' इसी कड़ी में अगली पेशकश है। पुस्तक में गाँधी हत्या को लेकर हुई साजिश और उसके श्रोतों की विस्तृत चर्चा में की गई है। सरदार पटेल्स कॉरस्पॉडेंट खण्ड 6 पृष्ठ 323 में श्यामा प्रसाद मुखर्जी को सरदार पटेल लिखते हैं कि ''मेरे पास जो रिपोर्ट आयी है वे सिद्ध करती हैं कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और हिन्दू महासभा के कार्य कलापों के कारण देश में जिस वातावरण का निर्माण हुआ उसी के चलते गाँधी की हत्या हुई।''

गाँधी का 'हिन्द स्वराज' आधुनिक विरोध का ऐलान नामा है। गाँधी सम्प्रदाय के आधार पर भेदभाव को अनीति मानते थे। बहुत से लोग गाँधी को मुस्लिम परस्त कहते हैं। गाँधी की हत्या के पीछे यह भी एक कारण था। महाराष्ट्र में तो बहुत से लोग गाँधी हत्या को गाँधी वध कहते हैं। अशोक कुमार पांडेय इतिहास और समकाल के विशेषज्ञ हैं। पुस्तक में विस्तार से गाँधी हत्या पर लाल किले में चले मुकदमें का सिलसिलेवार ब्यौरा है। नाथूराम गोडसे को भारतीय दण्ड विधान की धारा 302 धारा 19 (सी) और धारा 6 की उपधारा (6) के तहत दोषी पाते हुए मौत की सजा सुनायी गई। इसी प्रकार नारायण दत्तात्रेय आप्टे को भी सजा-ए मौत दी गई। जबकि विष्णु आर करकरे को आजीवन कारावास की सजा सुनायी गई। पुस्तक में एक अध्याय में कपूर आयोग की समीक्षा भी विस्तर के साथ की गई है। बहुत से लोग गाँधी को देश के विभाजन के लिए जिम्मेदार मानते हैं जबकि सच्चाई यह है कि गाँधी जी तो विभाजन की बात सुनकर स्वयं दुःखी थे। यह तो ब्रिटिश सरकार की साजिश थी कि नेहरू और अन्य नेता बिना गाँधी की स्वीकृति के विभाजन को तैयार हो गये। पाण्डेय लिखते हैं कि विभाजन के लिए तो असल में वे जिम्मेदार हैं जिन्होंने हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच नफरत के बीज को विषवृक्ष बनाने में अपनी जिन्दगी लगा दी। विभाजन के कारणों के अभी तक अप्रकट तथ्य इस पुस्तक में संजोये गये हैं।

पुस्तक में गाँधी के उपवासों की सूची से पता चलता है कि उनके उद्देश्य मानवता के कल्याण के लिए थे और वे क्षुद्र राजनीति से नितान्त परे थे। इसी से गाँधी को सुभाषचन्द्र बोस ने राष्ट्रपिता और रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने महात्मा कहा था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुस्तक में विस्तार से गाँधी के निर्भय जीवन की गाथा है जो गाँधी पर हुए हमलों के बीच रची बसी है। एक अध्याय में 'कश्मीर राज का झूठ' का भी खुलासा किया गया है। गाँधी के एक अगस्त 1947 को कश्मीर यात्रा का विस्तृत वर्णन है जिससे कश्मीर पर तत्कालीन परिस्थितियों का आकलन किया जा सकता है।

गाँधी पर यह भी आरोप लगाया जाता है कि यदि वे चाहते तो भगत सिंह को फाँसी से बचा सकते थे। असल में लोग सिद्धांतों की मर्यादा को नहीं जानते। पुस्तक में इस विषय पर विस्तृत चर्चा की गई है।

पुस्तक के अन्त में विस्तृत सन्दर्भ सूची से ज्ञात होता है कि लेखक ने इस पुस्तक के तथ्यों की कितनी गहराई से पड़ताल की है। तीस पेज की यह सन्दर्भ सूची प्रत्येक अध्याय में लिखे गये विवरणों की प्राथमिकता का प्रतीक है।

आज देश ने पिछले दिनों गाँधी की 151 वीं जन्म शताब्दी मनायी है। सरकार और अनेक संगठनों ने पिछले वर्ष गाँधी की 150 वीं जन्म शती मनायी थी। पर चाहे दक्षिण पंथी हो या वामपंथी या संघ परिवार यह मात्र गाँधी के प्रति लोक सिम्पैथी ही है। यह किताब आजादी की लडाई में हिंसा और अहिंसा के बीच कशमकश की सामाजिक राजनैतिक वजहों को विस्तार से तलाशती है। लेखक और प्रकाशक को बधाई।

पुस्तकः उसने गांधी को क्यों मारा, प्रकाशकः राजकमल प्रकाशन, लेखकः अशोक कुमार पांडेय,
समीक्षक : सम्पर्क सूत्रः एच/899 ओल्ड हाउसिंग बोर्ड कॉलानी मुरैना-476001

नए संरक्षक सदस्य

नाम :बाबूलाल कांकरिया/
पिता का नामः-केवलचंद कांकरिया
जन्म : 18 अक्तूबर 1954,
शिक्षा : दसवीं कक्षा
व्यवसाय : व्यापार
रुचि :- समाज सेवा,
अध्यक्षः-वर्धमान स्थानकवासी श्रमण श्रावक संघ, रामकोट,
सदस्य,एवं पूर्व अध्यक्ष :- मानव मिलन हैदराबाद,
ट्रस्टीः-गुरू गणेश भवन, रामकोट, काचीगुडा जैन स्थानक हैदराबाद,
पूर्व अध्यक्षः- जैन युवा परिषद्, हैदराबाद,

नामः-जतन बाई कांकरिया,पति बाबूलाल जी कांकरिया
अध्यक्षः- महिला मंडल रामकोट, मानव मिलन महिला शाखा,
उपाध्यक्ष एवं परामर्शदाताः-वरिष्ठ नागरिक संघ हैदराबाद,
सदस्य एवं स्थनीय उपाध्यक्षः-जैन कांन्फ्रेन्स तेलंगाना राज्य,
अखिल भारतीय जैन कांन्फ्रेन्स।
संपर्क सूत्र : 4-3-62/1 एस.डी.हाल के बाजू गली में रामकोट हैदराबाद.
पिन नं.500 095. मोबाइल नम्बरः- 9652522522, 9290119207.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रूपकालंकार

–डॉ.सुशील कुमार पाण्डेय

समीक्ष्य ग्रन्थ चार अध्यायों में विभक्त है। पुनः छः पृष्ठों का उपसंहार तथा चार पृष्ठों में संदर्भ ग्रन्थों की सूची दी गयी है। प्रथम अध्याय का शीर्षक है– 'रूपकालंकार का मूल तत्व–अभेदारोप।' इस प्रकरण में संस्कृत अलंकारशास्त्र मनीषी रुय्यक के अलंकार विभाजन की गम्भीर मीमांसा कर सादृश्य की दार्शनिक एवं आलंकारिक विवेचना चिन्तन के नये क्षितिज की सुप्रकाशिका है। पुनः साधर्म्य और सादृश्य का स्वरूप विवेचन कर तादूप्य मूलक आठ अलंकारों की समीक्षा की गयी है। प्रथम अध्याय से रूपकालंकार के मूल तत्वों को सरलता से समझा जा सकता है। द्वितीय अध्याय–'संस्कृत काव्यशास्त्र में रूपकालंकार' नाम से अभिहित है। भारत की अभय ज्ञान संपदा संस्कृत भाषा एवं साहित्य में सुरक्षित है। यही कारण है कि डॉ.बी.आर.अम्बेडकर ने भारतीय संविधान निर्मात्री परिषद् में 10–09–1949 को सुझाव दिया था कि भारत संघ की राजभाषा संस्कृत को बनाया जाय। सम्प्रत्ति भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351 में व्यवस्था दी गयी है कि हिन्दी भाषा की सम्पदा को प्रमुख रूप से संस्कृत भाषा के शब्दों से समृद्ध किया जाय।

संस्कृत का अलंकारशास्त्र अत्यन्त समृद्ध है। लगभग बीस महापण्डितों की चर्चित पुस्तकों में उल्लेखित रूपक अलंकार प्रकरण की प्रकृत अध्याय में मीमांसा है। आचार्य भरत से लेकर पण्डितराज जगन्नाथ के रूपकालंकार विषयक मान्यताओं की गम्भीर एवं तलस्पर्शी मीमांसा कर यह निष्कर्ष वाक्य लिखा है कि 'सम्पूर्ण भारतीय काव्यशास्त्र में रूपक अलंकार का जो विकास हुआ उसमें मूल धारणा तो वही पायी जाती है कि जो भरत अथवा मम्मट ने प्रस्तुत की है, परन्तु उसके लक्षण की शास्त्रीय शुद्धता के विषय में मतभेद अवश्य रहते आये हैं। एक अन्य बात जो दिखाई पड़ती है, वह यह है कि भारतीय काव्यशास्त्र में कहीं भी रूपक अलंकार के उस विस्तार का विवेचन नहीं किया गया है जिसे अंग्रेजी में ALLEGORY कहते हैं। हिन्दी काव्यशास्त्र में रूपकालंकार नामक तृतीय अध्याय में (जो दो भागों में हैं) प्रथमतः रीतिकालीन आचार्यों के रूपक विवेचन की समीक्षा कर पुनः हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध सत्रह अलंकारशास्त्रियों के अनुसार रूपक अलंकार पर विचार किया गया है। इन मनीषियों में केशव, चिन्तामणि तथा भिखारीदास के नाम विशेष उल्लेखनीय है। तदुपरांत आधुनिक काल शीर्षक के अन्तर्गत दो प्रकार के आचार्यों की रूपक विषयक मान्यताओं की समीक्षा है। अरीतिकालीन शैली के आचार्य जिनकी संख्या पाँच है, पुनः आधुनिक शैली के आचार्य जिनकी संख्या दस है, के मन्तव्यों की मीमांसा की गयी है। आधुनिक काल के रीतिकालीन शैली के आचार्यों में कविराज मुरारीदान तथा लाला भगवानदीन आदि प्रमुख हैं। आधुनिक शैली के आचार्यों में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल से लेकर डॉ.राममूर्ति त्रिपाठी तथा डॉ.पूनम शर्मा आदि का विवेचन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सम्मिलित है। यह अध्याय निश्चित रूप से रूपकालंकार के संबंध में विवेचनाओं और विश्लेषणाओं का नवीन अध्याय रचता है जिसमें ज्ञान की पिपासापरक शोध की समीक्षाग्राहिणी शक्ति का दिग्दर्शन होता है। डॉ.कुलश्रेष्ठ की यह स्थापना उल्लेखनीय है कि हिन्दी के रीतिकालीन आचार्यों के रूपक अलंकार का जो विवेचन किया है उसमें रूपक का लक्षण करने वाले आचार्य बहुत कम हैं। जिन आचार्यों ने रूपक का लक्षण किया है उन्होंने या तो कुवलयानन्द के इस लक्षण का अनुवाद किया है कि ''जहाँ उपमान और उपमेय में अभेद या ताद्रूप्य हो वहाँ रूपक होता हैं।' या फिर यह कहा कि उपमालंकार में से साधारण धर्म और वाचकशब्द निकाल देने से रूपक बन जाता है। इस अभेद और ताद्रूप्य के विषय में किसी भी काव्य शास्त्री ने कोई भी विवेचन प्रस्तुत नहीं किया। आधुनिक काल में जिन शोध प्रबंधों में रूपक के व्यावहारिक प्रयोग पर विचार किया गया है उनमें से कोई भी ऐसा ग्रन्थ नहीं है जिसमें रूपक को ही अपने विवेचन का विषय बनाया है।''

चतुर्थ अध्याय का शीर्षक है- रूपकालंकार-स्वरूप निर्धारण' जो तेरह उपशीर्षकों में विभाजित तथा विवेचित है। विवेच्य ग्रन्थ का मूल अवदान इस अध्याय में स्पष्टतः परिलक्षित होता है जिसमें ग्रन्थकार की महनीय समीक्षात्मक मनीषा का स्पष्टतः परिदर्शन होता है। इस अध्याय में परिलक्षित अनुसंधान की महत्ता गवेषणा की गुरूता तथा शोध की शुद्धता और पारदर्शिता नवीन शोधकार्ताओं हेतु मार्गदर्शिका है तथा विश्वास दिलाती है कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, महावीरप्रसाद द्विवेदी, लाला भगवानदीन तथा विद्यानिवास मिश्र की ज्ञान परम्परा गतिमान है। किसी भी रचना को पूर्ण नहीं कहा जा सकता । श्रेष्ठ से श्रेष्ठ रचना में कुछ घटाने, बढाने तथा संशोधन की संभावना बनी रहती है। फिर भी डॉ.कुलश्रेष्ठ ने 'रूपकालंकार' के माध्यम से अन्वेषण की जो नवीन एवं मौलिक सारस्वत परम्परा प्रारम्भ की है कि वह आने वाले शोधार्थियों के लिए तो मार्गदर्शक है। जो पाठक साहित्य में 'अलंकार' के पक्षधर हैं उन्हें यह कृति सन्तोष प्रदान करेगी।

संपर्क सूत्र : पटेलनगर, मदीपुर, सुलतानपुर-228145 (उत्तर प्रदेश),लेखक- मथुरेशनंदन कुलश्रेष्ठ, मोबाइल. 8764295011. **प्रकाशकः** ब्रजकिशोर कुलश्रेष्ठ प्रकाशन, साहित्येन्दु जयपुर-302020. **समीक्षकः** डॉ.सुशील कुमार पाण्डेय,

पूर्व के आजीवन सदस्यः-

1) रानी सरोज गौरिहार (आगरा), 2) दीपक दीक्षित, 3) डॉ.सलमा जमाल (जबलपुर), 4) डॉ.उषारानी राव (बेंगलूरु), 5) शिल्पी भटनागर, 6) डॉ. संगीता झा, 7) शकुंतला राठी, 8) पी.आकुला लक्ष्मी, 9) डॉ.प्रेमलता श्रीवास्तव। (10) प्रबोध कुमार गोविल, (जयपुर)(11) प्रसन्न कुमारी (केरल) (12) स्मृति शुक्ला (जबलपुर) (13) डॉ.सी.वसन्ता.(14) कोनेरू हेमलता (विजयवाड़ा-आंप्र.)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धुरी–काव्य संग्रह

समीक्षक–डॉ.वासुदेवन 'शेष'

डॉ.मंजु रुस्तगी जी चेन्नई की जानी मानी कवयित्री, महिला साहित्यकारा के नाम से हिंदी साहित्य जगत में लब्ध प्रतिष्ठित स्थान अर्जित कर चुकी हैं। वे चेन्नई के प्रतिष्ठित शिक्षा संस्थान वल्लियाम्माल कॉलेज फॉर वुमेन, अन्ना नगर, में सहायक प्राध्यापक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष के तौर पर कार्यरत हैं।

उन्होंने पी.एच.डी. की डिग्री दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के उच्च शोध संस्थान चेन्नई से प्राप्त की। उन्होंने विगत कई वर्षों से चेन्नई की सुप्रसिद्ध साहित्यकारा, शिक्षाविद डॉ.मधु धवन जी के सान्निध्य में रहकर साहित्य लेखन कर सभी विधाओं पर संपूर्ण ज्ञान अर्जित किया और कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में साहित्यिक विषयागत पेपर प्रस्तुत किये एवं सम्मान प्राप्त किया।

लेखन के साथ वे अच्छी कवयित्री भी हैं और कई प्रतिष्ठित साहित्यिक मंचों पर काव्य पाठ कर श्रोताओं को मंत्र–मुग्ध भी किया। उनके काव्य में भारत की मिट्टी की सुगंध महसूस की जा सकती है। नारी होने के नाते समाज में नारी विमर्श पर आधारित उनकी कई कविताएँ पढी जा सकती हैं। जो कि भारत की संस्कृति से जुड़ी हुई है। कवयित्री के साथ वे एक अच्छी गजलकार भी हैं। गजलें भी बडे चाव से लिखती हैं। उन्होंने तमिलनाडु हिंदी साहित्य अकादमी, अनुभूति महिला काव्य मंच जैसी अनेकों संस्थानों से जुडकर अपने मंच संचालन के कौशल को भी प्रदर्शित किया। वे पूर्व छात्र संघ की महासचिव के पद पर भी हैं और नये शोधार्थियों को प्रेरित और प्रोत्साहित कर रही हैं। कई कार्यालयों और बैंकों में काव्य पाठ एवं हिंदी कार्यशाला में अपना व्याख्यान भी प्रस्तुत किया है। जिसे एक कंठ से सराहा भी गया है।

हाल में उनके द्वारा प्रकाशित और विमोचित 'धुरी' (काव्य संग्रह) मुझे पढने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इस काव्य संग्रह की भूमिका सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ.गंगेश गुंजन, नई दिल्ली ने लिखी है। उन्होंने सटीक कहा है... "डॉ.मंजु रुस्तगी ने काव्य रचना कर न केवल अपने जीवन को सार्थक किया है, अपितु उनकी रचनाओं का पठन मनन करनेवाले साहित्य व कविता प्रेमियों के हृदय को उत्साहित करने का सफल प्रयास किया है। निःसंदेह इस पुस्तक धुरी के प्रकाशन से मंजु जी हिंदी साहित्य की श्री वृद्धि में समर्थ हुई हैं।"

उनके इस काव्य संग्रह धुरी में 75 कविताएँ हैं। हर कविता सुधी पाठकों को एक प्रेरणा, नई ऊर्जा एवं उत्साह प्रदान करती है। जैसा कि धुरी कविता में वह प्रथम पंक्ति में कहती हैं:–

"अब न बनूँ पत्थर की मूरत न ही हलाहल पीऊँगी मैं।
न दूँगी अग्नि परीक्षा हारी जुए में न जाऊँगी मैं।।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

महाभारत में द्रौपदी के साथ घटित इस प्रसंग को जोड़कर उन्होंने स्त्री के साथ जो अन्याय हुआ है उसे बखूबी बयान किया है। अब स्त्री किसी पुरुष की गुलाम नहीं है। वह स्वच्छंद एवं स्वतंत्र है।

उनकी दूसरी कविताः- 'तुम तक पहुँचने के लिए' में कहती हैः-

"क्या लिखूँ, कैसे लिखूँ, कि तुम तक पहुँच पाऊँ मैं
रीत गई हूँ जहाँ जहाँ वहाँ वहाँ फिर से भर जाऊँ मैं।"

इसमें एक प्रेमी के प्रति उनका अपार स्नेह और अनुराग प्रदर्शित करता है।

'कठपुतली' कविता में भी नारी को किस प्रकार कठपुतली की तरह नचाया जाता है। डोरी किसी और हाथ होती है और वे जैसे चाहे नारी को नचाता है। उसकी भावनाओं और आकांक्षाओं को रौंदता है। 'नए युग की नारी' में कहती हैं...

"नई पहचान हूँ, हूँ नई कहानी केवल नहीं हूँ घर की रानी,
हर क्षेत्र में भागीदारी मैं हूँ नए युग की नारी।"

कवयित्री बड़ी सूक्ष्मता से और पैनी दृष्टि से नए युग की नारी का बखान करती हैं। वह अब घर तक सीमित नहीं वरन् ब्रह्मांड में छायी हुयी है। अपने काम से और प्रतिभा से अपनी एक कविता दामिनी की व्यथा में- दामिनी के आखिरी कहे वाक्य- जो सभी के दिलों को मसोज कर रख देती है।

"माँ मुझे बचा लो, मैं जीना चाहती हूं
अपनी लड़ाई खुद ही मैं लड़ना चाहती हूँ।"

दामिनी के साथ जो घटित हुआ उस से पूरा विश्व परिचित है। दरिंदों ने उसकी अस्मत को लूटा और समाज कुछ नहीं कर पाया। दोषियों को सजा भी नहीं मिली। देश की न्याय प्रणाली पर कुठाराघात है। उनकी कविता 'नरप्रसूता' कुछ इसी प्रकार की है.....जिसमें वे लिखती हैः-

"क्यों नहीं कहते कि-बेटी का नहीं कानून का,
बलात्कार हो रहा है और नपुंसक समाज मूक
तमाशाई बन सो रहा।"

'बेटी' कविता में उनका मत है कि...."कहते हैं पराया धन है बेटी
इक दिन चली जाती है, जाती कहाँ है,
वह तो हर जर्रे में सिमट जाती है।"

'बीता वर्ष' कविता कवयित्री अपने बीते पलों को याद करते हुए लिखती हैं।

समय को बाँधकर तारीखों में, मनाते हैं न जाने हम तिथियाँ कई,
कुछ चेहरे बन जाते, यादें केवल, ख्वाब में सज जाते, नए चेहरे कई।"

इष्ट मित्रों के बिछुड़ने पर इनकी स्मृतियाँ रह जाती हैं, जिन्हें कभी भुलाया नहीं जा सकता कवयित्री की उन्हीं को समर्पित यह कविता है। "मंजर'तो अच्छा होता..," 'तन्हाई' और 'प्रतीक्षा' में गजल और शायरी के पुट दिखाई देते हैं। इन सभी में इस्तेमाल किए गए अलफाज दिल को सुकुन पहुँचाते हैं। काव्य संग्रह में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और भी कविताएँ हैं जो पठनीय और संग्रहनीय हैं। कवयित्री ने हर काव्य में मेहनत की है और उनकी यह मेहनत सफल रही। पाठकों तक अपनी भावनाएँ पहुँचायी। काव्य संग्रह मुख्य तौर पर नारी को केन्द्र में रखकर लिखी गयी है।

मैं कवयित्री को इस काव्य संग्रह के प्रकाशन के लिए हृदय से साधुवाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि वे इसी तरह कलम चलाती रहें और भटके हुए समाज का पथ प्रदर्शन करती रहें।

कहना न होगा कि प्रकाशक ने काव्य संग्रह को बहुत बेहतरीन ढंग से मुद्रित किया है। कहीं भी व्याकरणिक त्रुटियाँ नहीं है। प्रकाशक भी बधाई के पात्र हैं। हर काव्य में उस काव्य के प्रसंगों से मिलती जुलती तस्वीर को प्रदर्शित कर काव्य संग्रह को बहुत सुन्दर रूप दिया है। आवरण पृष्ठ भी अति मनमोहक है जो कि नारी की अतुलनीय शोभा को दर्शाता है। मैं इस नवोदित कवयित्री के उज्ज्वल भविष्य के लिए कोटि-कोटि शुभकामनाएँ देता हूँ।

कविता संग्रहः-'धुरी', **लेखकः**-डॉ.मंजु रुस्तगी, **समीक्षकः**डॉ.वासुदेवन'शेष'
प्रकाशकः गायत्री प्रकाशन, चेन्नई 600 072, मूल्य 100/-

रचनाकारों से निवेदन

साफ, स्पष्ट, हस्तलिखित या टाइप की हुई या एक ओर लिखित रचनाएँ प्रेषित करें। रचना के नीचे अपना नाम, पता एवं इमेल अवश्य लिखें । संभव हो तो ई-मेल से रचना भिजवाएँ।

रचना के प्रकाशन का निर्णय संपादक मंडल का होता है। पता लिखा हुआ लिफाफा रहने पर अस्वीकृत रचनाएँ वापस होगी या करने की कोशिश की जाएगी। इसमें काफी समय लग सकता है। अन्यथा रचना नष्ट कर दी जाती है। हमारे पास रचना स्वीकृति-वापसी हेतु अन्य कोई प्रावधान नहीं है। अतः लेखकों से निवेदन है कि रचना की प्रतिलिपि स्वयं सुरक्षित रखें ।

Email : pushpakhyderabad@gmail.com

पुष्पक साहित्यिकी के संरक्षकगण :-

सर्व श्री शान्ति अग्रवाल, सम्पतराज कोठारी, मनोज किंकाण, कविता गोयल (संघी विद्या निकेतन), प्रवीण प्रणव, जयराम प्रसाद सिंह, सुशीला सुतालिया, बाबूलाल जतन बाई कांकरिया।

पुष्पक साहित्यिकी की विशेष संरक्षक सदस्याः-
मोना अरविन्द कुमार, हैदराबाद

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मलेशिया यात्रा में स्वत:स्फूर्त भाव

-डॉ. अहिल्या मिश्र

साहित्य संवर्धन में यात्रा साहित्य एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्वदेश एवं विदेश की यात्रा में दर्शनीय स्थल विशेष क्षण, भौगोलिक ऐतिहासिक परिवेश अद्भुत दृश्यों, पदार्थो, प्रथाओं, जीवन मूल्यों, रीति रिवाजों को देखने- परखने एवं जानने, समझने की इच्छा के साथ विभिन्न भू-भागों में बसने वाले लोगों की वेश-भूषा, रहन-सहन, खान-पान, विश्वास-आस्था, अंधविश्वास, रूढियाँ आदि की समानता, भिन्नता एवं विभिन्न वन्य प्रदेशों, पर्वत मालाओं की चित्ताकर्षक प्राकृतिक सुषमा एवं सीमा के साथ फैले हुए प्राकृतिक सौंदर्य का निरूपण करना यात्रा साहित्य की प्रमुख प्रवृत्ति है जिससे साहित्य की श्रीवृद्धि होती है। प्रकृति एवं मनुष्य का अनादि काल से अटूट संबंध है। हिमाच्छादित श्रृंगों कल-कल निनाद करते झरनों या शंखनाद करते हुए प्रपातों पल-प्रतिपल अपनी छटा बदलने वाले मेघों चित्ताकर्षक रंगों से लदी फुलवारी क्यारियों को हम मनुष्य सदा अतृप्त नयनों से निरखते रहते हैं। यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। साहित्य मानव जीवन की आशा आकांक्षा, रुचि-अरुचि, हर्ष-विषाद आदि को रूपायित करता है अतएव इसमें मनुष्य के प्रकृति प्रेम का मूर्त स्वरूप उभरना अवश्यंभावी होता है। वास्तव में इन्हीं बिन्दुओं के कारण देश-विदेश की यात्रा संबंधी सभी यात्रा वृत्तांतों में प्रकृति के सौन्दर्य का मनोरम चित्र उकेरे गए हैं।

स्वदेश या भारत वर्ष की यात्रा करने वाले यात्रियों ने अपने वृत्तांत में हिमालय की अनुपम छटा काश्मीर, केदारनाथ बद्रीनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्तरी आदि के सौंदर्य मनोहारी निरूपण किया है तो विदेश यात्री ने स्वीटजरलैंड, नायग्रा जल प्रपात आदि को बेबाकी से शब्दांकित किया है।

अपनी मलेशिया यात्रा की बात रखने से पूर्व मैं यात्रा वृत्तांत के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर राहुल सांस्कृत्यायन की बात अवश्य करुँगी। इन्होंने अपनी यात्रा वृत्तांत लेखन के माध्याम से हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इनकी यात्रा विषयक प्रकाशित कृतियाँ है। किन्नर देश में राहुल यात्रा, वाली, दार्जिलिंग परिचय एवं यात्रा के पन्ने आदि प्रमुख है इनकी रचनाओं में यात्रा पथ में भेंटते लोगों का उल्लेख, स्थलों के नाम तथा इतिहास अंचल विशेष के सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन एवं संदर्भो को भी उकेरते रहे हैं। इनके सहज एवं शोधपूर्ण निरूपण इन वृत्तांतों की विशेषता है। अज्ञेय जी की 'अरे यायावर रहेगा याद' भी पढने का सौभाग्य मिला। इसमें अज्ञेय जी ने असम से लेकर पश्चिमी सीमा प्रान्त तक की यात्रा का मात्र बाहरी विवरण न देकर इसे देख मन में उठने वाली प्रतिक्रियाओं का विशद विवरण भी दिया हैं। डॉ.रघुवंश ने 'हरिघाटी' की यात्रा को सपाटता के स्थान पर संवेदना युक्त रूप देकर इसे महत्वपूर्ण सृजन बना दिया है। मोहन राकेश कृत 'आखिरी चट्टान तक' का भी यात्रा वृत्तांत में उल्लेखनीय स्थान है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्रीधर पराड़कर द्वारा सम्पादित एवं संकलित 'अंडमान-हॉफलॉग' यात्रा अनुभव भी चित्ताकर्षक है 'मौन सार एवं झाबुआ' में जीवन प्रथाओं, मान्यताओं की भी अंचल संस्कृति का मनमोहने वाली विवरण उपलब्ध है। रामवृक्ष बेनीपुरी ने 'पैरों में पंख बाँध कर' तथा 'उडते चलों उड़ते चलो' यात्रा वृत्तांत में डायरी शैली के माध्यम से विदेशों का विस्तृत विवरण दिया है। यशपाल ने 'लोहे की दीवार के दोनों ओर' के माध्यम से सूक्ष्म चित्रण प्रस्तुत किया है। निर्मल वर्मा ने 'चीडों पर चाँदनी' में लम्बे यूरोप प्रवास का तथा वहाँ के साहित्यकारों बेख्त, काफ्का सात्रि, लैक्सनेस आदि की विचारधारा भी समाहृत है। श्री विष्णुप्रभाकर की 'हंसते निर्झर' दहकती भट्टी में 21 यात्रा वृत संकलित हैं। इस प्रकार इन सभी साहित्यकारों के यात्रावृत्त से गुजरते हुए इनकी भाषा शैली कलात्मकता आदि के दिग्दर्शन हुए और मुझे स्वयं के लिए एक दिशा मिली।

मेरे अनुसार यात्रा-वत्तांत में किसी स्थान विशेष का इतिवृतात्मक विवरण भर देने के स्थान पर उस स्थान विशेष के संबंध में अपने अन्तर्मन पर पड़े प्रभावों एवं इसके फल स्वरूप होने वाली प्रतिक्रियाओं का प्रत्यांकन होता है। इसी सिद्धांत पर आधृत मलेशिया यात्रा वृतांत लिखने का मन बनाई। 2019 के वर्ष में ग्रीष्मावकाश में हमने विदेश यात्रा स्थगित कर दी थी। कहीं जाने का हमारा मन नहीं बना। इसके पीछे मुख्य दो कारण थे। मधुरा नगर में मानवेन्द्र ने अपना नया आवास गत वर्ष 2017 में बनवाना आरंभ कर दिया था। कुछ कारणों से इस की गति धीमी पड़ गई थी। अतः इस बार गर्मी की छुट्टी में अपना ध्यान इसी पर केन्द्रित करने का मन बना लिया था। जून 2019 में हमारे द्वारा संचालित कादम्बिनी क्लब, हैदराबाद नामक साहित्यिक संस्था का इस वर्ष 2 जून को रजत जयन्ती वर्ष मनाया जाना तय हुआ था। यह कार्यक्रम भी 2 जून 2019 को आयोजित करने का निर्णय लिया गया। मैं इसकी संस्थापक अध्यक्ष एवं संयोजिका हूँ। इस साहित्यिक कुंभ में मेरी उपस्थिति आवश्यक थी। यह कारण भी एक महत्वपूर्ण स्थान रखता था क्योंकि इसमें मेरी एक महती भूमिका बनी रही थी। कादम्बिनी क्लब रजतोत्सव के उद्घाटन हेतु हमने गोवा की गवर्नर श्रीमती मृदुला सिन्हा एवं समारोह की अध्यक्षता हेतु प्रोफेसर राजराम शुक्ल कुलपति सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्व विद्यालय, दोनों को आमंत्रित किया था। विशेष अतिथि के रूप में डॉ.शिवशंकर अवस्थी महासचिव आथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया तथा कादम्बिनी के कापी संपादक संत समीर को भी आमंत्रित किया था। सभी पधारने की स्वीकृति प्रदान किए थे। अतः मेरी व्यस्तता बढ गई थी और इसमें हमारे पूरे परिवार का सदा की भाँति सहयोग तथा संस्था के अन्य सदस्यों का पूर्ण सहयोग तथा साथ बना रहा। तत्पश्चात बच्चों के शिक्षण संस्थान खुल गए। इन्हीं कारणों से हमारा विदेश जाने का कार्यक्रम नहीं बन पाया। मन एवं पल के साथ बहू मुक्ता अपने गाँव जानीपुर एवं मुक्ता के नैहर अमनपुर की अप्रैल में ही यात्रा कर आई थी। अतः वे भी खुश थे। कार्यक्रम के पश्चात हम (माँ-बेटे) अपने सदा की भाँति भविष्य के संबंध में कई बाते करते बैठे हुए थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैंने गुड्डु को याद दिलाया कि इस बार हमारा परिवार सहित विदेश भ्रमण का कार्यक्रम थम गया है। भले हीं कारण तो कई रहे लेकिन जीवन तो रुक कर इन कारणों की गणितीय विभाजन नहीं करेगा। अपने एवं परिवार के लिए यही सम्मिलित क्षण हम जी पाते हैं। इसे जबतक बन पड़े पूरी करते चलना है। जब स्थितियाँ बदलेगी तो हमें भी अपने को परिवर्तित करन ही पड़ेगा। क्या विचार है तुम्हारा? थोड़ी देर चुप रहने के बाद बोला ठीक है आप इतना कुछ सोच रही है तो बच्चों के प्रथम सत्र सितम्बर के अन्तिम सप्ताह में समाप्त होकर अवकाश होने वाला है। अभी सितम्बर आरंभ हुआ है देखते है इन 7 दिनों के लिए कहाँ जाया जा सकता हैं। मैने कहा जो उचित समझो मेरे मन में तो अंडमान निकोबार जाने की उत्सुकता काफी दिनों से बनी हुई हैं।

दूसरे दिन शाम को चाय पीते हुए बोला ''माँ क्यों नही हम इस बार एशिया महाद्वीप के मलेशिया देश की सैर करें। वहाँ के जनजीवन एवं पिछले कुछ दशकों में उनकी अपार उन्नति का लेखा जोखा करें।'' हमने बच्चों को पूछा तो वे लोग खुशी से हामी भर दिए। मुक्ता (आशा) ने भी खुशी से साथ चलने की बात स्वीकार कर ली। फिर हमारा कार्यक्रम बनने लगा। वह मुझे आदतन सताने हेतु हँसते हुए बोला ''अरे माँ को क्या है जहाँ उसके पोता पोती खुश हो जाएँ तो माँ अपने आप खुश हो जाती है। चलो सभी को मलेशिया घुमा लाते है।'' वीजा एवं टिकट से पहले मानवेन्द्र तैयारी के प्रथम चरण में अपनी सदस्यता के आधार पर कन्ट्री क्लब एवं स्टरालिंग रिसोर्ट से पूछा कि इस वर्ष मेरे (मानवेन्द्र) के खाते में कितने दिन और रातें हैं। इसमें उसे मलेशिया में कोई रिसोर्ट मिल पायगा? तत्संबंधी विस्तृत जानकारी प्राप्त की। कंट्री क्लब ने असमर्थता जताई, किन्तु स्टार्लिंग रिसोर्ट ने 29 सितम्बर 2019 से 5 अक्टूबर 2019 तक मलेशिया के हवाना जन्टिंग हिल स्टेशन और एक रिसोर्ट में ठहरने की अग्रिम बुकिंग करने की स्वीकृति दे दी। अब हम जोश-खरोश से अपनी इस यात्रा की तैयारी करने लगे। क्वलालमपुर के एक होटल में मानवेन्द्र ने दो अन्य दिनों की बुकिंग करवा ली तथा एक अन्य शहर में एक रिसोर्ट हेतु दो दिनों की बुकिंग की गई। वीजा ब्रोकर को बुलवा कर छः लोगों का वीजा बनवाया गया। अन्य सभी तैयारियाँ जैसे टिकट लेना एवं सफर संबंधी अन्य जानकारी एकत्र करना मानवेन्द्र ने नेट (अन्तरजाल) पर जा कर स्वयं पूरी की।

इन सभी आवश्यक कार्यो से निबटते हुए हम 29 सितम्बर 2019 के दिन मलेशिया यात्रा पर सपरिवार निकल पड़े। जब निकल पड़े सफर को तो मुड़के देखना क्या? के तर्ज पर हम अपना घर नौकर एवं अपने देवर के पोते मधुकर मिश्र (जो हमारे पास ही रहते आए थे) को दस दिनों हेतु सुपूर्द कर दिए। हमारी यात्रा हैदराबाद के राजीव गाँधी एयरपोर्ट से सीधा मलेशिया के लिए उड़ान भरने वाली एशिया एयर लाइन की फ्लाईट से निश्चित की गई थी। अतः 8.00 बजे एयरपोर्ट पहुँचकर हमने सारी जाँच प्रक्रिया पूरी की। तत् फश्चात रात्रि 12.50 बजे पर हम मलेशिया जाने वाली हवाई जहाज में बैठ गए। वह हमें लेकर मलेशिया की ओर उड़ चली। वैसे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अन्य विदेश जानेवाली एयरक्राफ्ट से यह आकार में काफी छोटी थी। अन्य सुविधाओं में भी कई कमियाँ थी। जहाज का निरीक्षण करने पर मैने पाया कि इस उड़ान में सीटें कुछ अधिक ही खाली पड़ी थी। मेरे लिए यह लाभदायक सिद्ध हुआ। मैंने तीन सीट वाली एक सीट पर जाकर बीच के हाथों को उपर साइड की ओर की ओर उठा दिया और एयर हास्टेज से कम्बल प्राप्त कर आराम से सो गई। सुबह 5.20 मलेशियन समयानुसार वहाँ जहाज उतरी।

अन्य विदेशी शहरों के समान ही मलेशिया में भी एयर पोर्ट का फैलाव अति विस्तारित है। माइग्रेशन एवं पासपोर्ट के लिए संबद्ध विभाग तक पहुँचने के लिए हमें लगभग दो किलो मीटर की यात्रा करनी पड़ी। एयरपोर्ट के अन्दर आने हेतु कारवास मिल जाने से लगभग एक किलो मीटर तक का रास्ता आसानी से तय किया गया। इस एयरपोर्ट में चलने वाली इस आधुनिक गाड़ी का नाम लघु आडनकार है। इसका दूसरा नाम टुन-टुनायन कार भी है। इसके बाद भी सामान प्राप्त करने एवं माइग्रेशन कार्यालय तक लगभग दो किलोमीटर तक का हमें पैदल चक्कर लगाने पड़े। हमारे समय के आस-पास ही भारत के अन्य शहरों से कई एयर क्राफ्ट मलेशिया में उतरे हुए थे। अतः वहाँ के कार्यालय में कई काउन्टर होते हुए भी लम्बी दूरी तक पंक्ति बद्ध लोगों की भीड़ लगी थी। हमें भी सारे क्लीयरेंस हेतु पंक्तियों में खड़ा होना पड़ा। इन कार्यो से निबटने में सुबह के आठ बजे गए। तब कहीं जाकर हम इससे निवृत्त हो पाएँ। मन बेचैन हो उठा, सोचने लगे कि चलो पहले कहीं बैठ कर चाय पानी पीएँ इसके बाद ही आगे की सोची जाए।

मानवेन्द्र को पूर्व में ही किसी ने बता दिया था कि आप को अगर एयरपोर्ट से जेन्टिंग जानी हो तो आप टैक्सी के बदले वहाँ से चलने वाली लक्जरी बस से यात्रा करें। यह ज्यादा आरामदेह साबित होगी। अतः टैक्सी से जेन्टिंग जाने का हमने इरादा बदल दिया। पूर्व सूचना के अनुसार बस से जाने पर रास्ते के प्राकृतिक सौंदर्य का भरपूर आनन्द उठाना मुझे प्रिय था। पूरे दो घंटे की बस यात्रा में प्रकृति के विविध वैचित्र्य एवं विलक्षणता से भरे सौंदर्य का रसास्वादन करते एवं बीच-बीच में हल्की सी झपकी लेते हुए जाने का सुखद क्षण मेरे लिए अमूल्य था। वैसे हमारा परिवार भी नए-नए प्रयोगो के माध्यम से नई जानकारी प्राप्त करने में या नए अनुभव के माध्यम से चीजों को जानने समझने की चेष्टा करने में पूरी आस्था के साथ उत्सुक एवं जुटा रहने वाली प्रवृत्ति का पोषक है। स्वाभाविक है हवाई जहाज में उस व्यक्ति द्वारा प्रेषित पूर्व जानकारी हमारी उत्सुकता बढा गई और हमने टैक्सी से जाने का इरादा बदलकर लग्जरी बस से जाना तय किया था। बस टिकट लेकर एयरपोर्ट के नीचे तल पर बने बस स्टाप पर जा पहुँचे। इस रास्ते में बच्चों के साथ बहू मुक्ता ने कुछ शापिंग भी की। बस स्टाप जाने से पूर्व हम वहाँ बने सार्वजनिक शौचालय जो अत्यन्त साफ-सुथरा और सुविधा युक्त था में जाकर फ्रेश भी हो लिए आगे हमें पूरे दो घंटे बस की यात्रा जो करनी थी।

-क्रमशः

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

–समाचार दर्शन–

कादम्बिनी क्लब हैदराबाद की दिसंबर 2020 की 341वीं मासिक गोष्ठी 20 दिसंबर को डॉक्टर ऋषभदेव शर्मा की अध्यक्षता में ऑनलाइन संपन्न हुआ । प्रथम सत्र में अवधेश कुमार सिन्हा ने भोजपुरी साहित्य के जाने माने हस्ताक्षर , लेखक एवं नाटककार भिखारी ठाकुर के रचना संसार पर अपने विचार रखे। क्लब संयोजिका डॉ.अहिल्या मिश्र ने स्वागत भाषण दिया। शुभ्रा महंतों ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। द्वितीय सत्र में काव्य गोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें देश के विभिन्न शहरों से कवि एवं कवयित्रियों ने भाग लिया। प्रवीण प्रणव का विधिवत एवं सुंदर संचालन गोष्ठी की सफलता में सहयोगी रहा। क्लब की कार्यकारी संयोजिका श्रीमती मीना मुथा ने आभार व्यक्त किया।

क्लब की 342वीं गोष्ठी 17 जनवरी को मध्यान्ह 12:30 बजे से डॉ रमा द्विवेदी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। प्रथम सत्र में मुख्य अतिथि एवं प्रमुख वक्ता के रूप में बंगलोर से डॉ उषा रानी राव ने विश्व हिन्दी दिवस एवं अभिनव इमरोज पत्रिका के डॉ अहिल्या मिश्र विशेषांक पर अतिथि संपादक के रूप में समीक्षात्मक टिप्पणी दी। प्रो ऋषभदेव शर्मा एवं प्रवीण प्रणव ने भी पत्रिका के सुंदर सम्पादन हेतु अतिथि संपादक एवं विशेषांक के लेखक डॉ अहिल्या मिश्र को बधाई दिया। द्वितीय सत्र में काव्य गोष्ठी का आयोजन हुआ।

क्लब की फरवरी माह की गोष्ठी डॉ. मदनदेवी पोकरना की अध्यक्षता में ऑनलाइन सम्पन्न हुई जिसमें विशेष अतिथि डॉ अनीता गांगुली ने निराला एवं रविंद्र नाथ टैगोर की संक्षिप्त तुलनात्मक व्याख्या की। प्रवीण प्रणव एवं डॉ आशा मिश्रा मुक्ता ने उनसे जुड़े संस्मरण साँझा किए। द्वितीय सत्र में काव्य पाठ हुआ। ज्योति नारायण ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की एवं देवाप्रसाद मायला ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

ऑथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया ने 'अभिनव इमरोज़' के डॉ. अहिल्या मिश्र–विशेषांक' का लोकार्पण समारोह का आयोजन किया। इस अवसर पर प्रो. राजाराम शुक्ल (कुलपति संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी) मुख्य अतिथि, प्रो.दिलीप सिंह (भाषा–निदेशक, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजाति विश्वविद्यालय, अमरकंटक, मध्यप्रदेश) विशिष्ट अतिथि , डॉ. सरोजिनी प्रीतम अध्यक्ष AG। और विशेष सान्निध्य के रूप में वरिष्ठ साहित्यकार पद्मश्री डॉ.श्याम सिंह शशि मंचासीन हुए। ऑथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया के महासचिव डॉ. शिवशंकर अवस्थी ने कार्यक्रम का औदार्यपूर्ण संचालन किया। इस अवसर पर डॉ अहिल्या मिश्र के साहित्यिक, सामाजिक एवं रचनात्मक और संगठनात्मक व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया। ए जी आई के विभिन्न चैप्टरों के संयोजकों एवं स्क्रीन पर पधारे अतिथियों ने अपने अनुभव सांझा किये। डॉ आशा मिश्रा 'मुक्ता' ने धन्यवाद दिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऑथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया ने 2 दिसंबर 2020 को गोवा की पूर्व राज्यपाल, प्रसिद्ध लेखिका मृदुला सिन्हा का दिल्ली में 18 नवंबर, 2020 को हृदयाघात से आकस्मिक निधन पर एक वर्चुअल श्रद्धांजलि-समारोह' आयोजित की। इस अवसर पर विशिष्ट वक्ता के रूप में डॉ अहिल्या मिश्र, कार्यक्रम अध्यक्ष के रूप में पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि, AG। संस्था की उपाध्यक्ष डॉ.सरोजनी प्रीतम, लब्धप्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ. विद्याबिंदु सिंह, ऑथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया के महासचिव डॉ. शिवशंकर अवस्थी और देश भर के कई साहित्यकारों ने उन्हें याद किया एवं उनके सरल एवं सहज व्यक्तित्व की चर्चा करते हुए भावभीनी श्रद्धांजलि दी।

ऑथर्स गिल्ड ऑफ़ इंडिया ने वसंतोत्सव के उपलक्ष्य में 26 फ़रवरी 2021 को अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया जिसमें 50 से अधिक कवि एवं कवयित्रियों ने काव्य पाठ किया। कार्यक्रम में अध्यक्ष के रूप में पद्मश्री श्यामसिंह शशि, मुख्य अतिथि के रूप में डॉ अहिल्या मिश्र व डॉ एजी आई के उपाध्यक्ष सरोजिनी प्रीतम मंचासीन हुए। श्री शिवशंकर अवस्थी ने संचालन और अशोक कुमार ज्योति ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

साहित्य सेवा समिति हैदराबाद की दिसम्बर 2020 से फ़रवरी 2021 तक की नियमित गोष्ठी में विभिन्न विषयों पर विचार गोष्ठी सम्पन्न हुआ और उपस्थित सदस्यों ने काव्य पाठ किया।

साहित्य गरिमा पुरस्कार 2019 हेतु प्रविष्ठियाँ

साहित्य गरिमा पुरस्कार दक्षिण एवं हिन्दीतर प्रांतों की महिला हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रतिष्ठित करने का व्यापक चिंतन है। साहित्य की विविध विधाओं पर हिन्दी महिला लेखन हेतु यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है। इस पुरस्कार के लिए इक्कीस हजार रुपये की धनराशि, प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह एक भव्य समारोह के आयोजन के साथ प्रदान किया जाता हैं। डॉ.अहिल्या मिश्र एवं डॉ.रमा द्विवेदी ने संयुक्त प्रेस विज्ञप्ति में कहा है कि ग्यारहवीं साहित्य गरिमा पुरस्कार-2019 हिन्दी में प्रकाशित काव्य विधा के लिए दिया जाएगा। इस में आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल, महाराष्ट्र, गोवा, पुंडुचेरी, लक्ष्यद्वीप आदि अहिन्दी भाषी प्रांतो के हिन्दी में लिखनेवाली महिला रचनाकार को दिया जाएगा। जिनकी पुस्तक काव्य विधा पर हिन्दी में वर्ष 2015-2020 के बीच प्रकाशित हुई हो इस पुरस्कार हेतु वे अपनी प्रविष्टियाँ भेज सकती हैं। प्रविष्टि के रूप में पुस्तक की चार प्रतियाँ, जीवन परिचय, दो छाया चित्र, और निजी पता लिखा व टिकट लगा लिफाफा सामग्री के साथ भिजवाएँ। पुस्तक कम से कम सौ पृष्ठ की होना अनिवार्य है। प्रविष्टियाँ भेजने की अंतिम तिथि 30 जून 2021 होगी। सामग्री के लिफाफे पर प्रविष्टियाँ साहित्य गरिमा पुरस्कार 2019. बडे अक्षरों में साफ-साफ लिखें। अधिक जानकारी के लिए डॉ. अहिल्या मिश्र-9849742803, या डॉ.रमा द्विवेदी से 9849021742 पर संपर्क करें। **प्रविष्टियाँ भेजने का पता:- डॉ. अहिल्या मिश्र-** संस्थापक अध्यक्ष साहित्य गरिमा पुरस्कार समिति, 93/सी, राजसदन, वेंगलराव नगर, हैदराबाद-500 0038 (तेलंगाना)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मत-अभिमत

❑ **बी.एस शांताबाई (कर्नाटक)** आपकी छत्रछाया में पुष्पक साहित्यिकी वर्ष 3. संयुक्तांक 10-11, अप्रैल-सितम्बर 2020 की प्रति मिली। मैंने पूरी पुस्तक का अवलोकन किया है सभी तरह की सामग्री पठनीय, प्रशंसनीय छात्रोपयोगी है। सम्पादकीय आज की परिस्थिति के लिए सटीक बैठती है। 'क्या गुल खिला रहे हैं ये कांटे बबूल के,' कहानी 'पिता का दिल,' 'सबके अपने अपने गम' लेख इत्यादि उत्तम प्रशंसनीय है। दीपावली की हार्दिक शुभ कामनाएँ।

❑ **भगवानदास जैन** (अहमदाबाद) अत्र कुशलम तत्रास्तु। आपके द्वारा सुसंपादित त्रैमासिकी पुष्पक साहित्यिकी का संयुक्तांक (10-11) 2020 यथा समय संप्राप्त। एतदर्थ अनुगृहित हूँ। अंक बहुविध विपुल सामग्री से समृद्ध है। सकारात्मक विचारों से समन्वित डॉ.आशा मिश्र का संपादकीय महामारी कोविड-19, के इस भयावह दौर में मनुष्य के भीतर एक नई ऊर्जा/चेतना और आशीर्वाद जगाता है। चिंतन के क्षण स्थायी स्तंभ (डॉ.अहिल्या मिश्र) निस्संदेह पाठक को जगज्जीवन के सम्बन्ध में सोचने के लिए बाध्य करता है। लघु-कथाएँ सांकेतिक व प्रेरक हैं। कहानियाँ भी सार्थक व प्रासंगिक हैं। आंचलिक प्रगतिशील कथाकार रेणुजी की कहानी 'पहलवान की ढोलक', में आंचलिकता का संस्पर्श है, कहानी हरकोण से कालातीत है। 'पितृऋण' कहानी अच्छी है, फिल्मी गीत के रचयिता फिल्म का टाइटल देना लाजिमी था। श्री अशोक अंजुम का गीत देश की वर्तमान अवदशा का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है। 'द्रौपदी' को कटघरे में खड़ा कर कवयित्री डॉ.आशा मिश्र ने उसके चरित्र का पुनर्मूल्यांकन किया है, श्री राज्यवर्धन का आलेख 'रवीन्द्रनाथ टैगोर की चित्रकला' का बडा ही रोचक व ज्ञानवर्धक है। धरोहर के रूप में श्री प्रवीण प्रणव द्वारा प्रस्तुत सफदर हाशमी, नागार्जुन, कन्हैय्यालाल नंदन, शकील बदायूनी, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की संक्षिप्त परिचय के साथ प्रस्तुत कृतियाँ पठनीय/मननीय है।

❑ **रमेश मनोहरा** (जावरा मध्य प्रदेश) पुष्पक साहित्यिकी का अप्रैल-सितम्बर 2020 का अंक मिला कहानी 'तुम झूठी पत्तल हो' प्रकाशित की आभारी हूँ।

❑ **मुकेश कुमार** (फतेहाबाद, आगरा) पुष्पक साहित्यिकी अंक-9 मार्च 2020. तथा अंक सितम्बर पुस्तकालय के पते पर प्राप्त हुआ। यह अंक पहले की तरह ही बहुत सुंदर है। सम्पूर्ण सामग्री पठनीय है। सभी रचनाएँ हृदय में रसघोल देती है। देशभर के रचनाकारों की लेखनी का रस हमें व हमारे सैकड़ों पाठकों को चखने के लिए मिला। इस हेतु आपका कोटिशः आभार। तेलंगाना से हिंदी की ज्योति आप जगमगा रहे हैं। हृदय प्रफुल्लित हो गया। सुंदर आवरण श्रेष्ठ श्रेणी का कागज उत्तम छपाई और सबसे बेहतरीन लेखन सामग्री। सबके लिए कोटि-कोटि साधुवाद। श्रेष्ठ सम्पादन के लिये पूरे पत्रिका परिवार को हमारी तरफ से कोटिशः बधाईयाँ आप इसी तरह माँ भारती की सेवा करते रहें। ईश्वर कृपा से हमेशा स्वस्थ रहें, प्रसन्न चित्त रहें और यों ही अनवरत साहित्य साधना में रत रहें।

❑ **भानुदत्त त्रिपाठी** 'मधुरेश'(उत्तर प्रदेश)आपके यशस्वी संपादन में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रकाश्यमाण, प्रतिष्ठित-पुष्पक साहित्यिकी का अधिक समय से दर्शन नहीं मिला। पत्रिका तो निकल ही रही होगी। वस्तुतः पुष्पक साहित्यिकी आपके पुण्यसंकल्प, महत् सदुदेश्य, सतत सघनश्रम साधना व्यापक सोच-समझ, पूर्ण समर्पण एवं संपादन कौशल का स्वतः प्रमाण है। इसके माध्यम से आप हिन्दी भाषा साहित्य एवं साहित्यकारों की अविश्वसनीय एवं उल्लेखनीय उपकार कर रही हैं। इस अभिनन्दनीय सेवानुष्ठान हेतु शतशः साधुवाद, बधाई।

❑ **सनातन कुमार वाजपेयी** (जबलपुर) आपका पुष्पक साहित्यिकी का अंक मार्च 2020 में मेरी एक कहानी 'नया नीड' को स्थान दिया। इसके लिये कोटिशः धन्यवाद। यद्यपि यह अंक मुझे नहीं प्राप्त हुआ। इस समय यहाँ के दो अंक के सिवाय मुझे कोई भी अंक प्राप्त नहीं हो रही है। पोस्ट मैन एवं पोस्ट मास्टर दोनों अत्यन्त लापरवाह हैं। अनेक बार शिकायत की। किन्तु सब निरर्थक है पत्रिका की उत्तमता के विषय में लोगों से सुनकर खुशी हुई।

❑ **राधाकान्त भारती** (नई दिल्ली) युग बीत गया किन्तु अहिल्या जी की स्नेह भावना की याद बरकरार है और यह याद 'पुष्पक साहित्यिकी' प्राप्त होने से ताजा हो उठती है। कहता है अपना और अपनों का समाचार भी दें। कोरोना के इस विकट काल में प्रकाशन कर पत्रिका पहुँचाने का कार्य करती हैं। एवमस्तु।

❑ **मांगना मिश्र मार्तंड** (अररिया, बिहार) आपके द्वारा भेजी गयी 'पुष्पक साहित्यिकी' पत्रिका मिली आभारी हूँ। आपका आभार कि मुझे इस लायक समझा। यह एक स्तरीय पत्रिका है, पढकर प्रसन्नता हुई। पत्रिका में प्रकाशनार्थ अपनी दो गजलें भेज रहा हूँ, आशा है स्थान मिल सकेगा। दक्षिण भारत में आपके द्वारा किये जा रहे कार्य अति प्रशंसनीय हैं। अशेष शुभकामनाएँ।

❑ **सूर्यबाला लाल** (मुम्बई) पुष्पक साहित्यिकी का अप्रैल-सितम्बर अंक बहुत समृद्ध कर गया। धरोहर से लेकर सभी स्तंभ, कहानियाँ और कविताएँ आपके चयन के प्रति हमेशा की तरह आश्वस्त कर गई। रेणु की पहलवान की ढोलक, जितनी समय संगत, उतनी ही मार्मिक। आपके घर बैठे यूरोप की सैर का अपना ही थ्रील है। बधाई एवं दीपावली की शुभेच्छाओं के साथ।

❑ **डॉ.अनंत श्रीमाली** (मुम्बई)'पुष्पक साहित्यिकी' का वर्ष 3 संयुक्तांक 10 और 11 अप्रैल-सितम्बर, 20 साभार प्राप्त हुआ। बहुत-बहुत धन्यवाद। आपने अपना समझकर भेजा बहुत अच्छा लगा। इस अंक की लगभग सभी सामग्री बहुत अच्छी लगी। विशेषकर गोपाल सिंह नेपाली पर लिखा लेख (प्रवीण प्रणव) बहुत ही शानदार है। आपने जिन लेखकों, कलाकारों, साहित्यकारों के जन्मतिथि पर जो सामग्री प्रस्तुत करने का प्रयास किया है वह तो वाकई में 'धरोहर' है। कई चीजे हमें भी मालूम नहीं होती, वह स्तंभ से पता चली। मैं इस स्तंभ का हृदय से स्वागत करता हूँ और इसे आप विस्तारित कर जारी रखें। हैदराबाद तेलंगाना जैसे राज्य से इतनी साफ-सुथरी पत्रिका का प्रकाशन बहुत ही अद्भूत काम है। संपादक मंडल को खूब सारी बधाई और शुभकामनाएँ। नए साल में नया अंक, नई जानकारी और सामग्रियों के साथ मिलेगा, ऐसी उम्मीद है।

❑ **गौरी शंकर वैश्य विनम्र** (लखनऊ) 'पुष्पक साहित्यिकी' अप्रैल-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सितम्बर संयुक्तांक साभार प्राप्त हुआ। सदकृपा हेतु साभार धन्यवाद। संपादकीय में कोविद-19 के बहाने श्रेष्ठ मानव की निकृष्टता की अच्छी खबर ली गई है। यहाँ यह विचार मन को उद्वेलित करता है कि क्या मनुष्य यांत्रिक विकास के कारण ही 'श्रेष्ठ-फल' है जबकि विश्व के विनाश का कारण सदैव मनुष्य ही रहा है। चिंतन के क्षण में दार्शनिकता पूर्ण आध्यात्मिक कालचिंतन प्रभावपूर्ण है तथा वचनामृत हृदय को सिंचित करता है। चार कहानियों के साथ पाँच लघु कथाएँ भी हैं। जो लघुकथा न होकर लघुकहानी ही हैं। कतिपय कहानीकार लघुकथा और लघुकहानी में कोई अंतर नहीं समझते जबकि दोनों के अपने मानक हैं। गीत-गजल पृष्ठों में संतुलित रचनाएँ है जिसमें भगवानदास जैन की गीतिका और अशोक अंजुम का गीत विशेष रुचिकर लगा। आलेख, निबंध, व्यंग्य, साक्षात्कार आदि के माध्यम से सारस्वत अनुचिंतन प्रदान किया गया है। शख्सियत के अंतर्गत गोपाल सिंह नेपाली पर अच्छी सामग्री जुटाई गई है, एतदर्थ लेखक को साधुवाद। धोरहर में निश्चित कालावधि में स्मरणीय साहित्यकारों का पुण्य नमन विशेष रूप से उल्लेखनीय है। पुस्तक समीक्षा को पर्याप्त स्थान दिया गया है जो साहित्यकारों के लिए सुखद विषय है आपकी सदाशयता नमनीय है। पत्रिका अपने पूर्व गरिमापूर्ण अंकों की भांति संयुक्तांक रूप में भी उत्कृष्ट है। आपकी साहित्यिक श्रम साधना स्तुत्य है। शुभ वाचन।

❑ **श्रीराम मीना** (होशांगाबाद)आपका कुशल सम्पादन पत्रिका को अनूठी बनाता है। सम्पादक की कलम से, चिंतन के क्षण, शख्सियत, धरोहर, विश्व साहित्य, समीक्षा सारी विधाओं की रचना इसे विशिष्ठ पत्रिका बना देती है। हर अंक पठनीय रोचक एवं संग्रहनीय होती है। मुख्य रूप से पृष्ठ केदारनाथ जी की रचना पढकर मन गद्गद् हो गया। मुक्ता जी प्रवीण जी को बधाई।

❑ **पवन तिवारी** (मुम्बई) अहिल्या मिश्र जी के माध्यम से नयी साहित्यिक पत्रिका पुष्पक साहित्यिकी से भेंट अच्छी लगी। नयी इसलिये कि इससे पहले मेरा इस पत्रिका से परिचय नहीं था। पत्रिका को देखकर थोडी-थोडी ''वागर्थ'' की याद आयी। वैसा ही बाह्य कलेवर, किन्तु सामग्री देखकर अलग लगी। अनुक्रमणिका देखकर थोड़ा आश्चर्य हुआ। संपादकीय के बाद पत्रिका का आरम्भ लघुकाथाओं से यह एक नई सोच है अबतक लघुकथाओं की भूमिका साहित्यिक पत्रिकाओं में रिक्त स्थान की पूर्ति तक ही समझी जाती थी। किन्तु पुष्पक साहित्यिकी ने लघुकथाओं को प्रमुखता से आरम्भ में स्थान देकर वास्तव में लघुकाथाओं को न केवल महत्त्व दिया बल्कि, लघुकथा आन्दोलन को एक गति भी दी। इसके लिए प्रधान संपादक अहिल्या मिश्र जी सहित पूरी सम्पादकीय समिति बधाई के पात्र हैं। माहमारी विशेष के अन्तर्गत रेणु की कहानी 'पहलवान की ढोलक' को इस अंक में स्थान देना, सम्पादकीय दूरदृष्टि को परिलक्षित करता है। पत्रिका में संस्मरण और यात्रा वृत्तांत को प्रमुखता से स्थान दिया गया है। यह देखकर सुखद लगा। पत्रिका ने समीक्षा के लिए भरपूर स्थान दिया जो युवा पाठकों के लिए काम की चीज है। नाटक और रंगमंच पर भी अच्छी सामग्री है। शेष कविता, गीत, कहानी आदि स्तम्भ भी अच्छे हैं। इस पत्रिका का पाठक होकर सुखद लगा। अनेक शुभकामनाएँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुस्तक लेखक प्रकाशक व मूल्य

1. **अभिशप्त आंगन,** सनातन कुमार वाजपेयी, प्रकाशन जबलपुर, मूल्यः 150/
2. **माटी की गंध,** (लघु कथा)सनातन कुमार वाजपेयी, आम व्यक्ति प्रकाशन, मूल्यः 100/
3. **गुरू दक्षिणा,** सनातन कुमार वाजपेयी, पांथेर प्रकाशन जबलपुर, मूल्यः 150/
4. **यादों की बारात,** डॉ.सी.जे.प्रसन्न कुमारी, जबलपुर पुस्तकालय मथुरा, मूल्यः 450/
5. **डॉ विश्वनाथ प्रसाद अभिनन्दन ग्रंथ,** देवेन्द्र कुमार बहल, दिल्ली,
6. **डॉ.रमेश सोबती अभिनन्दन ग्रंथ,** देवेन्द्र कुमार बहल दिल्ली,
7. **भारतीय निबंधों कोरोना टाइम्स,** डॉ राम गोपाल,पंख प्रकाशन मेरठ,मूल्यः 80/
8. **भारतीय सम्पादन दुष्यन्त कुमार,** डॉ.राम गोपाल, पंख प्रकाशन मेरठ,मूल्यः 50/
9. **वयं राष्ट्र जागत्याम पुरोहित,** आचार्य श्री अवस्थी, अम्बिका प्रिंटर्स, मूल्यः50/
10. **त्याग मूर्ति हिडिम्बा,** (उपन्यास) पवन तिवारी, नमन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (दिल्ली) मूल्यः 200/
11. **राय साहब की चौथी बेटी,** प्रबोध कुमार गोविल, आयुष बुक्स प्रकाशन मूल्यः 150/
12. **धुस-कुटुस,**(कहानी संग्रह) प्रबोध कुमार गोविल, आयुष बुक्स, मूल्य 300/
13. **साहित्यांजलि,** नीरज कुमार सिन्हा, दक्षिण समाचार प्रतीक्षा साहित्य परिषद, मूल्य. 300/
14. **साहित्य सम्पादन,** नीरज कुमार सिन्हा, दक्षिण समाचार प्रतीक्षा साहित्य परिषद, मूल्य. 300/
15. **चमगादड,** श्रीमती के हेमलता, श्री.श्री.प्रिंटर्स विजयवाडा, मूल्यः 100/
16. **नई दुनिया,** श्रीमती के हेमलता, जाषुआ फॉउन्डेशन लावनया आफिस, मूल्यः 130/
17. **फिरदौसी,** श्रीमती के हेमलता, लावनया आफिस, मूल्यः 150/
18. **आदमी और आदमी,** रमेश मनोहरा, निखिल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, आगरा, मूल्यः 150/
19. **मां ब्राह्मण मैं शूद्र,** बजरंग सिंह पांथी, बजरंग सिंह पांथी श्रीराज स्मृति प्रकाशन, मूल्यः 300/
20. **व्यस्त युग की आत्मजाएँ,** श्रीराम मीना, प्रकाशक नर्मदांचल साहित्य अकादमी , मूल्यः 50/
21. **नदी नारी और कविता,** श्रीराम मीना, प्रकाशक नर्मदांचल साहित्य अकादमी, मूल्यः 100/
22. **निवेदन है,** डॉ. अंजना संधीर, स्वराज प्रकाशन नई दिल्ली, मूल्यः 450/
23. **मेरी सर्वश्रेष्ठ लघुकथाएँ,** सेवा-सदन प्रसाद मुम्बई हिन्दी अकादमी मुम्बई, मूल्यः250/

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CFC EXCELLENCE
Cricket Academy

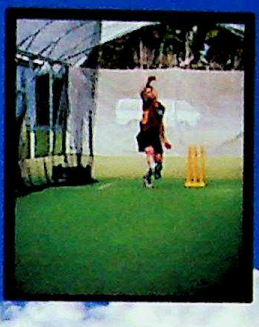

CFC excellence provides high class training facilities,with the blend of modern techniques of coaching and admirable quality of equipments.

- World class infrastructure, Bowling machines, training gear
- Opportunity to attend camps with the legends of the game
- Psychology training and councelling to help players
- Coaching for aspiring boys and girls
- Opportunity to play H.C.A leagues

CFC Excellence Cricket Academy
Ramkote Cross Road Contact No :- +91 7095737007 +91 9030507073

Cell : 93933 99880
96767 25370

Factory outlet sale

JK Trading Corporation
Home & Kitchen Applainces

Discount 20%-50%

Authorized distributors for:

Prestige Bajaj Pigeon morphy richards ULTRA Preethi Crompton

A2, Central Warehousing Corporation,Gandhi Bhavan,
Nampally Hyderabad - 01, E-mail : jktradinggifts@gmail.com

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
RNI No. TELHIN/2017/74301 Tittel Code TELHIN 26202 ISSN2582-0044

अनेकानेक
शुभकामनाओं सहित

श्री सुरेश कुमार कीमती
ताराबाई कीमती
सुपुत्र : यशराज कीमती
द्वारा
पुष्पक साहित्यिकी के
निरंतर प्रकाशन पर
बधाई।

फर्म : श्री संपत ज्वेलर्स (अमीरपेट)
सुरेश फायनान्स, तारा फायनान्स

8-2-686, कीमती मैंशन, रोड नं. 12, बंजारा हिल्स, हैदराबाद-500034
फोन:9949161509, 040-23390659, 23319594

SOHANLAL KADEL, B.Com., LLB
Chairman & Managing Director

With best compliments from :

KEDEL INSURANCE BROKERS PVT. LTD.

KADEL

Regd. Office: 402, 4th Floor, Mogul Apartments,
Deccan Towers Basheerbhag, Hyderabad-500 001.
Tel: 2323 7563, 66627751,Tel: (D): 23230664
Cell: 98490 33200, 93922 33200
Email : kadelinsurance@gmail.com
sohankadel51@gmail.com
Website: www.kadelinsrance.com

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant